चन्द्रग्रहण आ किरण

ग्रहण प्रति वर्ष लगैत अछि— ओ सूर्यग्रहण हो वा चन्द्रग्रहण । एहि ग्रहणक दूटा पक्ष अछि– प्रथम भौगोलिक, जे सूर्य आ पृथ्वीक दैनिक–वार्षिक गतिक कारणेँ होइछ आ द्वितीय– आध्यात्मिक, जाहिमे मान्यता अछि जे दानवराज राहु द्वारा सूर्य तथा चन्द्रमाकेँ ग्रास कएल जाइत अछि तथा किछु कालक उपरान्त उग्रास ।

भारत धर्मप्रधान देश थिक आ ताहिमे मिथिला शीर्षपर । एतए लोक धर्ममे अपार आस्था रखैत अछि आ तेँ नाना प्रकारक देवी–देवताक संगहि सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, तुलसी, पीपर, बड़ इत्यादिक पूजा करैत अछि । एहि पूजनक क्रममे ग्रहणक एक विशिष्ट महत्त्व अछि । आइ–काल्हि तऽ ग्रहणक गणना सामान्यो वैज्ञानिक कए लेताह किन्तु पूर्वमे एहन विद्या पंडितेकेँ हाथ लगलन्हि जे ओ सामान्य लोकपर अपन शिकंजा मजबूत बनओलनि । के ग्रहण देखताह, के नहि ? देखलासँ की होएतन्हि ? घातः क्षतिः श्री व्यथा .... पढ़ि फलादेश, आ तेँ ओ सर्वज्ञ, दैवज्ञ सभ भए गेलाह । जे जतेक क्रूर ग्रहक चपेटमे से ततेक कसगर दान करथु । पूजा–पाठमे लोककेँ ततेक ने विश्वास छैक जे अंधानुकरण होइत छैक भेड़ियाधसान जकाँ आ 'महाजनो येन गतः स पंथा' चरितार्थ होइत अछि ।

मिथिलामे ग्रहण–प्रसंग एहन मान्यता अछि जे एहि समयमे बनल भोजन छुति जाइत अछि, लोक गंगा डूब दैत अछि, जनउ बदलैत अछि तथा अनेक जप–तप सेहो करैत अछि । एहि अवसरपर लोक सिमरिया, काशी, प्रयाग–संगम, हरिद्वार आदि स्थानपर भारी संख्यामे जुटि गंगास्नान कए पुण्यक भागी बनैत अछि ।

डॉ० का□चीनाथ झा 'किरण'क लघुकाय उपन्यास 'चन्द्रग्रहण' 1932 ई०क रचना थिक, जाहि समयमे मैथिली साहित्यमे उपन्यास विधा कमजोर छल । किरणजीकेँ रूढ़िवादिता आ अंधविश्वासपर आस्था नहि छलन्हि । हुनका अपन कर्म, कर्त्तव्य आ

fHkUu&vfHkUu

MkW0 je.k>k
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

lqeu çdk'ku
हटाढ़ रुपौली, मधुबनी

प्रकाशक : **श्री अमित आनन्द**
सुमन प्रकाशन
ग्राम+पोस्ट- हटाढ़ रुपौली
भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी-847404
मो०- 9905440436

प्रथम संस्करण : 2008

प्राप्तिस्थान :
- **श्री राम प्रकाश अग्रवाल**
  श्री शंकर आभूषणालय
  टावर चौक, दरभंगा- 846004
  दूरभाष : 06272-252525
- **श्री सुमित आनन्द**
  ल.ना.मि.वि. टीचर्स क्वार्टर नं. 101
  श्यामा मन्दिरसँ उत्तर-पूर्व,दरभंगा- 846004
  दूरभाष : 06272-247701

मुद्रक : **प्रिंटवेल**
टावर चौक, दरभंगा

मूल्य : **दू सय पचास टाका**

BHINNA–ABHINNA **Rs. 250.00**
Literary Criticism
By **DR. RAMAN JHA**

लघुकाय अछि अपितु— विषय-वस्तुक विन्यास, उपस्थापनक ढंग, भाषाक प्रभावोत्पादकता आ समयानुकूल पात्रक चरित्र-चित्रण एकर विशेषता थिक । एहिमे औत्सुक्य कतहु शिथिल नहि होइत छैक अपितु जतेक आगू बढ़ब ततेक पछिला गप्प फड़िछाएल जाएत ।

श्री मायानन्द मिश्रक उपन्यास 'सूर्यास्त' ऐतिहासिक उपन्यास थिक । ई नायिकाप्रधान उपन्यास थिक । एकर नायिका छथि एनीसेंट आ नायक मानिक झा । ई अंगरेजी शासन कालक 1930 ई० सँ 1947 धरिक कथा थिक । अंगरेजक राज्यमे सूर्यास्त नहि होइत छलैक अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वीपर ओकर एकाधिकार छलैक । प्राय: तेँ उपन्यासक नाम सूर्यास्त पड़ल । एहि उपन्यासक अंतमे सूचना छैक जाहिमे श्री मिश्र घोषणा करैत छथि जे ई हुनक लिखल उपन्यास नहि थिकनि । हुनका ई पाण्डुलिपि कोनो अभिलेषागारमे भेटलनि । एतबे नहि, ओ ईहो घोषणा करैत छथि जे जहिया हुनका मूल लेखकक पता चलतनि तऽ अगिला संस्करण हुनके नामे छपतनि । स्वयं उपन्यास लिखि एहि तरहक घोषणा करब एकटा नव कल्पना थिक । ई कतेक उदार चरित्रक द्योतक थिक कारण जे एतए तऽ हम देखि रहल छी जे एकटा उपन्यासक लेल दू-दूटा लेखक दावा ठोकने छथि । नहि जानि के पट्ट होइत छथि आ के चित्त ?

हम उपलब्धताक आधारपर प्रयास कएलहुँ अछि जे स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यासक नामोटा गना सकी । सभ समयक किछु प्रमुख उपन्यासक बीच-बीचमे मात्र संक्षिप्त चर्चा कए सकलहुँ । एकर ई तात्पर्य नहि जे जाहि उपन्यासक चर्चा एहि छोट सन निबंधमे नहि भए सकल तकर कोनो तरहेँ महत्त्व कम अछि । हँ, उपलब्धता आ सूचनाक अभावमे किछु उपन्यासक नाम छुटलो होएबे करत, ताहि हेतु सुधीजनसँ हम क्षमायाचना करबनि ।

संदर्भ :

1. हमर दृष्टिएँ : डॉ० यशोदा नाथ झा, पृ०- 108
2. सम्पर्क : सं० रमानन्द रेणु, पृ०- 55
3. अंगरेजी फूलक चिट्ठी : सुधांशु 'शेखर' चौधरी (विवादक पटाक्षेप)
4. तत्रैव ।
5. कर्मधारय : तारानन्द वियोगी, पृ०- 200
6. हरि इच्छा गरीयसी : चौधरी कौशल किशोर ठाकुर, पृ०- 11

(साहित्य आकदेमी दिल्ली द्वारा जमशेदपुरमे आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रिय सेमिनारमे पठित आलेख— 23-25 मार्च 2007)

V

चौधरी (2004), नागफाँस- शेफालिका वर्मा (2004), गाम गेल छलहुँ- सत्यानन्द पाठक (2004), जिजीविषा- लिली रे (2005), हरि इच्छा गरीयसी- चौधरी कौशल किशोर ठाकुर (2005), वसुधाक संसार- अशोक कुमार ठाकुर (2006), सुजाता- नन्द कुमार मिश्र (2006), प्रभृति ।

एहि अवधिक सर्वाधिक दीर्घकाय उपन्यास थिक 'हरि इच्छा गरीयसी' जे लगभग पाँच सय पृष्ठक अछि । मैथिलीमे एहिसँ विशालकाय उपन्यास प्रायः एके गोट अछि- लिली रेक 'मरीचिका' । एहि उपन्यासक जेहने काया विशाल अछि तेहने एकर विषयवस्तु सेहो गम्भीर आ हृदयस्पर्शी । जेना ई अपन नामेसँ संकेत दैत अछि जे ईश्वरक इच्छा बिना एकोटा पातो नहि डोलैत छैक तहिना लगैत अछि जे एहि उपन्यासमे मनुष्य सोचैत किछु अछि आ घटैत किछु छैक । एहि उपन्यासमे इतिहास, भूगोल, राजनीति, ज्योतिष, दर्शन, नीति इत्यादिक स्पष्ट आ सजीव चित्रण भेल अछि । विभिन्न धर्मावलम्बीकेँ एक सूत्रमे बन्हबाक स्तुत्य प्रयास एहिमे भेल अछि । आजुक व्यस्तताक जीवनमे दीर्घकाय उपन्यासक पाठक भेटब कठिन छैक, मुदा हिनक उपस्थापनक ढंग, विषयक व्यापकता, भाषाक प्रौढ़ता आ कल्पनाक कमनीयता अवश्य लोकक मनकेँ हरण करत । एहि प्रसंग डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्रक पंक्ति द्रष्टव्य थिक- "मशीनवत् जीवन जीबैत, अस्त-व्यस्त रहैत दीर्घकाय उपन्यास पढ़बाक साक्षण पाठकक हेतु कठिन, तथापि जेना उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्दक 'गोदान'केँ लोक पढ़लक, देवकी नन्दन खत्रीक 'चन्द्रकान्ता'केँ लोक पढ़लक, तहिना अनेक संस्कृतिसँ जुड़ल आ सरसता रमणीयतासँ आवेष्टित-परिवेष्टित 'हरि इच्छा गरीयसी'क पारायण सेहो नहि बेरि-बेरि तऽ एको बेरि अवश्य करत ।"[6]

अशोक कुमार ठाकुरक सद्यःप्रकाशित 'वसुधाक संसार' सेहो साढ़े तीन सय पेजक उपन्यास अछि । आजुक समयमे दीर्घकाय उपन्यासक लेखकसभ धन्यवादक पात्र छथि, कारण जे बड़ धैर्यक कार्य छैक ओतबा लिखब आ ओहन लिखब, जाहिसँ पाठककेँ पढ़बा ले' विवश कए दी । एहि उपन्यासमे लागत जे वस्तुतः आजुक परिप्रेक्ष्यमे घटित घटनाकेँ स्थान आ नाम बदलिकेँ लेखक उपस्थापित कए देने होथि । आइ राजनीतिक अर्थ कोन तरहेँ बिगाड़ल जा रहल अछि तकर दिग्दर्शन एहि उपन्यासमे होइत अछि । वसुधा एकटा पुलिस ऑफिसरक विधवा थिकीह जनिक जीवनक झंझावात, बनैत-बिगड़ैत छोटछिन संसारक खिस्सा कहल गेल अछि, तथा कोना गम्भीर साजिश कए हुनक पतिक हत्या कए देल जाइत अछि । एकमात्र पुत्री मायाक संग कोना ओ लड़खराइत-लड़खराइत डेग बढ़ाए सफलताक सोपान दिस अग्रसर होइत छथि आ पुनः दुर्भाग्य हुनक पाछाँ नहि छोड़ैत छनि, तकर सजीव चित्रण एहि उपन्यासमे भेटत ।

केदार नाथ चौधरीक दुनूटा उपन्यास 'चमेली रानी' आ 'करार' बुझि पड़ैत अछि जे एके निसाँसमे पढ़ा जाएत । एके निसाँसमे पढ़एबाक तात्पर्य ई नहि जे ई अत्यंत

अतीतक स्मरण

कवि वा लेखक बनबाक स्पृहा ककरा नहि होइत छैक ? अपन सन्तान केहनो कुरूप वा निर्गुण हो, ककरा सर्वगुणसम्पन्न नहि बुझाइत छैक ? अपन लिखल काव्य—पद्य हो वा गद्य—ककरा रुचिकर नहि लगैत छैक ? तेँ ने गोस्वामी तुलसीदासजी कहि उठलाह—

निज कवित्त केहि लाग न नीका ।
सरस होय अथवा वरु फीका ॥

प्रस्तुत संकलनकेँ अपनेलोकनिक समक्ष उपस्थापित करैत हमरा अपन अतीतक स्मरण भए अबैत अछि । सर्वप्रथम कोनो रचना छपबासँ पूर्व लोककेँ कतेक व्यग्रता रहैत छैक, छपल देखि कतेक आह्लाद होइत छैक से कोनो सुधीवृन्दकेँ बुझएबाक प्रयोजन नहि । हमहुँ ओकर अपवाद नहि छलहुँ । 1974-76मे हम सी.एम. कॉलेजमे मैथिली प्रतिष्ठाक छात्र छलहुँ आ ओही समयमे हमर पहिल कथा 'लगे लगे ढुइ' कॉलजेक पत्रिका विदेहमे प्रकाशित भेल जे देखि मन गदगद भेल रहए । यद्यपि ओहूसँ पूर्व जखन हम 1972-74मे मारवाड़ी कॉलेजमे आइ.एस-सी.क छात्र छलहुँ तऽ होलीक अवसरपर महाविद्यालयक शिक्षकसभपर एक गोट कविता बनाय गुमनाम महाविद्यालयक गेटपर साटि देने रहिऐक, जे छात्र सभ पढ़थि आ कनफुसकी करथि । ओहि कविताक शीर्षक देने रहिऐक— 'शिक्षक एकोनत्रिंशनाममाला' जे ने कतहु छपल आ ने छपबायोग्ये छल । ओहि समयमे महाविद्यालयक प्रधानाचार्य छलाह डॉ. नित्यानन्द प्रसाद सिन्हा, जनिक रोब आ धाख ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालयान्तर्गत कोनो प्रधानाचार्यसँ बेसी छलनि । हुनका डरेँ खर कँपैत

छल । हमहुँ चोरे जकाँ कविता लिखने रही किन्तु दू-चारिटा उचक्कासभक फेरमे पड़िकऽ ओ सटा गेल रहय । आइयो ओहि कविताक दू-चारिटा पंक्ति स्मृतिमे अछि, जकर आब एतय उल्लेख करबामे हमरा असौकर्य नहि बुझाइत अछि—

हमर सभक प्राचार्य महोदय छथि विद्वान आ ज्ञानी ।
तुनाथ टिटही वसन्त छथि भटाचार्य मोसिदानी ॥
रामकुमार तँ सभकेँ प्रिय छथि शाहाजी मितभाषी ।
सुदिष्ट मिश्र सभकेँ पढ़बै छथि सभजन छथि अभिलाषी ॥
छथि बम्भोला रुद्राबाबू अयज प्रकाश छथि नटुआ ।
लाठीबाबू छड़ी घुमाकए डेङबथि सदिखन पटुआ ॥
चन्द्रकान्त बाबू महान छथि विज्ञानक बड़ ज्ञाता ।
ओहीमे अछि मोटका एकटा सभसँ तोड़त नाता ॥

1976-78मे हम एम.ए. मैथिली (ल.ना.मि.वि.)क छात्र छलहुँ । सत्र विलम्बसँ ओहू दिनमे चलिते छल, तेँ एम.ए.क परीक्षाफल 1980 ई.क मइमे प्रकाशित भेल । ओही बीचमे अर्थात् 1978सँ 1980क अभ्यन्तर हमर अधिकांश रचना साप्ताहिक मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल आ तकर बाद हमर लेखनी शिथिल भऽ गेल । हम अस्सिये ईस्वीमे **अलङ्कार-भास्कर** लिखि 1981ई.मे मैथिली अकादेमी, पटनाकेँ प्रकाशनार्थ दए देने रहिऐक जे लगभग दस वर्षक बाद घुराए अनलहुँ, जकर उल्लेख हम ओहि पोथीक लेखकीयमे सेहो कएने छी । 1980ई.क बाद हम जे किछु लिखलहुँ से प्राय: कोनो स्मारिकाक लेल वा आकाशवाणीक हेतु अथवा कोनो अभिनन्दनग्रंथक निमित्त । ओही छिड़ियाएल रचनामेसँ चयनित कथाकेँ समेटि एकटा कथा-संग्रह बनल **पश्चात्ताप**, आकाशवाणीसँ समय-समयपर प्रसारित कविताक संग्रह थिक— **काव्य-वाटिका** । समीक्षाक नामपर हम जे किचत लिखलहुँ तकरा बटोरि कए आइ अपनेलोकनिक समक्ष उपस्थित छी । एकरा एखन प्रकाशित करबाक विचारो नहि छल कारण जे हम 2006 ई.मे डी.लिट्. उपाधिक हेतु शोध-प्रबन्ध विश्वविद्यालयमे समर्पित कएने छलिऐक एहि आशाक संग जे 2007मे ओकर रिजल्ट भए जाएत आ तखन ओकरहि छपाएब । मुदा ओहिमे अति विलम्ब होइत देखि हम एकरहि आगू बढ़ाए देलिऐक । ओना हमर पी-एच.डी.क शोध-प्रबन्ध सेहो अद्यावधि प्रकाशनक बाट ताकिए रहल अछि ।

एहि संकलनक प्रकाशनक क्रममे हमरा सर्वप्रथम ध्यानमे आएल जे

1990 ई०क पश्चात् उपन्यासक लेखन एवं प्रकाशनक गति अत्यंत मंथर भए गेल, जे चिंताक विषय थिक । बीसम शताब्दीक अंतिम दशकमे दशोटा उपन्यासक रचना नहि भए सकल । ई बात सत्य जे मैथिलीमे प्रकाशनक सुविधा नहि छैक, मुदा तेँ की ? आन-आन विधामे तऽ लेखन-प्रकाशन जोरगर अछिए । उपन्यासेपर ग्रहण किएक ? विश्वस्तरपर आइ सभसँ बेसी उपन्यास पढ़ल जा रहल अछि । जहिना पद्य साहित्यमे महाकाव्यक महत्त्व अछि तहिना गद्यमे उपन्यासक । ई भिन्न गप्प जे आजुक व्यस्त दिनचर्यामे दीर्घकाय उपन्यासकेँ पढ़बामे बड़ धैर्यक आवश्यकता छैक, किन्तु ई समस्या उपन्यासहिक हेतु नहि छैक, महाकाव्यो पढ़बामे तऽ समयक अपेक्षा ओहिना होइत छैक । तेँ लेखक एहिसँ हतोत्साहित भए रचना नहि करथि से कथमपि उचित नहि । उपन्यासमे जँ पाठककेँ अपना दिस खिचबाक शक्ति रहतैक तऽ दीर्घ कायो लघुकाये सन बुझि पड़त । एहि समयक उपन्यास सभ थिक— लिली रेक- उपसंहार (1999), मर्सिनी- अरुण कुमार झा (1993), अनुत्तरित प्रश्न- उषा किरण खान (1995), एक छलीह महारानी- मदनेश्वर मिश्र (1993), हसीना मंजिल- उषा किरण खान (1995), सत्य एकटा काल्पनिक विषय- सारस्वत (1995), निशान्त- अशोक कुमार ठाकुर (1997), मोड़पर- धूमकेतु (2000) ।

एहि दशकक बहुचर्चित उपन्यास थिक धूमकेतुक 'मोड़पर' तथा उषा किरण खानक 'हसीना मंजिल' । मोड़परक विषयवस्तु अछि स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पूर्वापरक सामाजिक चित्र । धूमकेतुक भाषामे एहन जादू अछि जे यदि एक बेर पढ़ब शुरू करब तऽ ओ पढ़बा ले' विवश कए देत । हिनका प्रसंग तारानन्द वियोगीक कथन द्रष्टव्य थिक- "मिथिलाक गाम घरक राग-विराग, नेह-छोह, आशा-निराशाक ओ अद्भुत पारखी आ व्याख्याकार छथि, मानव मनक तन्तु-तन्तुकेँ विश्लेषित करबामे ओस्ताद छथि से हमरा लोकनि हुनकर कथा सभकेँ पढ़ैत जानिये रहल छी, अपन एहि पहिल उपन्यास, जे कि हुनक मृत्यूपरान्ते प्रकाशित भए सकलनि, मे ओ सभ किछु प्रस्तुत कएलनि अछि, से उपन्यास शिल्पक अनुरूप अपेक्षित विस्तारक संग ।"[5]

उषा किरण खानक लघुकाय उपन्यास 'हसीना मंजिल'मे हसीना नामक एक चुड़िहारिनक संघर्षक गाथा अछि जे कोन तरहेँ अपन मंजिल तक पहुँचैत अछि ।

बीसम शताब्दीक अंतिम दशकमे मात्र नओ गोट उपन्यासक प्रकाशनसँ बुझि पड़ैत छल जे उपन्यास विधा दम तोड़ि रहल अछि, मुदा एकैसम शताब्दीक आरम्भमे आशाक किरण पुनः जागि रहल अछि । 2001 ई सँ 2006 धरिमे लगभग पन्द्रह गोट उपन्यास प्रकाशित भए चुकल अछि, जे थिक— पथिक पियासल- बिजेन्द्र कुमार मिश्र (2001), उत्तर जनपद- रमानन्द रेणु (2003), सर्वस्वान्त- साकेतानन्द (2003), दरद- सारस्वत (2003), सूर्यास्त- मायानन्द मिश्र (2004), चमेली रानी- केदारनाथ

रहब ?' उपन्यास दू भागमे विभक्त अछि– पहिल रुसल जाइत सुग्गीरानी आ दोसर हमरा लग रहब ? । एहि दोसरे भागक नामपर उपन्यासक नामकरण भेल अछि । एहि उपन्यासमे स्वतंत्रतासँ पूर्वक हमरालोकनिक सामाजिक अधोगति, शोषक–शोषितक बीचक दूरी, सामंती व्यवस्थाक दूषित संस्कार, स्वतंत्रताक बाद क्रमशः स्थितिमे अन्तर, जयप्रकाशक आन्दोलनक बाद वातावरणमे परिवर्तन इत्यादि विषयपर प्रकाश भेटैत अछि । नवारम्भ स्वतंत्रतासँ पूर्वक मिथिलाक विश्रृंखलित होइत ग्रामीण परिवेशसँ शुरू होइत अछि तथा स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक, आर्थिक आ सामाजिक परिवर्त्तनक दिशाकेँ इंगित करैत समाप्त होइत अछि ।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी तऽ 'तऽर पट्टा ऊपर पट्टा'सँ उपन्यासकारक रूपमे चर्चित छलाहे आ 1980 मे 'ई बतहा संसार'पर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित भए सफल उपन्यासकार होएबाक मोहर सेहो लागि गेलनि, मुदा एहूसँ पैघ हिनक परिचय छल 'मिथिला मिहिर' सन प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्रिकाक सम्पादकक रूपमे । एहि दशकमे हिनकर दोसरो उपन्यास प्रसि□ पओने छल– दरिद्रछिम्मड़ि ।

1981 सँ 1990 धरि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास छपल जे आनुपातिक पूर्वापेक्षा कम भेल । एहि अवधिक उपन्यास थिक— राजा पोखरिमे कतेक मछरी– प्रभास कुमार चौधरी (1981), मरीचिका– लिली रे (1981), वैशाखी पूर्णिमा– चन्द्रनारायण मिश्र (1982), ठुमुकि बहू कमला– धीरेन्द्र (1982), हम कालिदास– मार्कण्डेय प्रवासी (1982), गामवाली– सुशील (1982), गुमकी आ बिहाड़ि– प्रदीप बिहारी (1983), निवेदिता– सुधांशु 'शेखर' चौधरी (1983), नागभूमि– मणिपद्म (1985), बाट आ बटोही– नवीन चौधरी (1986), मन्त्रपुत्र– मायानन्द मिश्र (1986), विसूवियस– प्रदीप बिहारी (1986), दूर्वाक्षत– उषाकिरण खान (1887), उगनाक देआदवाद– सुरेन्द्र झा 'सुमन' (1989) प्रभृति ।

एहि दशकक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यास थिक लिली रेक मरीचिका एवं मायानन्द मिश्रक मन्त्रपुत्र, जे दुनू पोथी साहित्य अकादेमी सम्मानसँ क्रमशः 1982 एवं 1988 मे सम्मानित भए चुकल अछि । मरीचिका लगभग एक हजार पृष्ठक मैथिलीक प्रायः सभसँ दीर्घकाय उपन्यास थिक । एकर महत्त्व दीर्घ काया मात्रक कारणेँ अछि से गप्प नहि, अपितु अपन वर्णन वैभवक कारणेँ, तीन–तीन पीढ़ीक द्वन्द्वक सटीक चित्रणक कारणेँ तथा प्रभावोत्पादक भाषाक कारणेँ बेसी अछि । ई दू खण्डमे प्रकाशित अछि जकर प्रथम खण्ड पुरस्कृत भेल छैक । मायानन्द मिश्रक महत्त्व उपन्यासकारक रूपमे मात्र एही हेतुएँ नहि अछि जे हुनका मंत्रपुत्रपर अकादेमी सम्मान भेटलनि, अपितु ओ लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार एहिसँ दू दशक पूर्वहि बनि चुकल रहथि । हँ, एतबा अवश्य जे ई नव ढंगक इतिहासपर आधारित उपन्यास थिक ।

एकर रचना सभ बहुत पुरान अछि, एकर नवीकरण कए दिऐक, मुदा पुनः ओहो उपयुक्त नहि बुझाएल । विभिन्न स्थान ओ विभिन्न समयमे छपबाक कारणेँ वर्त्तनीमे सेहो फर्क अछि । हम ओकरो यथावते छोड़ि देलिऐक । आलेखक अंतमे छपबाक समय तथा पत्रिका वा स्थानक उल्लेख कएल गेल अछि, जाहिसँ सहृदय पाठकवृन्द तत्सामयिक हमर रचना आ अवगतिक आकलन करैत ओहिमे भेल त्रुटिक हेतु हमरा क्षमा करताह से हमर निवेदन । तेँ एहिमे छपल आलेखक प्रसंग हमरा किछु नहि कहबाक अछि । हँ, अंतमे हम एकटा वस्तु नव जोड़लिऐक अछि, जे थिक— 'ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय–प्रदत्त पी–एच.डी. क उपाधि' । ई जोड़बाक हमर अभिप्राय अछि जे शोधकर्त्ता लोकनिकेँ ई बुझबाक आवश्यकता रहैत छनि जे कोन–कोन विषयपर कार्य भए गेल छैक आ कोन–कोन विषयपर भए सकैत छैक । शोध–निर्देशककेँ सेहो एहि आशयक सर्टिफिकेट देमए पड़ैत छनि जे अमुक विषयपर कार्य नहि भेलैक अछि । अतः हम एही दृष्टिएँ अपना भरि उपलब्ध सूचनाक आधारपर ओकर संकलन कए ओकरा विधाक अनुसार वर्गीकृत कए एहिमे जोड़ि देलिऐक अछि । बहुतोक रिजल्ट प्रकाशनक अधिसूचना नहि भेटल तऽ शोधप्रबन्ध पर अंकित समर्पण वर्षहि दए देलिऐक । एहि क्रममे भए सकैत अछि जे किछु पी–एच.डी. उपाधिधारीक नाम, जे हमर दृष्टिपथपर नहि आएल होएत, छुटलो होअए । हम शोधकर्त्ता लोकनिसँ निवेदन करबनि जे जनिक नाम छुटल होनि, त्रुटिपूर्ण होनि वा भ्रामक होनि ओ कृपया हमरा अवश्य सूचित करथि, जकर हम आगाँ परिमार्जन कए सकब ।

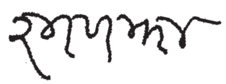
एतेक पैघ अन्तरालक रचनाकेँ हम एकठाम मिझहर कए समेटि देलिऐक अछि जे भिन्न–भिन्न रहब स्वाभाविके । हँ, सभटा तऽ साहित्यिके विधा थिक तेँ अभिन्नता सेहो छैके । अतः हम एकर नामकरण 'भिन्न–अभिन्न' कएल ।

एकर प्रकाशनक हेतु जनिका लोकनिक शुभकामना ओ आशीर्वाद हमरा प्रेरित करैत रहल ताहिमे सर्वप्रथम हम अपन गुरुवर डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित'क नाम लैत छी, जे निःस्वार्थ भावनासँ हमरा आशीर्वाद दैत रहलाह आ हमर मार्ग प्रशस्त करबाक हेतु वा हमर अभ्युन्नतिक हेतु कोनोटा डेग उठएबामे कसरि नहि रखलनि । हुनक प्रेरणा आ उत्साहब□नसँ हम स्वपथपर अग्रसर होइत रहलहुँ । अतः हुनका प्रति मात्र कृतज्ञताक दू शब्द व्यक्त कए हम गुरु□णसँ मुक्त नहि भऽ सकैत छी । डॉ. भीमनाथ झा, यद्यपि हमर गुरु नहि छथि, मुदा हम हुनका गुरुतुल्ये बुझैत छियनि । हुनक संग हमरा लगभग दस वर्ष

विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे बितएबाक अवसर भेल जाहिमे ओ हमरा अनुजतुल्य स्नेह देलनि । सतत हमर मार्ग प्रशस्त करैत रहलाह आ हुनक अवकाशग्रहणक उपरान्तो हम हुनक विद्वत्ता, अनुभव आ परिपक्व विचारसँ लाभान्वित भइये रहल छी । एहू संकलनक प्रकाशनक क्रममे जे किछु नीक बुझाएत तकर श्रेय हुनके आ जे त्रुटि रहि गेल हो तकर कारण हम । अतः हुनका प्रति आभार व्यक्त नहि करब हमर कृतघ्नता होएत । वर्त्तमान मैथिली विभागाध्यक्षा डॉ० श्रीमती नीता झासँ सेहो हमरा वर्गमे बैसि कए पढ़बाक अवसर भेल अछि, जखन हम एम.ए.क छात्र छलहुँ आ ओ यू.जी.सी.क गवेषिका छलीह । तेँ हुनको हम सहकर्मी कम आ गुरु बेसी मानैत छियनि । हुनक आशीर्वाद आ शुभकामनाक संग हमरा हुनक प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू प्रकारक सहयोग प्राप्त अछि, जाहिसँ हमर मनोबल बढ़ल रहैत अछि जे एहि तरहक कार्यक हेतु अत्यन्त आवश्यक छैक । अतः हुनका प्रति सेहो हम कृतज्ञता ज्ञापित करैत छियनि । एकटा विशिष्ट विद्वान जनिक सहयोग हमर जीवनमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि ओ थिकाह डॉ. बी.एन. झा, पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, वि.वि. गणित विभाग एवं पूर्व कार्यकारी कुलपति, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, जनिका हम बिसरि नहि सकैत छियनि । हुनको हम मूकनमन करैत छियनि ।

सुन्दर सुव्यवस्थित छपाइक हेतु श्री संजूजी, प्रिंटवेल धन्यवादक पात्र छथि । एहि संकलनक सम्बन्धमे एक बेरि पुनः हम कहब जे विद्वान् आ सहृदय व्यक्ति एकरा सहृदयतापूर्वक पढ़थि, एकर गुणेटाकेँ ग्रहण करथि आ दोषक परिहार करथि, कारण जे–

विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जन परिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति गर्भिणीप्रसवव्यथाम् ॥



वटसावित्री
03 जून, 2008

1971 सँ 1980 धरिक दशकमे सेहो लगभग दू दर्जन उपन्यासक रचना भेल । एहि समयक उपन्यास सभ थिक— नहि कतहु नहि- जीवकान्त (1971), गिरहकट्ट- शशिकान्त (1972), नैका बनिजारा- मणिपद्म (1972), घराड़ी- सुशील (1973), धरती जागि उठल- नित्यानन्द झा (1973), अन्हार- सुरेश सिंह 'स्नेही' (1974), दरिद्रछिम्मड़ि- सुधांशु 'शेखर' चौधरी (1974), अपराजिता- राजेश्वर झा (1976), राय रणपाल- मणिपद्म (1976), लवहरि कुशहरि- मणिपद्म (1976), कादो आ कोइला- धीरेन्द्र (1976), मालिनी- उदयकान्त मिश्र (1976), हमरा लग रहब ?- प्रभास कुमार चौधरी (1977), पंचवटी- लक्ष्मीपति सिंह (1978), भारतीक बिलाड़ि- मणिपद्म (1978), युगपुरुष- प्रभास कुमार चौधरी (1978), ई बतहा संसार- सुधांशु 'शेखर' चौधरी(1969), पटाक्षेप- लिली रे (1979), नवारम्भ- प्रभास कुमार चौधरी (1979), अभियान- मार्कण्डेय प्रवासी (1979), पश्चात्ताप- श्यामा झा (1980), गाम सुनगैत- विभूति आनन्द (1980), बालादित्य- चन्द्रनारायण मिश्र (1980) ।

एहि अवधिक तीन गोट उपन्यासकार बहुचर्चित रहलाह- मणिपद्म, सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ प्रभास कुमार चौधरी, जाहिमे मणिपद्मकेँ नैका बनिजारापर 1973 ई०क तथा सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ ई बतहा संसारपर 1980 ई०क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेलनि । ध्यातव्य थिक जे 1966 सँ 2006 ई० धरि एहि 41 वर्ष मध्य उपन्यास विधा केर मात्र पाँचेटा पोथी साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेल अछि जाहिमे दूगोट एही अवधिक अछि, एकटा 'दू-पत्र'क चर्चा हम पूर्वहि कए चुकल छी । विभूति आनन्दक 'गाम सुनगैत' सेहो एकटा भविष्णु उपन्यासकारक संकेत दैत अछि जाहिमे ग्राम्य जीवनमे निम्नवर्गक उत्थान हेतु जे उच्चवर्गक संग संघर्ष भए रहल अछि आ अन्तर्ज्वालासँ सभ भीतरे भीतर सुनगि रहल अछि तकर सजीव चित्रण कएल गेल अछि ।

उपर्युक्त 80क दशकमे मणिपद्मक चारि गोट उपन्यास प्रकाशित भेल- लवहरि कुशहरि, नैका बनिजारा, राय रणपाल एवं भारतीक बिलाड़ि । सत्तरियोक दशकमे मणिपद्मजीक चारि गोट उपन्यास प्रकाशित भए चुकल छल आ ओ ओहिमे ततबा ख्याति पाबि चुकल छलाह जे उपर्युक्त उपन्यासक पाठककेँ हुनक सि□हस्ततामे कोनो संदेह नहि रहि गेल छलैक ।

एहि अवधिमे प्रभास कुमार चौधरीक तीन गोट उपन्यास प्रकाशित भेल- हमरा लग रहब ?, युग-पुरुष एवं नवारम्भ । उपन्यासकारक रूपमे हिनक ख्याति एही समयमे बढ़ल । युगपुरुषमे उपन्यासकार देखबैत छथि जे एहि छल-प्रपंचसँ युक्त भ्रष्टाचारक युगमे जे तदनुकूल अपनाकेँ बनाए लैत छथि वैह थिकाह— युग-पुरुष । एहि उपन्यासमे चम्पा ओ शोभाक प्रेम-प्रकरण बड़ मधुर आ अर्थगर्भित भेल अछि तथा रोजीक संदर्भमे चरित्रहीनताकेँ उदात्तीकरण करबामे सेहो उपन्यासकार सफल भेल छथि । 'हमरा लग

छलनि । 'ब्रह्मपिशाच'क नामे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित हिनक उपन्यास 1964 ई०मे 'होटल अनारकली'क नामसँ प्रकाशित भेल । एहि अवधिमे जँ कोनो एकटा उपन्यासकारकेँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरबामे सर्वाधिक योगदान छनि तऽ ओ थिकाह मणिपद्म, जे एतबा दिनमे पाँच गोट उपन्यासक रचना कएलनि– अ□नारीश्वर, कोब्रागर्ल, लोरिक विजय, कनकी एवं राजा सलहेस । मणिपद्मजी लोकसाहित्यक प्रतिष्ठाताक रूपमे मानल जाइबला महान् व्यक्तित्व छथि जनिकर कृतिमे स्वाभाविक रूपेँ लोकसंस्कृति, लोककथा, लोकगाथा इत्यादिक दिग्दर्शन होइत अछि । हिनक अपन भाषाशैली छनि, अपन वर्णनप□ति छनि, अपन शब्दभंडार छनि आ अपन संस्कृतिसँ विशेष लगाव छनि । कोब्रागर्ल, लोरिक विजय, राजा सलहेस इत्यादिमे मणिपद्मजी मैथिली उपन्यासक भंडारेकेँ नहि पुष्ट कएलनि अछि अपितु मैथिली उपन्यास लेखनकेँ एकटा नव आयामो देलनि अछि । जतए मैथिली लोकसाहित्यक चर्चा होएत मणिपद्मजीक स्मरण होएबे करत ।

एहि अवधिक तीन गोट उपन्यास बहुचर्चित रहल – धीरेन्द्रक भोरुकबा, मायानन्द मिश्रक 'खोँता आ चिड़ै' तथा ललितक 'पृथ्वीपुत्र' । एहि समयमे रचनाकार लोकनिक ध्यान बहुमुखी विकास दिस गेलनि । ओलोकनि निम्न तथा पिछड़ल वर्गक अभ्युन्नतिक दिशामे अपन लेखनीकेँ बढ़ौलनि । श्रमिक वर्गक उपेक्षा तथा दुर्दशाक चित्रण हिनकालोकनिक उपन्यासक मुख्य विन्दु रहलनि । तीनू उपन्यासक नायक पिछड़ल वर्गक छथि, जुझारू छथि तथा अपन शोषक वर्गक विरोध करबाक प्रवृत्ति रखैत छथि । दाम्पत्य जीवनक प्रणयालापकेँ मायानन्द मिश्र जतेक हृदयस्पर्शी बनओलनि अछि ततेक ललित नहि बनाए सकलाह । मायानन्दजीक नारीपात्रक हृदयमे उफनैत पत्नीत्वक लहरि वासनाक समस्त विकारकेँ जरा दैत अछि मुदा ललितक स्त्रीपात्र ताहिमे नहि सक्षम होइत अछि । मायानन्दजी खेत–पथारसँ राजनीतिक द्वारि धरि दृश्यकेँ कौशलपूर्वक तालमेल करबैत छथि मुदा धीरेन्द्र अपन नायककेँ सहयोग दियाकेँ विजयी बना दैत छथि। धीरेन्द्रक भोरुकबाक मुख्य पात्र छथि– ठकबा, मुसहरबा, थेथरी आ राधे मिसर । ठकबा आस्तिक विचारधाराक अछि जे अपन बाहुबलपर विश्वास रखैत अछि, किन्तु ओकरामे सामाजिक कठोर बन्धनकेँ तोड़ि देबाक साहस नहि छैक, तेँ ओ राधे मिसरक प्रपंचक जालमे फँसि जाइत अछि ।

एहि समयक एकटा आओरो उपन्यास बहुचर्चित रहल, जे थिक उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क – 'दू पत्र' । ई पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यास थिक जे एकटा नव प्रयोग अछि आ एकर महत्त्व एहू हेतुएँ अछि जे ई 1969 ई०मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेल । एहि उपन्यासमे दू संस्कृतिक रस्साकस्सीमे कात लगैत युवक आ भारतीय नारीक अपन मान्यता स्पष्ट भेल अछि ।

अनुक्रम

स्पर्दा

मिहिर साप्ताहिक 1960 सँ 1985 धरि कुल 73 गोट उपन्यासक प्रकाशन कएलक। प्रथमतः वैह अंगरेजी फूलक चिठ्ठीकेँ उपन्यासक संज्ञासँ अभिहित कएलनि। एहि प्रसंग श्री शरदिन्दु कुमार चौधरीक निम्नलिखित पंक्तिक अवलोकन कएल जा सकैत अछि – "डॉ० हंसराज वैदेहीक 1991क उपन्यास विशेषांकमे ई स्पष्ट रूपेँ कहलनि जे मिथिला मिहिर साप्ताहिककेँ ई श्रेय छैक जे ओ अपन कार्यकालमे (1960 सँ 1985) कुल 73 गोट उपन्यास प्रकाशित कएलक। संगहि ओ ओहिमे प्रकाशित स्तम्भक अन्तर्गत 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी', 'सहजो पीसीक चर्खा' एवं 'बहिनाक विरोग'केँ सफल उपन्यास मानैत लिखलनि जे ओहिपर कोनो इतिहासकार दृष्टिपात नहि कएलनि जे कि बहुत पैघ विडम्बना अछि।"[4]

'अंगरेजी फूलक चिट्ठी' ककर थिक ? ई एकटा प्रश्नचिह्न बनि गेल अछि। ई उपन्यास यावत धरि मिथिला मिहिरक गर्भमे छल तावत धरि एकर लेखक सुधांशु 'शेखर' चौधरी बुझल जाइत रहलाह, किन्तु आइ एकहि पोथी दू लेखकक (सुधांशु 'शेखर' चौधरी एवं रामदेव झाक) समक्षमे राखल अछि। दुनूक एक संग अध्ययन एवं अवलोकनसँ निम्नलिखित तथ्य सामने अबैत अछि।

(1) दुनू लेखक (सुधांशु 'शेखर' चौधरीक पक्षमे हुनक पुत्र शरदिन्दु चौधरी एवं रामदेव झा स्वयं) अपन-अपन पक्षमे पर्याप्त प्रमाण देबाक प्रयास कएलनि अछि।

(2) रामदेव झाक उक्त पोथीमे प्रकाशन वर्ष 2002 अंकित अछि, जखन कि शेखर प्रकाशनसँ प्रकाशित पोथीमे प्रकाशन वर्ष 2003 अछि एहि दावाक संग जे एहि सँ पूर्व ई उपन्यास पुस्तकाकार नहि छपल अछि।

(3) रामदेवझा प्रमाणस्वरूप सुधांशु 'शेखर' चौधरीक पैडपर लिखल हस्ताक्षर सहित प्रमाणपत्र सेहो पोथीमे देने छथि, जाहिमे ओ स्वयं स्वीकार कएने छथि जे उक्त उपन्यास रामदेव झाक लिखल थिकनि। एहि प्रसंग शरदिन्दु चौधरी कहैत छथि जे ओ हुनक सहायतामे लिखि कए देने छलथिन जकर गबाहक नामोल्लेख सेहो कएने छथि, संगहि हुनक आत्मकथाक किछु अंश अपन पोथीमे देने छथि, जाहिसँ बुझि पड़त जे उक्त उपन्यासक लेखक स्व० चौधरीये छथि।

(4) रामदेव झाक उक्त उपन्यासमे 45 गोट चिट्ठी अछि जखन कि चौधरीजीबलामे कुल 41 गोट।

अस्तु, जे-से। निर्णय सुधीवृन्द करताह जे वास्तविक लेखक के ? जेना कि पूर्वहि कहि चुकल छी जे 1961 सँ 1966 धरि उपन्यास लेखनक गति पूर्ववते रहल आ जे उपन्यास सामने अएबो कएल ताहिमे विकास आ प्रगतिक संभावना अल्पे दृष्टिगोचर भेल। एहि समयमे सोमदेवक दृष्टि देशक राजनीति आ अराजकतापर केंद्रित भए चुकल

स्वर्णिम युग कहल जा सकैत अछि, कारण जे एहि दशकमे जतेक उपन्यासक रचना भेल से 'से न भूतो न भविष्यति' तऽ कहब उपयुक्त नहि होएत, कारण जे 'भविष्य' नहि बुझि रहल छी, मुदा एतबा धरि अवश्य कहल जा सकैत अछि जे आइ धरिक इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण आँकड़ा थिक । एहि दशकमे लगभग तीन दर्जन उपन्यासक प्रकाशन भेल जखन कि विगत तेरह वर्षमे (1948-1960) मात्र तेरहटा ।

उक्त अवधिक उपन्यास थिक- अंगरेजी फूलक चिठ्ठी- सुधांशु 'शेखर' चौधरी/ रामदेव झा (1961), विदागरी - चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'(1963), होटल अनारकली / ब्रह्मपिशाच-सोमदेव (1964), भोरुकबा-धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' (1964), खोंता आ चिड़ै - मायानन्द मिश्र (1965), पवित्रा - योगानन्द झा (1966), अ□नारीश्वर - मणिपद्म (1966), बिनु मायक बेटी - श्यामा झा (1967), बलचनमा - वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (1967), नहला पर दहला - रूपकान्त ठाकुर (1967), दूध-फूल - रमानन्द रेणु (1967), बाटक भेंट जिनगीक गेंठ - बिन्देश्वर मंडल (1967), पनिपत - जीवकान्त (1967), बिदेसरा - श्यामानन्द ठाकुर (1968), ओ - विद्यानाथ झा 'विदित' (1968), श्री गोनू झा - रवीन्द्र नाथ ठाकुर (1968), बन्दिनी बधु - रामचन्द्र चौधरी (1968), आन्दोलन - राजकमल चौधरी (1968), कोब्रागर्ल - मणिपद्म (1968), दू कुहेसक बाट - जीवकान्त (1968), अगिनवान- जीवकान्त (1968), सेहन्ता - कुँवर कान्त (1968), दू पत्र - उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (1968), राजा सलहेस - मणिपद्म (1969), एक अ□नारी - शौकत खलील (1970), रंजना - लेखनाथ मिश्र (1970), कनकी - मणिपद्म (1970), अभिशप्त - प्रभास कुमार चौधरी (1970), पीअर गुलाब छल - जीवकान्त (1970), चिनगी - गौरी मिश्र (1970) इत्यादि ।

एहू सत्तरिक दशकमे देखैत छी जे छओ वर्ष अर्थात् 1961 सँ 1966मे मात्र सातहिटा उपन्यासक रचना भेल जे पूर्वहिक अनुपातमे (वर्षमे एकटा) अछि किन्तु 1968 सँ 1970 धरि उपन्यासक बाढ़ि आबि गेल । किछु उपन्यासकारक तऽ एक वर्ष मे दू-दू टा उपन्यास प्रकाशमे आबि गेल, जेना - मणिपद्मक कनकी आ लोरिक विजय (1970), जीवकान्तक दू कुहेसक बाट आ अगिनबान (1968) ।

एहि समयक उपन्यासपर जखन विचार करए लगैत छी तऽ सर्वप्रथम 1961 मे प्रकाशित 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी' दृष्टिपथपर अबैत अछि, जे प्रथमतः 30 अक्टूबर 1960 सँ 30 जुलाइ 1961 धरि तथा 20 अगस्त 1961 केर साप्ताहिक मिथिला मिहिरक स्थायी स्तम्भक अन्तर्गत कुल 41 अंकमे छपल ।[3] मैथिलीक अधिकांश उपन्यास प्रथमतः कोनो ने कोनो पत्रिकामे धारावाहिक रूपमे छपल अछि आ समय अएलापर पुस्तकाकार भेल अछि । एखनहुँ धरि कतोक उपन्यास पत्रिकेक गर्भमे पड़ल असह्य पीड़ा सहि रहल अछि आ ओहिसँ बाहर निकलबाक बाट ताकि रहल अछि । हंसराजक अनुसार मिथिला

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यास

मैथिली साहित्यमे पद्य साहित्यक विकास जेना विद्यापतिसँ क्रमब□ आ निरंतर भेटैत अछि तेना गद्य साहित्यक विकास नहि भेल । सामान्यतया कोनहुँ साहित्यक आरम्भ पद्य साहित्येसँ भेल अछि, कारण जे पद्य लिखब सोझ अछि । श्रीमद्वाल्मीकिक मुँहसँ अनायासहि जँ कोनो काव्यक स्फुरण भेल तऽ सेहो पद्यब□ -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

सोनाकेँ कसौटीपर कसि कए ओकर शु□ताक परीक्षा कएल जाइत छैक, शस्त्रभृतक परीक्षा रणक्षेत्रमे होइत छैक, गृहिणीक परीक्षा विपत्तिक समयमे आ पंडितक परीक्षा भागवतक अर्थ कहबामे होइत छैक -

धनंजये हाटक संपरीक्षा रणांगनां शस्त्रभृतां परीक्षा ।
विपत्तिकाले गृहिणी परीक्षा विद्यावतां भागवते परीक्षा ॥

तहिना, कवि वा लेखकक परीक्षा गद्य लिखबामे होइत छैक- **गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति** । वास्तवमे एकटा निरक्षरो लोक कविताक पाँती जोड़ि लैत अछि, मुदा गद्य-सृजनक हेतु लेखनीकेँ सशक्त होएब आवश्यक होइत अछि । मैथिलीमे सशक्त गद्यकारक अभाव नहि अछि । कवीश्वर चन्दा झाक बाद गद्य साहित्यक गति तीव्रसँ तीव्रतर होइत गेल आ बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे उपन्यासक बीज वपन कएल गेल ।

उपन्यास गद्य साहित्यक सर्वाधिक लोकप्रिय विधा थिक । ई पाश्चात्य साहित्यक देन थिक । एहि देशमे तऽ लोक रामायण, महाभारत, गीता आ दुर्गा पढ़ैत-सुनैत छल । हँ, सुनैत छल खिस्सा सेहो— ओ चाहे ईश्वर विषयक रहए अथवा कोनो ऐतिहासिक । वैह खिस्सा एखन कथाक रूपमे साहित्यक एकटा सशक्त विधा बनि चुकल अछि । उपन्यास एक तरहेँ बुझी तऽ ओही कथाक वृहद् रूप थिक ।

स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् उपन्यास-लेखन गति पकड़लक, किन्तु मंथर । लोक एकर महत्त्वकेँ बुझलक । तावत कन्यादान आ द्विरागमनसँ लोकक रुचि खुजि चुकल छलैक । लोक एहि दिशामे लपकि पड़ल छल, किन्तु पाठक, वितरक आ प्रकाशकक अभावमे उपन्यासकार लोकनि अपन पूरा शक्ति एहि दिशामे नहि झोकने छलाह । परिणामस्वरूप 1948 सँ 1960 ई० धरि एहि बारह वर्षमे लगभग एक दर्जन मात्र उपन्यासक रचना दृष्टिपथपर अबैत अछि, जे थिक- कला- चतुरानन मिश्र (1948), विकास- चतुरानन मिश्र (1948), प्रतिमा- शैलेन्द्र मोहन झा (1948), वीरकन्या- चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (1950), चन्द्रकला- बदरीनाथ दास (1950), नवतुरिया- वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (1954), मधुश्रावणी- शैलेन्द्र मोहन झा (1956), दूर्वाक्षत- तारानाथ कंठ (1958), आदिकथा- राजकमल चौधरी (1958), विद्यापति- ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' (1960), बिहाड़ि पात आ पाथर- मायानन्द मिश्र (1960), तऽर पट्टा ऊपर पट्टा- सुधांशु 'शेखर' चौधरी (1960) ।

उपर्युक्त स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यास मध्य बहुचर्चित अछि यात्रीक नवतुरिया, मयानन्द मिश्रक बिहाड़ि पात आ पाथर, शैलेन्द्र मोहन झाक मधुश्रावणी तथा सुधांशु 'शेखर' चौधरीक तऽर पट्टा ऊपर पट्टा ।

एहि समयमे भारतक आजादीक किरण मिथिलोक माटि-पानिपर पसरब शुरू भए गेल छल । लोक परतंत्रताक कड़ी तोड़ि उन्मुक्त वातावरणमे साँस लेब शुरू कए देने छल । धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभ स्तरपर परिवर्तन परिलक्षित होमए लागल छल । शिक्षाक क्षेत्रमे सेहो एकाएक क्रान्तिक सुगबुगाहटिक अनुभव होमए लागल । लोककेँ विश्वास बढ़लैक जे पढ़ि-लिखिकेँ ओकरा क्षमतानुसार नौकरी भेटतैक । मैथिली उपन्यासकार सेहो बदलैत परिवेशमे अपन रचनाकेँ ढारबाक प्रयास कएलनि मुदा अधिकांश उपन्यासकार पूर्ववते ओही सामाजिक समस्या— कन्यादान-द्विरागमनक जालमे ओझराएल रहलाह ।

उक्त अवधिक यदि कोनो एक उपन्यासक नाम लेब तऽ ओ थिक यात्रीक नवतुरिया । एहिमे मिथिलांचलक जनजीवनक यथार्थ रूपकेँ प्रगतिशील दृष्टिएँ प्रतिबिम्बित कएल गेलैक अछि । रूढ़ि आ परंपराक रूपमे पंडित खोखाइ झा, मुखिया चतुरानन चौधरी, मटुकी पाठक, फतूरी काका छथि जे एहि नवतुरियाक बाटकेँ छेकने रहैत छथि, किन्तु लहलहाइत गाछ जेना ईटो पाथरकेँ फोड़ि अपन जड़ि जमा लैत अछि तहिना गामक कर्मठ युवक लोकनि ओहि घेराकेँ तोड़ि पन्द्रह वर्षक बीसो (विश्वेश्वरी)क विवाह पैंतालिस किंवा पचपन वर्षक बूढ़ वरक संग नहि होमए दैत छथि । युवावर्ग संगठित भए अनमेल विवाहकेँ रोकबामे समर्थ होइत छथि आ एतबे नहि, ओलोकनि एक योग्य वरसँ सामाजिक रीतिएँ ओकर विवाहो कराए दैत छथि । एहि प्रसंग डॉ० यशोदा नाथ झाक

उक्ति ध्यातव्य थिक— "नवतुरिया रूढ़िपर प्रहार, 'गरम दल' द्वारा आन्दोलनक संगठन, परिवर्त्तनकेँ गति प्रदान करबामे युवावर्गक भूमिका, नवीन विचारधाराक निर्माण एवं प्रसार तथा सामाजिक सांस्कृतिक चेतनाक पुनरुत्थान देखाए, सामाजिक निर्माण कार्यक मूल्यांकन हेतु उपन्यासकेँ एक अभिकरण सि□ कएल गेल अछि ।"[1]

डॉ० मायानन्द मिश्रक 'बिहाड़ि पात आ पाथर' सेहो वैवाहिके समस्यापर लिखल गेल उपन्यास थिक । 'नवतुरिया'क छओ वर्षक बाद अर्थात् 1960मे छपल एहि उपन्यासमे तिरबेनीकेँ रुद्रनाथ मिश्रक हाथमे जएबासँ रोकबाक हेतु कोनो नवतुरिया आगाँ नहि अबैत छथि, परिणामतः तिरबेनीकेँ असमयमे वैधव्यकेँ प्राप्त करए पड़ैत छनि । एहि प्रसंग डॉ० देवशंकर नवीनक पारखी दृष्टि द्रष्टव्य थिक- "मायानन्दजी एखन धरि अपन समाजक एहि विकृतिकेँ, एहि विडम्बनाकेँ मेटएबाक लेल ठाढ़ होमएबला कोनो आन्दोलनक लुत्ती नहि देखि सकलाह आ हिनकर तिरबेनी असमयमे विधवा भए गेलनि । उम्रजन्य यौवनोन्मादक झाँट-बिहाड़ि सहैत रहलनि । सामाजिक मर्यादा आ दैहिक आवश्यकताक रस्साकस्सीमे तनाइत रहलनि, किकियाइत रहलनि ।"[2]

मायानन्द मिश्रक एहि उपन्यासक नामकरणपर हमरा कने संदेह भेल । डॉ० देवशंकर नवीन 'सम्पर्क' (सं० रमानन्द रेणु)मे प्रकाशित अपन आलेखमे उक्त उपन्यासकेँ 'बिहारि पानि पाथर' कहने छथि । हम पोथीकेँ देखलहुँ तऽ 'बिहारि पात पाथर' भेटल आ उनटाए कए इनर कॉवरपर देखल तऽ 'बिहाड़ि पात आ पाथर' छपल अछि । अस्तु, जे-से । 'आ' रहने कोनो अर्थ-परिवर्त्तन नहि होइत छैक मुदा 'पात'क स्थानमे 'पानि' बुझि पड़ैछ जे टाइपोग्राफिकल एरर भए गेल छैक ।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक 'मधुश्रावणी' सेहो लगभग वैवाहिके समस्यासँ जुड़ल अछि । एहि उपन्यासमे कमल आ नलिनीक कोमल कल्पना संयोगमे नहि बदलि वियोगमे परिणत भए जाइत अछि आ मधुश्रावणी अश्रुश्रावणीक रूप धारण कए लैत अछि । डॉ० झाक एहि उपन्यासमे वर्णन-विश्लेषण आ खास कए चरित्र-चित्रणसँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक मनोविश्लेषणकेँ विशेष महत्त्व देने छथि ।

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक 'तऽर पट्टा ऊपर पट्टा'मे पात्रक मनोविश्लेषणक पूर्ण प्रयास कएल गेल अछि । एहि उपन्यासक युवक परमा आदर्शवादी छथि जे सामाजिक कुरीतिकेँ दूर करबाक हेतु प्रयत्नशील होइत छथि, किन्तु लीलाधर बाबू हुनक प्रयासकेँ विफल करबापर तुलि गेल छथि । जमुनीक संग लीलाधर बाबूक संबंध तथा गंगाक मानसिक स्थितिक विश्लेषण कए लेखक सामाजिक जीवनक जे चित्र उपस्थापित करैत छथि, से लेखकक दृष्टिकोणक परिचायक थिक ।

1960 ई०क पश्चात् अर्थात् 1961 सँ 1970 धरिक अवधिकेँ उपन्यास-लेखनक

अनुप्रास, यमक, शब्दश्लेष, भाषासमक एवं चित्र । ई अलंकार सब अप्पय दीक्षितक 'कुवलयानन्द' एवं 'चित्र–मीमांसा'सँ भिन्न अछि । श्री सुमनजी चित्रोत्तरकेँ स्वतंत्र अलंकार मानि लेलनि अछि जखन कि कुवलयानन्दकार चित्रोत्तरकेँ उत्तरे अलंकारक प्रभेद मानैत छथि । एतबे नहि अलंकार–मालिकामे जाहि प्रमाण, रसवत् एवं संकर अलंकारक भेदक चर्चा अछि तकरा कुवलयानन्दमे स्वतन्त्र अलंकार मानि लेल गेल अछि ।

अस्तु, जे–से । 'अलंकार–मालिका' मैथिलीक जाहि रिक्त स्थानकेँ भरलक अछि से सर्वथा श्लाघ्य थीक । ई अपना ढंगक बेजोड़ पोथी अछि । लक्ष्य–लक्षण समन्वित रहलाक कारण एकर लोकप्रियता एवं उपादेयता अक्षुण्ण रहत । लक्षणक संग उदाहरण एकर मुख्य वैशिष्ट्य थीक । व्याख्याक संग जँ ई प्रस्तुत कएल जाय तऽ सोनमे सुगंध भए जाएत, कारण जे अलंकारक भेदोपभेदकेँ नीक जकाँ बुझब, एकरा हृदयंगम करब श्रमसाध्य अछि ।

(विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोधपत्रिका 'मैथिली', अंक-1, दिसम्बर 1996)

V

कर्मठतापर आस छलन्हि । हिनक व्यक्तित्व तथा कृतित्वक प्रसंग आचार्य सुमनजीक कथन अछि – "वाणीमे स्पष्टता, विचारमे प्रौढ़ता, चिंतनमे मौलिकता, सामाजिक जीवनमे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रह आ तदनुकूल आचरण, दलित–पीड़ितक प्रति सहज सहानुभूति, क्रान्तिक प्रखरता अथापि शान्तिक रम्यता, सि□ान्तमे कठोर अथच व्यवहारमे कोमल किरणजीक रूपरेखा थिक ।" पुनश्च–"प्रौढ़ निबंध, निर्लेप आलोचना, वास्तविकता ओ कल्पनासँ समन्वित प्रगतिवादी कवित्व, नाट्य एकांकीक रससि□ विन्यास, समाजसुधारपर आधारित सुरुचिपूर्ण उपन्यास गल्प किरणजीक कलमक जादूक उदाहरण अछि ।"

किरणजीक प्रस्तुत उपन्यासमे नारीपात्रक प्रधानता अछि । एहिमे प्रमुख नारीपात्र रजनी आ सुषमा छथि । अशिक्षा आ अंधविश्वासक कारणेँ दुनू सखी परिणामक चिंता बिनु कएनहिँ गंगास्नानक हेतु प्रस्थान करैत छथि, गार्जियनक संग । एहि उपन्यासमे देखाओल गेल अछि जे कोना बापक दुलारू बेटी अपन जिद्दपर अड़ि कए, दुलारक दुरुपयोग करैत, अनुशासनहीनताक परिचय दैत, उन्मुक्त भए विचरणक हेतु उद्यत होइत छथि आ तकर दुष्परिणाम हुनका भोगए पड़ैत छन्हि । संयोगे कहू जे अपहृता भइयो कए, लुच्चा वा सुच्चा मुसलमान अपहर्त्ताक जालमे फँसियो कए, अपन अनिन्द्य रूप सौन्दर्यक विषवाणसँ अनेक कामांध युवक लोकनिक हृदयस्थलकेँ बेधियो कए, गाड़ीक कसमकस भीड़मे भड़कुस्सा भइयो कए, गार्जियनक संग छोड़ियो कए, मात्र दुइये सखी अपन अस्तित्व आ सतीत्वक रक्षा कए सकलीह ।

जहिना चन्द्रग्रहणमे उग्रास भेलापर वैह चन्द्रमा, वैह मादकता, वैह शीतलता तथा वैह ज्योत्स्ना दृष्टिगोचर होइत अछि, तहिना एहू उपन्यासक नायिका सुषमा आ हुनक सखी रजनी किछु कालक हेतु गुण्डा अपहर्त्ता रूपी राहुक कराल मुखमे फँसल छलीह, मुदा नाना प्रकारक संयोगसँ हिनका लोकनिकेँ कनेको नछोड़ो नहि लगलन्हि । यद्यपि कहल गेल छैक जे—

लेखनी पुस्तकी भार्या परहस्त गता यदि ।
आगता दैवयोगेन नष्टा भ्रष्टा च मर्दिता ॥

यद्यपि उपन्यासकार किरणजी मिथिलाक एहि दुनू रूपवती युवतीक अनिन्द्य सौन्दर्यक वर्णन कएलन्हि अछि, कामांध युवक लोकनिक निर्निर्मेष दृष्टिक वर्णन कएलन्हि अछि, खचाखच भरल भीड़क वर्णन कएलन्हि अछि, दुनू युवतीक उन्मुक्त भावसँ गार्जियनक आँखिक परोक्ष भए भीड़केँ चीरि गाड़ीमे चढ़बाक संकेत कएलन्हि अछि, तखन 'मर्दिता' नहि, सतीत्वक रक्षा करबामे सफल कहि चतुर उपन्यासकार मिथिलाक ललनाक माथ उठओलनि अछि, ओकर मर्यादा बढ़ओलनि अछि, ओकर स्वाभिमानक रक्षा कएलन्हि अछि ।

अंतमे तरुण आ सुषमाक सुखद मिलन कराए उपन्यासकार एहि उपन्यासकेँ सुखान्त आ सफल बनाए दैत छथि । एहि प्रसंग डॉ० अमरेश पाठक कहलन्हि अछि– "छोट रहितो चन्द्रग्रहण मैथिली उपन्यास साहित्यमे नव अध्यायक श्रीगणेश करैत अछि । यद्यपि चन्द्रग्रहण सामाजिक कथाभित्तिपर आधारित अछि, किन्तु संयोगक प्रबलता देखाए लेखक पाठकक मनमे घटनाक प्रति संदेह उत्पन्न कए दैत छथि । एहि दृष्टिएँ कथानक दोषयुक्त अछि, किन्तु दृश्यावलीक वर्णन द्वारा लेखक एहि छोट रचनामे रमयबाक शक्ति रखैत छथि ।"

पुनश्च, ओ कहैत छथि– "एहि रचनाक स्वाभाविक विकास नहि भेल अछि । सभ स्थलपर संयोगक आश्रय लेल गेल अछि । एहन सन बुझि पड़ैछ जे कोनो निश्चित उद्देश्य धरि पहुँचबाक हेतु घटना साधन मात्र बनाओल गेल अछि । घटनाक स्वाभाविकता यत्र–तत्र नष्ट भेल अछि ।"

चन्द्रग्रहणक माध्यमसँ उपन्यासकार ई देखबए चाहैत छथि जे कोना लोक धक्का–मुक्का खा कए सुधरैत अछि, ठेस लगने बु□ बढ़ैत छैक, यद्यपि ओतहि रजनीमे कोनो परिवर्तन नहि देखि ओकरा अपवाद बुझक थिक । एहि चन्द्रग्रहणमे कतोक स्थलपर एहन सन बुझि पड़ैत अछि जेना मेघमे चन्द्रमा विलीन भए गेल होथि आ पुन: कतहु प्रगट भए गेल होथि, यथा— रजनी आ सुषमा कोना दरभंगा स्टेशनपर ठसमठस भीड़मे विलीन भए गेलीह आ समस्तीपुरमे मालगाड़ीक डिब्बामे पहुँचि गेलीह । कतए ओ मुसलमान अपहर्त्ता कोन प्रकारेँ हुनका लोकनिकेँ ओहि भीड़मे दबोचि लेलकनि आ छूमन्तरसँ जादूगर जकाँ मालगाड़ीक डिब्बामे पहुँचा देलकनि । कोना तरुण तत्पर रहितो एहि युवतीद्वयकेँ ने गाड़ीमे चढ़ैत देखलथिन्ह ने उतरैत, किन्तु एकसरे मालगाड़ीमे जा कए ताकि लेलथिन । केहन संयोगसँ गुण्डाक छूरासँ आहत भेलाह कि ता स्वयंसेवक तैयारे रहथि ।

ई उपन्यास जाहि समयमे लिखल गेल से उपन्यासक हेतु प्रयोगक समय छल । एकरा उपन्यासक विकासक कड़ीक रूपमे देखल जाए सकैत अछि । एकर रचनाक प्रसंग डॉ० आनन्द मिश्र भेटकर्त्ता डॉ० रमानन्द झा 'रमण'केँ कहैत छथिन– "चन्द्रग्रहणक रचनाक दूटा कारण प्रतीत होइछ । पहिल कारण थिक समाजसुधार तथा दोसर कारण थिक मैथिलीमे उपन्यासक अभावक पूर्तिक प्रयास । ओ नवजागरणक युग छल । सामाजिक पतनकेँ रोकब साहित्यकारक प्रथम दायित्व मानल जाइत छल । किरणजी काशीमे रहैत छलाह । काशीमे ग्रहणक अवसरपर खूब मेला लगैत अएलैक अछि । मेलामे एहि प्रकारक घटना घटब बहुत स्वाभाविक रहैत छैक । एहि घटनाकेँ लेखक सिमरियाघाटक संदर्भमे वर्णन कए मैथिलक नैतिक अध:पतनकेँ रोकबा लेल उपयोग कएल अछि । समाजक सुधार लेल तीनटा डेग उठाओल अछि । पहिल डेग थिक युवक

अक्रमातिशयोक्ति

अक्रमातिशयोक्ति: स्यात् सहत्वे हेतुकार्ययो: ।
आलिङ्गन्ति समं देव ! ज्यां शराश्च पराश्चते ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र–41

जतए कारण एवं कार्य संगहि होअए ओतए अक्रमातिशयोक्ति होइत अछि; यथा– हे राजन ! अहाँक वाण आ शत्रु संगहि पृथ्वीक आलिङ्गन करैत अछि ।

अतिशयोक्ति अक्रम, क्रम न कारण काज विधान ।
वाणक संगहि अरिक शिर कयल दिगंत उड़ान ॥

कारण एवं कार्यमे जतए अक्रम होअए (सामान्यत: कारण पहिने आ कार्य बादमे होइत अछि, किन्तु एतए दुनू संगहि होइत अछि) ओतए अक्रमातिशयोक्ति होइत अछि; यथा – वाणक संगहि शत्रुक शिर उड़ि गेल ।

अत्यन्तातिशयोक्ति

अत्यन्तातिशयोक्तिस्तु पौर्वापर्यव्यतिक्रमे ।
अग्रे मानो गत: पश्चादनुनीता प्रियेण सा ॥

– कुवलयानन्द, सूत्र–43

जतए कारण एवं कार्यमे पौर्वापर्य विपर्यय होअए ओतए अत्यन्तातिशयोक्ति होइत अछि; यथा– नायिकाक मान तऽ पहिनहि समाप्त भऽ गेल आ पश्चात् नायक हुनक अनुनय–विनय कयलनि ।

पूर्वापरक विपर्ययेँ अत्यन्तातिशयोक्ति ।
मान छुटल पहिनहिँ तखन पियक मुहेँ नमनोक्ति ॥

–अलंकार–मालिका, सूत्र–46

पूर्वापरक विपर्यये अत्यन्तातिशयोक्ति होइत अछि; यथा– नायिकाक मान तऽ पहिनहि समाप्त भऽ गेल आ नायक हुनका बादमे मनौलनि ।

एहि तरहेँ लगभग सम्पूर्ण पोथीसँ कुवलयानन्दक लक्षण ओ उदाहरण भाषान्तरसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि । अप्पय दीक्षित शब्दालङ्कारक उल्लेख ने 'चित्र–मीमांसा'मे कयलनि आ ने 'कुवलयानन्दे'मे । कुवलयानन्दमे कुल 123 अलंकार वर्णित अछि जाहिमे कतोक अलंकारक प्रभेदोकेँ स्वतन्त्र अलंकार मानि लेलन्हि अछि । अलंकार–मालिकामे माला बनयबाक हेतु एक सय आठे अलंकार उपयुक्त बुझयलन्हि । एहिमे अर्थालंकारक पश्चात् शब्दालंकारक सेहो वर्णन अछि; जे थिक – पुनरुक्तवदाभास,

'अतिशयोक्ति' केर मूलमे रूपक अध्यवसान ।
युगल नलिनसँ देखु ई छुटइछ शर-समुदाय ॥

–अलंकार-मालिका, सूत्र-39

अतिशयोक्तिक मूलमे यदि रूपक अध्यवसान होअए अर्थात् उपमान द्वारा उपमेयकेँ गोड़िकए ओकर अभेद कथन होअए तऽ रूपकातिशयोक्ति होइत अछि; यथा देखू, नीलकमलक जोड़ासँ वाणक समूह निकालि रहल अछि ।

सापह्नवातिशयोक्ति

यद्यपह्नुतिगर्भत्वं सैव सापह्नवा मता ।
त्वत्सूक्तिषु सुधा राजन्भ्रान्ताः पश्यन्ति तां विधौ ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र-37

यदि अतिशयोक्ति अपह्नुति अलंकारसँ युक्त होअए तऽ सापह्नवातिशयोक्ति होइत अछि; यथा— हे राजन् ! अहाँक सूक्तिएमे अमृत अछि, व्यक्ति ओकरा चन्द्रमामे तकैत अछि ।

यदि च अपह्नुति गर्भमे अपह्नवातिशयोक्ति ।
वृथा तकैछ शशांकमे अमृत ललित कवि-सूक्ति ॥

–अलंकार-मालिका, सूत्र-40

गर्भमे अपह्नुतिकेँ रहने सापह्नवातिशयोक्ति होइत अछि; यथा- चन्द्रमामे अमृत ताकब व्यर्थ थीक, ओ तऽ कविक सूक्तिएमे भेटैत अछि ।

सम्बन्धातिशयोक्ति

सम्बन्धातिशयोक्तिः स्यादयोगे योगकल्पनम् ।
सौधाग्राणि पुरस्यास्य स्पृशन्ति विधुमण्डलम् ॥

असम्बन्धमे सम्बन्धक वर्णन भेने सम्बन्धातिशयोक्ति होइत अछि, यथा- एहि नगरक भवनक अग्रभाग चन्द्रमण्डलकेँ छुबैत अछि ।

छुबइत अम्बरकेँ नगर गुम्बज उन्नत रूप ।

–अलंकार-मालिका, सूत्र-43

नगरक उन्नत गुम्बज आकाशकेँ स्पर्श करैत अछि ।

वर्गमे नारीक प्रति यौन आकर्षणक वर्णन द्वारा नैतिक अधःपतनकेँ रोकब । स्टेशनपर युवक लोकनिक वार्त्तालाप आ गतिविधियोसँ ई स्पष्ट भए जाइछ । दोसर स्थितिमे धर्मपरिवर्तन आ पैशाचिक कार्य— अपहरण देखाओल अछि । आ तेसर डेगमे स्वयंसेवक दलक अवतरण कएल अछि । किरणजी जहिना दैनिक जीवनमे निर्भीक, उचितवक्ता, कर्मठ, क्रान्तिकारी, नवतावादी छलाह तहिना काव्य सृजनमे सेहो रूढ़ि आ परम्पराकेँ तोड़ि नवताक स्थापना करैत दृष्टिगोचर होइत छथि । विद्यापतिसँ लए आधुनिक काल धरि वसंतकेँ □तुराजक संज्ञासँ विभूषित करबाक परंपरा छल, मुदा किरणजी मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे हेमन्तकेँ □तुराजक संज्ञासँ अभिहित करैत छथि, संगहि परंपरावादी कविक उपहास करैत हुनका बताह कहि उठैत छथि—

पिबइत दूध पवित्र मधुर
माँ मिथिला केर कोरमे बैसल ।
के बताह कवि भाङ पीबि
स्वागत वसंत अछि गाबि रहल ?

('कीर्तिकिरण'सँ - 2006)

V

साओन-भादव आ सुमन

'साओन-भादव' प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क रचना थिक, जे प्रकाशित होइते पूर्ण यश पौलक । ई पोथी सुमनजीक अप्रतिम प्रतिभा, सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा विलक्षण अभिव्यंजना-शक्तिक परिचायक थिक । प्रकृतिक एहन विलक्षण मानवीकरण अन्यत्र भेटब दुर्लभ । साओन-भादवक मेघ तऽ प्रतिवर्ष अबैत अछि आ उमड़ि-घुमड़ि, गरजि-बरसिकऽ चल जाइत अछि । किन्तु एहि अचेतन पदार्थमे चेतनाक संचार नओ किंवा एगारहो रसमे करब कविक बौ□क विलक्षणता नहि तँ आओर की भऽ सकैछ ?

नओ रस अपन स्थायीभावक संग निम्नलिखित अछि—

रस—

शृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानकाः ।
वीभत्साद्भुत संज्ञो चेत्यष्टौ काव्ये रसास्मृताः ॥

स्थायीभाव—

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहोभयं तथा ।
जुगुप्सा विष्मयंश्चेति स्थायीभावाः प्रकीर्त्तिताः ॥

अपिच—

निर्वेद स्थायीभावोस्तु शान्तोऽपि नवमोरसः ।

भक्ति ओ बात्सल्यकेँ एखन धरि पृथक् सत्ता नहि भेटलैक अछि ।

परन्तु रसक निष्पति होअय कोना ?

एहि हेतु विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारीभाव अथवा संचारीभावक संयोग आवश्यक—

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः ।

(3) (हे सुन्दरि !) जमीनपर चलबाक कारण अहाँक कोमल चरण लाल भए गेल अछि ।

(4) (हे सुन्दरि !) ई चन्द्रमा अहाँक मुखक कान्तिकेँ प्राप्त करबाक इच्छासँ ओहि कान्तिकेँ धारण कएनिहार कमलसँ शत्रुताक आचरण कए रहल छथि ।

(5) (हे सुन्दरि !) की स्तनकेँ धारण करबा लए अहाँक मध्य भाग सोनाक जंजीरसँ बान्हि देल गेल अछि ?

(6) (हे सुन्दरि !) ई कमल जलमे एहि हेतु तप करैत अछि जे अहाँक चरणक संग अद्वैतता प्राप्त कऽ सकय ।

तुलनीय

(1) **कोकक शोकक अगिनहिक धुआँ अन्हार बुझाय ।**
(2) **पोतय जनु सर्वाङ्ग तम नभ काजर बरिसाय ॥ 35 ॥**
(3) **भूतल चलइत पद मृदुल निश्चय रक्तिम भेल ।**
(4) **सरिपहुँ शशि-रिपु कमल केर रुचि वा तव मुख लेल ॥ 36 ॥**
(5) **कुच उँच बन्हन हित कसल कटि तट कंचन डोर ।**
(6) **तव पद समता हित तपय कमल कि जल बिच भोर ॥ 37 ॥**

–अलङ्कार-मालिका, सूत्र- 35-37

अतिशयोक्ति

अतिशयोक्ति अलंकारक सेहो कुवलयानन्द एवं अलंकार-मालिका दुनूमे सात-सात भेद अछि । दुनूक उदाहरण सेहो प्रायः एके अछि ।

रूपकातिशयोक्ति

रूपकातिशयोक्तिः स्यान्निगीर्याध्यवसानतः ।
पश्य नीलोत्पलद्वन्द्वान्निःसरन्ति शिताः शराः-॥

–कुवलयानन्द, सूत्र-36

जतए उपमान उपमेयकेँ गीरिकऽ ओकरा संग अभेद स्थापित करए ओतए रूपकातिशयोक्ति अलंकार होइत अछि; यथा- देखू, नील कमलक जोड़ासँ श्वेत वाण निकलि रहल अछि ।

आनक शंकाक कारणेँ तथ्यकेँ झाँपब छेकापह्नुति थीक; यथा- गुनगुनाइत पद लग्न भए गेल, के प्रिय ? नहि, नूपुर ।

कैतवापह्नुति

कैतवापह्नुति तिर्व्यक्तौ व्याजाद्यैर्निह्नतेः पदैः ।
निर्यान्ति स्मरनाराचाः कान्तादृक्पातकैतवान् ॥

—कुवलायनन्द, सूत्र-31

जतए व्याज आदि पदक द्वारा प्रस्तुतक निषेध कयल जाय ओतए कैतवापह्नुति होइत अछि; यथा- प्रियाक दृक्पातक व्याजसँ कामदेवक वाण निकलि रहल अछि ।

छल कपटेँ कय अपह्नव कैतव पूर्वक उक्त ।
प्रिया कटाक्षक कपटसँ कामक वाण प्रयुक्त ॥

-अलङ्कार-मालिका, सूत्र-32

छल-कपट कए वस्तुक निषेध करब कैतवापह्नुति थीक; यथा- प्रियाक कटाक्षक व्याजसँ कामदेवक बाण प्रयुक्त भए रहल अछि ।

8. उत्प्रेक्षा

कुवलयानन्दमे उत्प्रेक्षाक छओ भेद कएल गेल अछि । अलङ्कार-मालिकामे सेहो छओ भेद अछि । दुनूक उदाहरणमे कोनो अन्तर नहि देखना जाइत अछि । क्रमशः उदाहरण प्रस्तुत -

धूमस्तोमं तमः शंके कोकीविरहशुष्मणाम् ।
लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवा□जनं नभः ॥
रक्तौ तवाङ्ध्री मृदुलौ भुवि विक्षेपणाद्ध्रुवम् ।
त्वन्मुखाभेच्छया नूनं पद्मैरायते शशी ॥
मध्यः किं कुचयोर्धृत्यै ब□ः कनकदामिभः ।
प्रायेऽब्जं त्वत्पदेनैक्यं प्राप्तं तोये तपस्यति ॥

- कुवलयानन्द, सूत्र-33-35

(1) सायंकालीन अन्हार मानू कोकीक शोकाग्निक धूआँ थिक ।

(2) रातिक अन्हार की थिक, बुझि पड़ैत अछि जेना आकाश काजरक वर्षा कएकेँ देहमे लेपैत हो ।

मुदा से सभ किछु एहि साओन भादवमे दृष्टिगोचर होइछ । आलम्बन तथा उद्दीपन विभाव प्रकृति स्वयं बनल छथि, तेँ अनुभाव स्वाभाविके— **अनु पश्चात् भवन्ति इति अनुभावाः ।** आ तैंतीसो टा व्यभिचारीभाव अपन उपयुक्त रसक परिपाकमे सहायक होइते अछि । ओ व्यभिचारी भाव थिक—

निर्वेदग्लानिशंकाख्यास्तथा सूयामदश्रमाः
आलस्यश्चैव दैन्यस्य चिंतामोहस्मृतिर्धृतिः ।
व्रीड़ा चपला हर्ष आवेगो जड़ता तथा
गर्वोविषाद औत्सुक्यं निद्रापस्मार एवच ॥
मतिर्व्याधिस्तथोन्मादः तथा मरणमेव च ।

साओन-भादवमे एगारहो रसकेँ पृथक-पृथक शीर्षकक अन्तर्गत राखि निम्नांकित क्रममे सजाओल गेल अछि— (1) संयोग श्रृंगार (2) विप्रलम्भ श्रृंगार (3) वीर (4) करुण (5) हास्य (6) अद्भुत (7) भयानक (8) रौद्र (9) वीभत्स (10) शान्त (11) वात्सल्य एवं (12) भक्ति ।

कवि कोन तरहेँ विभाव, अनुभाव ओ व्यभिचारी भावक संयोगसँ रसक निष्पत्ति करैत छथि, से देखल जाय । संयोग श्रृंगारक 'चिर-सोहागिनी' शीर्षकसँ उदाहरण प्रस्तुत अछि—

उमड़लि सरिता सिन्धु-सङ्गमा
आलिङ्गित-तरु लता भङ्गिमा ।
दूभि सेज सजि बासकसज्जा
वसुधा पहिरलि पट हरीतिमा ॥

एतऽ वसुधा, जे बासकसज्जा नायिकाक रूपमे चित्रित छथि, आलम्बन विभाव छथि । दूभि-सेज आ पावसक कारण लोक छाहमे रहिते अछि तेँ एकान्त स्थान, से उद्दीपन विभाव भेल । जेँ कि संयोग श्रृंगार निरपेक्ष अछि तेँ स्थायीभाव होयतैक रति, प्रेमालाप करबाक इच्छा । उपर्युक्त पाँतीमे हमसभ देखैत छी जे तरु आ लताक रूपमे आलिङ्गन आ कटाक्षनिक्षेप सेहो चलिए रहल अछि तेँ अनुभावो छैके । पुनः सरिताक उमड़ब आ सिन्धुक सङ्ग सङ्गम करब व्यभिचारीभाव भेल ।

केहन विलक्षण कल्पनाक उड़ान अछि ! कतेक यथार्थ चित्र उपस्थित कयल गेल अछि ! एही प्रकारेँ सभ रसक परिपाकमे कवि पूर्ण सफल भेलाह अछि ।

जखन कवि विप्रलम्भ श्रृंगारक वर्णन करऽ लगैत छथि तँ वियोगक कारणेँ अश्रु प्रवाहित होयब स्वाभाविके । मुदा से अश्रु एतऽ स्वाभाविक नहि रहि जाइछ । करुणरसक

भरल स्रोत, यथा–पतित्यक्ता शकुन्तला, पतित्यक्ता सीता तथा चिरविरहिणी राधा इत्यादि सभक अनुकरण एकत्र कऽ साओन–भादवक मेघक व्याजेँ वर्षा करबैत छथि, जाहिसँ करुणरसक धार फुटि पड़ैत अछि ।

'चिर–वियोगिनी'क बाद वीररसक 'समर–भूमि' शीर्षककेँ राखब कविक कतेक सूक्ष्मदर्शिताक बोध करबैत अछि ! वीरत्वक कार्य थिकैक आपत्तिसँ लोककेँ त्राण दियाबए । वीरताक हेतु क्षत्रिय प्रसि□ अछि आ क्षत्रियक कार्य थिकैक त्राण देआयब—

क्षत्रात्किलत्रातयइन्त्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ़ः ।

एतऽ ग्रीष्मक प्रचण्ड उत्तापक कारणेँ लोकसभ आतंकित अछि आ दोसर दिस वियोगिनी नायिका सेहो चिर विरहसँ व्याकुल छथि । दुनूकेँ तँ उ□ारे कएनिहारक प्रयोजन ।

'समर–भूमि'मे सुमनजी द्वारा मेघकेँ ढाल, बिजलोकाकेँ खड्ग तथा जलबिन्दुकेँ ग्रीष्मरूपी अरिदलक अङ्गच्छेदनसँ प्रवाहित रक्तक धारक रूपमे कल्पना करब सर्वथा अभिनव ओ मौलिक बुझना जाइछ ।

कविक हास्यरसक प्रतिपादन तँ आरो बेसी हृदयाह्लादक भेल अछि । ई प्रकृतिक कण–कणमे हास्यरसक संचार कऽ दैत छथि आ ताहूमे विलक्षणता तँ ई अछि जे हास्यक जे विभिन्न छओ भेद— स्मित, हसित, विहसित, अवहसित, अपहसित तथा अतिहसित वा अट□हास, से सभ क्रमिक देखओने छथि । अन्तर एतबे अछि जे छओ प्रकारक हास्यक चित्रण पृथक–पृथक नहि कऽ ओकरा तीन भागमे कयलनि अछि— ज्येष्ठ, मध्यम आ नीच । एतय एक वर्गक अन्तर्गत दू प्रकारक हास्य अबैत अछि, यथा—

'ज्येष्ठानां स्मित हसितेः
मध्यानां विहसितावहसिताश्च ।
नीचानामापहसितं
तथाऽतिहसितंच षड्भेदाः ॥

(1) ज्येष्ठ— स्मित, हसित,

(2) मध्यम— विहसित, अवहसित तथा

(3) नीच— अपहसित, अतिहसित ।

एहि आधारपर कविक निम्नांकित पाँतीक अवलोकन करब अप्रासङ्गिक नहि होयत—

वस्तुक धर्मक आरोप जतए वस्तुपर होअए ओतए पर्यस्तापह्नुति होइत अछि; यथा– ई चन्द्रमा नहि तऽ चन्द्रमा के ? चन्द्रमा तऽ प्रियामुख थीक ।

पर्यस्तापह्नुति यदिच अनत प्रकृत आरोप ।
चान न ई नभ, तखन की ? सुन्दरीक मुख-ओप ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–29

यदि प्रकृतक आरोप कतहु अन्यत्र हो तऽ पर्यस्तापह्नुति होइत अछि; यथा– आकाशमे ई चान नहि, तखन की ? ई सुन्दरीक मुख थीक ।

भ्रान्तापह्नुति

भ्रान्तापह्नुतिरन्यस्य शङ्कायां भ्रान्तिवारणे ।
तापं करोति सोत्कम्पं, ज्वरः किं ? न, सखि ! स्मरः ॥

– कुवलयानन्द, सूत्र–29

आनक शंका निवारणक कारणे भ्रान्तापह्नुति होइत अछि, यथा–तापक संग कम्पन अछि की ज्वर ? नहि सखि ! कामदेव ।

शंका भ्रान्ति निवारणेँ 'भ्रान्त-अपह्नुति' नाम ।
कँपबय तपबय सखि ! विषम ज्वर ? न, विषम शर काम ॥

– अलंकार–मालिका, सूत्र–30

भ्रान्ति निवारणक कारणे भ्रान्तापह्नुति नाम अछि, यथा– हे सखि । कँपबैत तपबैत अछि, के, विषम ज्वर ? नहि, विषम शर (प□चवाण) कामदेव ।

छेकापह्नुति

छेकापह्नुतिरन्यस्य शङ्कातस्तथ्यनिह्नवे ।
प्रजल्पन्मत्पदे लग्नः कान्तः किं ? नहि, नूपुरः ॥

– कुवलयानन्द, सूत्र– 30

आनक शंकाक कारणेँ तथ्यकेँ नुकायब छेकापह्नुति थीक; यथा– ओ शब्द करैत हमर पयरमे लग्न भऽ गेल; के प्रिय ? नहि सखि ! नूपुर ।

परशंका हित तथ्यकेँ झँपिअ अपह्नुति छेक ।
गुनगुनाय पद लाय, की प्रिय ? नहि, नूपुर देख ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–31

7. **अपह्नुति**

शुद्धापह्नुति

शुद्धापह्नुति तिरन्यस्यारोपार्थो धर्मनिह्नवा ।
नायं सुधांशुः, किं तर्हि ? व्योमगङ्गासरोरुहम् ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र–26

जतए अप्रकृतक आरोपक हेतु प्रकृतक निषेध कएल जाए ओतए शुद्धापह्नुति होइत अछि; यथा – ई चन्द्रमा नहि तऽ आओर की ? ई तऽ आकाशगंगाक कमल थीक ।

वस्तु निषेधि अवस्तुकेँ कहब 'अपह्नुति' शुद्ध ।
चान न थिक ई नभ सरक श्वेत सरोज विशुद्ध ॥

– अलङ्कार–मालिका, सूत्र–27

वस्तुक निषेध कए अवस्तुक स्थापना करब शुद्धापह्नुति थीक; यथा – ई चान नहि, आकाशगंगाक कमल थीक ।

हेत्वपह्नुति

स एव युक्तिपूर्वश्चेदुच्यते हेत्वपह्नुतिः ।
नेन्दुस्तपो न निश्यर्कः, सिन्धोरौर्वोऽयमुत्थितः ॥

– कुवलयानन्द, सूत्र–27

शुद्धापह्नुति जतए युक्तिपूर्वक होइत अछि ओतए हेत्वपह्नुति कहबैछ; यथा – ई चान नहि थिकाह कारण जे एहिमे ताप छैक, ई सूर्य नहि थिकाह कारण जे रातिमे सूर्य नहि उगैत छथि; ई तऽ समुद्रक बड़वानल थीक ।

'हेतु-अपह्नुति' प्रस्तुतक खण्डन युक्ति अखण्ड ।
चान न तपय, न तपन निशि, सागर बाडब पिंड ॥

– कुवलयानन्द, सूत्र–28

अप्रस्तुतक अखण्ड युक्तिसँ प्रस्तुतक खण्डन हेत्वपह्नुति थीक; यथा– चानमे ताप नहि छनि, ने सूर्य रातिमे उगैत छथि, ई तऽ समुद्रक अग्नि (बड़वानल) थीक ।

पर्यस्तापह्नुति

अन्यत्र तस्यारोपार्थः पर्यस्तापह्नुतिस्तु सः ।
नायं सुधांशुः, किं तर्हि ? सुधांशुः प्रेयसी मुखम् ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र–28

स्मितमुख वक-पंक्तिएँ व्योम तल
केतकि व्याज हँसए खल खलखल ।
विकच कुमुद दन्तावलीक छल
हास्य-मुखर सर-सरिता कलकल ॥

उक्त पंक्तिमे स्मित हास्यक वर्णन–क्रममे कवि कहैत छथि जे प्रकृतिक आकाश रूपी मुँहसँ हास्य निकलि रहल अछि जे बगुलाक पाँतीसँ दृष्टिगोचर होइछ । पावसमे बगुलाक दृश्य स्वाभाविके । यदि बगुलाक पाँतीसँ एतऽ दाँतक अर्थ लेल जाय तँ ई एकटा दोष कहाओत । कारण, स्मित हास्यमे मुँहपर हास्यक रेखा मात्र रहैत अछि । ने कोनो ध्वनि बहराइत छैक आ ने कोनो दाँतेक दृश्य होइत छैक । तखन रससिद्ध कवि सुमनजी एहन असङ्गत प्रयोग कोना कऽ सकैत छथि ? यदि एहू तरहेँ एकर अर्थ लेल जाय तँ एतेक छोट दोषक कारण एहि विशिष्ट काव्यक गरिमापर कनियो आघात नहि आबऽ दैत छैक ।

एकोहि दोषः गुण सन्निपाते
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः ।

किन्तु, एकर समाधान बड़ सहज ढंगे भऽ जाइत अछि । हमरालोकनि जनैत छी जे कविप्रसिद्धक आधारपर हास्यक स्वरूप उज्ज्वल छैक आ ताही भावनासँ सुमनजी सेहो लिखने होयताह । तेँ इहो एकटा वैशिष्ट्ये भेल ।

पुनः पृथ्वीपर सेहो मध्यम हास्यक सृष्टि होइत अछि । एहि प्रकारक हास्यक हेतु मधुर ध्वनिक सङ्ग–सङ्ग इषत् दन्तदृश्य सेहो आवश्यक आ से एतऽ स्पष्ट अछि–– 'केतकि व्याज हँसै थल खलखल' सँ । क्योला फूलक पराग भाग किछु दृश्य रहैत छैक आ ओहिसँ मधुर ध्वनि 'खलखल' निकालब कविक कल्पनाक कमनीयता थिक ।

एवंप्रकारेँ निम्नकोटिक हास्यक सेहो सजीव चित्रण कयल गेल अछि । एहन हास्यमे दाँत खुलिकऽ बाहर भऽ जाइछ, मुँहसँ तीव्र ध्वनि निकलैत छैक तथा शरीरक विभिन्न अंग काँपऽ लगैत छैक । से सभ उपादान एतऽ उपस्थित अछि । कुमुद प्रस्फुटित अछि जे दन्तावलीक विकसित रूप थिक, 'सर–सरिता'मे 'कलकल' ध्वनि छैक जे ओकर तरङ्गेक कारण थिक––

विकच कुमुद दन्तावलीक छल
हास्य मुखर सर-सरिता कलकल

मिथिलांचलमे धीया–पूताकेँ हँसयबा ले', खेलयबा ले' लोक मुँह झाँपिकऽ आ पुनः उघारिकऽ 'पू–झात' करैत अछि, तकरो चित्रण करब कवि बिसरलाह नहि––

ओढ़ि मेघ-दल कारी कम्बल
झाँपि चन्द्रमुख अनचिन्हारि छल
घनपटसँ रहि-रहि कनडेरिएँ
ताकि हँसए-हँसबए अति चंचल ।

हास्यरसक प्रसंङ्ग उ□ृत उक्त दुनू पाँतीमे प्रयुक्त 'विकच कुमुद' तथा 'चन्द्रमुख'सँ ध्वनित होइछ जे कवि रातुक दृश्यक वर्णन कऽ रहलाह अछि, मुदा 'बकपंक्ति' देखि शंका होबऽ लगैछ । नहि जानि 'बक' रातियोमे उड़ैछ, दृष्टिगोचर होइछ किंवा नहि ?

एहि शंकाक समाधान सेहो कोनो कठिन नहि । कवि साओन-भादवक वर्णन कयलनि अछि- दू मासक एहि अवधिमे कतेक दिन-राति बीतैत अछि । तेँ जतऽ बगुला उपस्थित अछि से दिनुके वर्णन होयत आ चन्द्रमुख रातुक । यैह तर्क सङ्गत बुझना जाइछ ।

साओन-भादवमे जहिना विभिन्न रसक विलक्षण परिपाक भेल अछि तहिना अलंकारक सुन्दर सामंजस्य सेहो । रूपक-अलंकारक तँ कथे नहि जे बेसी ठाम श्लेषे भेटत, जाहि कारणेँ ई सामान्य पाठकक हेतु भागवते थिक—

विद्यावतां भागवते परीक्षा ।

प्रायः सुमनजीक एहने रचनासँ प्रभावित भऽ डॉ० जयकान्त मिश्र लिखैत छथि— A common man may superficially be pleased with his lines but it is only the learned who can fully appreciate his poems.

मुदा, डा० मिश्रकेँ एतबहिसँ सन्तोष नहि भेलनि तँ पुनः लिखैत छथि— His Sanskritised diction, measured rhyms and rhitorical style can never make his poems 'memorable' for the common reader.

डॉक्टर साहेब सुमनजी द्वारा कयल गेल प्रकृतिक मानवीकरणसँ सेहो बेस प्रभावित छथि । पयस्विनी एवं प्रतिपदामे पहाड़केँ एक वृ□, युवक एवं बच्चाक रूपमे आ वृक्षकेँ संन्यासीक रूपमे कयल गेल मानवीकरणक प्रसङ्ग हिनक उक्ति द्रष्टव्य थीक— His personification of a mountain as an old man, a youth and a boy or that of a tree as an asetic; reavel his supreme poitic gifts.

अलंकारोक चमत्कार द्रष्टव्य-

मेघ-व्यूहसँ दिस-दिस घेरल
प्रियतम जकर रिक्त-कर बेधल ।
दिवा-उत्तरा अनुखन दर्शन-
उत्सुक अश्रुमुखी पथ हेरल ॥

(विषादमयी)

4. **उल्लेख**

बहुभिर्बहुधोल्लेखदेकस्योल्लेख इष्यते ।
स्त्रीभिः कामाऽर्थिभिः स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षि सः ॥

-कुवलयानन्द, सूत्र-22

जतए एकहि वस्तुक अनेक व्यक्तिक सम्बन्धमे भिन्न-भिन्न प्रकारेँ वर्णन कएल जाए ओतए उल्लेख अलङ्कार होइत अछि; यथा- (ओहि राजाकेँ) स्त्रीगण कामदेवक रूपमे, याचक कल्पवृक्षक तथा शत्रु सभ कालक रूपमे देखलैन्हि ।

दृष्टिभेदवश एकहुक बहुल कथन उल्लेख ।
याचक सुरतरु, काल रिपु, धनि हुनि मदन परेख ॥

-अलङ्कार-मालिका, सूत्र-22

दृष्टिभेदेँ एक वस्तुक भिन्न-भिन्न प्रकारेँ कथन उल्लेख थिक; यथा - (ओहि राजाकेँ) याचक कल्पवृक्षक रूपमे, शत्रु कालक रूपमे तथा स्त्री कामदेवक रूपमे देखलैन्हि ।

5. **स्मृति**

पङ्कजं पश्यतः कान्तामुखं मे गाहते मनः ॥

-कुवलयानन्द, सूत्र-24

कमलकेँ देखितहि हमरा प्रियामुखक स्मरण भऽ गेल ।

कमल निरखितहिँ मन पड़ल प्रिया-वदन अमलान ॥

-अलङ्कार-मालिका, सूत्र-24

उपर्युक्त दुनू उदाहरण एके थीक ।

6. **भ्रान्ति**

अयं प्रमत्तमधुपस्त्वन्मुखं वेत्ति पङ्कजम् ।

- कुवलयानन्द, सूत्र-25

ई मस्त भ्रमर अहाँकेँ कमल बुझैत अछि ।
मधुप मत्त धनि-वदनकेँ अमल कमल बुझि लैछ ॥

- अलङ्कार-मालिका, सूत्र-25

उपर्युक्त दुनू उदाहरणमे कोनो अन्तर नहि अछि ।

यदि उपमेयकेँ उपमान अथवा उपमानकेँ उपमेय बना देल जाए तऽ प्रतीपालङ्कार होइत अछि, यथा– (हे सुन्दरि !) मुखक गर्व व्यर्थ थीक, चन्द्रमा सेहो ओहने सुन्दर छथि ।

द्वितीय प्रतीप

अन्योपमेयलाभेन वर्ण्यस्यानारदश्च तत् ।
अलं गर्वेण ते वक्त्र ! कान्त्या चन्द्रोऽपि तादृशः ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र–13

जतए अन्य पदार्थ (उपमान)केँ उपमेय बनाकए वर्ण्य विषयक तिरस्कार कएल जाए ओतए द्वितीय प्रतीप होइत अछि, यथा– (हे सुन्दरि !) मुखक गर्व व्यर्थ थीक, चन्द्रमा सेहो ओहने सुन्दर छथि ।

तिरस्कार प्रस्तुतक कय अप्रस्तुतक विधान ।
वदन गरव करु दूर धनि ! चानो रुचिर समान ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–13

जतए प्रस्तुतक (उपमेयक) तिरस्कार कए अप्रस्तुतक (उपमानक) विधान होअए ओतए द्वितीय प्रतीप होइछ; यथा – हे धनि ! मुँहक गर्व नहि करू, चानोक सौन्दर्य ओहने छैन्हि ।

प□चम प्रतीप

प्रतीपमुपमानस्य किमर्थ्यमपि मन्वते ।
दृष्टं चेद्वदनं तस्याः किं पद्मेन किमिन्दुना ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र–16

जतए उपमानक व्यर्थता देखाओल जाए ओतए प□चम प्रतीप होइत अछि; यथा– ओहि नायिकाक मुँह देखि लेलहुँ तऽ कमलसँ कोन मतलब आ चन्द्रमासँ की लाभ ?

अथवा उपमानक कथा कथि लय करिअ सङोर ।
चान कमल केर कथा की ? देखल धनि मुख गोर ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–16

उपमानक सङोर करब व्यर्थ ! धनिक गोर मुँह देखि लेलहुँ तऽ चान आ कमलक गप्पे की ?

उक्त पाँतीमे जँ एक दिस अभिमन्यु–पत्नी उत्तरा अश्रुमुखी भऽ रिक्तहस्त, व्यूहमे घेरल अपन पतिक आगमनक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि तँ दोसर दिस दिवा–नायिका मेघ–व्यूहमे घेरल अपन प्रियतम सूर्यक प्रतीक्षा कऽ रहलि छथि । पुनः –

किंवा मेघ–व्याधसँ बेधित
दिनपति–क्रौंच ज्योति निःशेषित
सहचरीक स्वर करुण चिरन्तन
विरह अनुभवेँ मुनि–मन क्लेशित

(विषादमयी)

उक्त पंक्तिक संदर्भमे आदिकवि वाल्मीकिक श्लोकक स्रोत क्रौंचक निधन आ क्रौंचीक विरह–दशाक स्मरण करऽ पड़त । एकटा व्याधा क्रौंचीक मैथुनरत क्रौंचकेँ मारि देलकैक आ ओकर सहचरी क्रौंचीक विरह–वेदना मुनिक मुँहसँ सहसा एकटा श्लोक बनि निकलि पड़लनि, जे थिक—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शारवतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

कतेक विलक्षण श्लेष ओ रूपक अछि ! मेघकेँ व्याधा, दिनपतिकेँ क्रौंच 'ज्योति–निःशेषित' दुनू अर्थमे निधन । 'सहचरी' एक दिस दिवा तँ दोसर दिस क्रौंची आ ओकर विरह–वेदनासँ एक दिस जँ मुनि व्यथित तँ दोसर दिस कवि स्वयं ।

एहिना अन्यत्रो देखल जा सकैत अछि । एतदतिरिक्त अन्यान्यो अलंकार यथा– उपमा, उत्प्रेक्षा, विभावना, अतिशयोक्ति आदिक प्रयोग सेहो कम नहि अछि ।

सर्वतोभावेन यैह कहल जा सकैछ जे 'साओन–भादव' लघु आकारक रहितहुँ अनेक बृहद् आकारक पोथीसँ बेसी महत्त्व रखैत अछि । एकर एक–एक पंक्ति विश्लेषणात्मक अछि, जे कविकेँ अनन्तकाल धरि विद्वत्समाजमे समादृत बनौने रहत ।

(मिथिला मिहिर, 9 दिसम्बर, 1979)

अलंकार-मालिकापर कुवलयानन्दक प्रभाव

संस्कृत अलङ्कार साहित्यक परम्परामे जे स्थान कुवलयानन्दकार अप्पय दीक्षितक अछि सएह स्थान मैथिलीमे अलङ्कार–मालिकाकार प्रो० सुरेन्द्रझा 'सुमन'क । हिनक अलङ्कार–मालिकापर कुवलयानन्दक तेहन ने प्रभाव पड़ल अछि जे कतहु–कतहु संदेह होमए लगैत अछि जे ई मौलिक रचना थीक वा अनुवाद ?

अलङ्कारक लक्षणमे तऽ विशेष पार्थक्य देखायब सम्भव नहि अछि, किन्तु उदाहरण तऽ पूर्णतः बदलि देल जा सकैत छल । दुनू पोथीक अध्ययन एवं अनुशीलन कयला सन्ताँ स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे उदाहरणो सामान्य परिवर्त्तनक संग आ बहुतो स्थलपर यथावते राखल गेल अछि । तेँ कतहु–कतहु तऽ शंका होमए लगैत अछि जे ई अविकल अनुवादे ने होअए ।

सामान्यतः अलङ्कारक पोथीमे शब्दालङ्कारक वर्णन पहिने भेटैत अछि आ अर्थालङ्कारक बादमे । किन्तु कुवलयानन्दक अनुगमन करैत श्रीसुमनजी उपमे अलङ्कारसँ आरम्भ कएलैन्हि । क्रम–संख्या ओ सूत्र–संख्या धरि कुवलयानन्द एवं अलङ्कार–मालिकाक समाने जकाँ अछि । सूत्र–संख्या 12 सँ 23 धरि कोनो परिवर्तन नहि कएल गेल अछि । कुवलयानन्दमे 24 एवं 25 सूत्रक अन्तर्गत स्मृति, संदेह एवं भ्रान्तिक वर्णन कएल गेल अछि, जकरा श्रीसुमनजी 24, 25 एवं 26 सूत्रक अन्तर्गत क्रमशः रखलन्हि, तेँ एतएसँ अलङ्कार–मालिकामे सूत्रक संख्या एक आगू बढ़ि गेल । पुनः उत्प्रेक्षालङ्कारक परिभाषा कुवलयानन्दमे एकहिटा पद्यमे देल गेल अछि जकरा श्रीसुमनजी दूटा पद्यमे देने छथि, तेँ उत्प्रेक्षालङ्कारसँ सूत्र–संख्या दू आगू भऽ गेल । हम अपन उपर्युक्त कथनक परिपुष्टिमे दुनू पोथीसँ किछु तुलनात्मक उदाहरण प्रस्तुत कए रहलहुँ अछि –

1. अनन्वय

उपमानोपमेयत्वं यदेकस्यैव वस्तुनः ।
इन्दुरिन्दुरिव श्रीमानित्यादौ तदनन्वयः ॥ –कुवलयानन्द, सूत्र–10

जतय एकहि वस्तु उपमान एवं उपमेय दुनू होअए ओतए अनन्वयालङ्कार होइत अछि, यथा चन्द्रमा चन्द्रमे सन शोभावला थिकाह ।

एके विषय 'अनन्वय'क, उपमेये उपमान ।
अहाँ अहीं सन, चान छथि चाने सन श्रीमान् ॥

—अलङ्कार–मालिका, सूत्र–9

अनन्वयालङ्कारमे एके विषय उपमेय तथा उपमान बनि जाइत अछि; यथा– अहाँ अहीँ सन तथा चान चाने सन छथि ।

उपर्युक्त दुनू उदाहरण एके थिक । श्री सुमनजी मात्र 'अहाँ अहीँ सन' कहिकए किछु पार्थक्य देखओलन्हि अछि ।

2. उपमेयोपमा

खमिव जलं जलमिव खं हंस इव चन्द्रश्चन्द्र इव हंसः ।

–कुवलयानन्द, सूत्र–11

आकाश जकाँ जल, जल जकाँ आकाश, हंस जकाँ चन्द्र एवं चन्द्र जकाँ हंस छथि ।

सरवर सन देखिय गगन, सरवर गगन समान ।
राजहंस छथि चान सन, राजहंस सम चान ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–11

एतए 'सरोवर सन आकाश, सरोवर आकाश सन, राजहंस चान सन एवं चान राजहंस सन' कहल गेल छथि जे उपर्युक्त उदाहरणसँ साम्य रखैत अछि ।

3. प्रतीप

प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्वं प्रकल्पनम् ।
त्वल्लोचनसमं पद्मं त्वद्वक्त्र सदृशो विधुः ॥

–कुवलयानन्द, सूत्र –12

जतय प्रसि□ उपमानकेँ उपमेय बना देल जाय ओतय प्रतीपालङ्कार होइत अछि, यथा – (हे सुन्दरि !) कमल अहाँक नेत्र समान तथा चन्द्रमा मुँहक समान छथि ।

थिक 'प्रतीप' विपरीत यदि उपमेये उपमान ।
अहँक नयन सम नलिन पुनि चानो वदन समान ॥

–अलङ्कार–मालिका, सूत्र–12

8. अलंकार-दर्पण : पं. सीताराम झा, भूमिका
9. तत्रैव - पृष्ठ - 1
10. अलंकार-कमलाकर : पं. दामोदर झा, भूमिका
11. प्राचीन गीत : प्रो. रमानाथ झा, भूमिका
12. भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' : आषाढ़क भूमिका
13. माला : सरस कवि ईशनाथ झा, गायकसँ
14. एकादशी : प्रो. हरिमोहन झा, पृष्ठ-89
15. कविता-संग्रह : मैथिली अकादमी, भूमिका, पृष्ठ-5
16. राधा-विरह : कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' : भूमिका
17. झाङ्कार : कविचूड़ामणि 'मधुप', भूमिका, पृष्ठ - 51
18. राधा-विरह : कविचूड़ामणि 'मधुप', पृष्ठ- 70
19. काव्य-मीमांसा : डॉ० जयधारी सिंह, प्रथम भाग, भूमिका, पृष्ठ- क
20. अलङ्कार-मालिका : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', प्रास्ताविक, पृष्ठ-7
21. बाजि उठल मुरली : कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', भूमिका पृ० 4 एवं 13
22. आशा-दिशा : श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृष्ठ-12
23. मेरु-प्रभा : डॉ० श्रीकृष्ण मिश्र - भूमिका, पृष्ठ- 13-14
24. मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास : डॉ० शिवशंकर झा 'कान्त', पृष्ठ-161
25. तत्रैव
26. मैथिली काव्यशास्त्र : डॉ० दिनेश कुमार झा, पृष्ठ-251
27. जिजीविषा : डॉ० जगदीश मिश्र, भूमिका, पृष्ठ - 3

(मिथिला मिहिर, 5 फरवरी 1984)

V

बाजि उठल मुरली

विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, बामन शास्त्री, काश्यप, श्रीठाकुर इत्यादि दशाधिक छद्मनामधारी कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क श्रेष्ठतम रचना 'बाजि उठल मुरली' आइ हमरालोकनिक समक्ष प्रस्तुत अछि । ई कविक सुदीर्घ चिन्तन, प्रौढ़ एवं प्रखर बुि□ तथा गहन अनुभूतिक परिचायक थिक । एतबे नहि, ई एकटा वृहद् आकारक पद्यसंकलन अछि जाहिमे कविक विभिन्न समयक, विभिन्न मनःस्थितिक, विभिन्न परिस्थितिक एवं विभिन्न विषयक पद्य (सभ मिलाकऽ 101) संकलित अछि। एकर आदिमे लिखल चौआलीस पेजक भूमिका सेहो कम महत्त्व नहि रखैछ ।

एहि पुस्तकक गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कयलापर कविक सम्पूर्ण जीवनक स्थिति- राजनीतिक वा सामाजिक, आर्थिक वा मानसिक, सांस्कृतिक वा मनोवैज्ञानिक - सभ किछु चलचित्रवत् आँखिक परदापर आबऽ लगैत अछि । कवि एक दिस जँ राधा-कृष्णक प्रणयालाप सम्बन्धी गीत गाबऽ लगैत छथि तँ दोसर दिस प्रबोधनात्मक गीत सेहो, कतहु जँ □तुवर्णन करऽ लगैत छथि तँ कतहु बेस टोप-टहंकारसँ अभियान गीत उठा लैत छथि, कतहु जँ अपन निश्चल भक्तिहृदयक परिचय दैत छथि तँ कतहु दयनीयताक पाँकमे फसल आर्त्तनाद, कतहु जँ निर्लिप्त एकाकार बुझि पड़ैत छथि तँ कतहु आक्रोशपूर्ण फुफकार छोड़ैत ।

किन्तु सभ किछु होइतो एहि मूल्यवान पोथी (1978क साहित्य अकादमी पुरस्कारप्राप्त) पाँती-पाँती गवाही दैत अछि कविक मातृभाषाक प्रति अनन्य श्र□ा आ प्रेमक । कविक अधिकांश कवितामे मैथिली विरोधी तत्त्वक भर्त्सना कयल गेल अछि, एकरा प्रति कुदृष्टि रखनिहार व्यक्तिक निन्दा कयल गेल अछि आ संगहि मैथिलीकेँ अपन उचित अधिकार दियएबाक हेतु अभियान गीत सेहो गाओल गेल अछि। गीतसभ कविक लेखनीक चमत्कृत शक्तिक द्योतक थिक जे पढ़ि नेनासँ बूढ़ धरि, युवकसँ युवती धरि, विद्वानसँ मूर्ख धरि, सभक रक्त खौलऽ लगैछ आ मोन होइ छै जे सभ क्यो एके बेर

कान्हमे कान्ह जोड़ि आन्दोलनक आगिमे कूदि पड़ी आ अप्पन मायक इज्जति बचाबी । के सपूत अपन मायक चीरक अपहरण होइत देखि सकैछ ?

कवि मिथिला मात्रमे जन्मग्रहण कयनिहारे टाकेँ मैथिल नहि मानैत छथि, अपितु मैथिलीक अधिकार देअओनिहार मिथिलेतर व्यक्तियोकेँ मैथिल मानैत छथि । कवि स्वार्थान्ध मनुक्खकेँ मैथिल नहि मानैत छथि, अपितु परोपकारी सामाजिक व्यक्तिकेँ स्वजन मानैत छथि । हिनक शब्दमे—

भाषा संस्कृतिकेँ जे क्यो प्राणोपम मानय
देश-समाजक हित-क्षतिकेँ जे निज कऽ जानय
अपन देश-कोसक मनुक्ख से, से यश पाओत ।
मैथिलीक अधिकार यु□केँ जे सुढ़िआओत ।[1]

मिथिलांचलक लोक सदासँ राजनीतिमे बड़ पाछू रहल अछि, जकर परिणाम थिक जे आइ हमरालोकनिक घरमे क्यो दोसर प्रवेश करऽ चाहैत अछि । आब लोकक चेतना जगलैक अछि आ लाठी लऽकऽ तैयार होयबाक उपक्रममे अछि (सेहो मन्द गतिएँ) । ई चेतना जँ कम-सँ-कम पचासो वर्ष पूर्व रहितैक तँ मैथिल आ मैथिलीक किछु नवे इतिहास रहितय । गाम-घरक अनपढ़ लोकक कथे कोन जे पढ़लो-लिखल व्यक्तिसभ भाषाक महत्त्व नहि बुझैत छथि । बाट-घाट, कोर्ट-कचहरी, ट्रेन-बस, स्कूल-कालेज आदि सभ स्थलमे यदि लोक मातृभाषामे बजबाक प्रण कऽ लिअय तँ की सरकारक कुर्सी नहि डोलि जयतैक ? मुदा बहुतो गोटे एहन छथि जे माइक भाषा बजबामे लज्जाक बोध करैत छथि । कवि एहन व्यक्तिक प्रति केहन गूढ़ व्यंग्य कयलनि अछि, कने से द्रष्टव्य-

घरक गोसाउनि झँखथि अन्हारे मन्दिर बारब दीप ?
गाम नोत नहि, नोत बेलाही, जड़ि तजि पकड़ब छीप ?
जखन मैथिली सूपक भाँटा भेल संकटापन्न
की राष्ट्रियता ? देश-भक्ति की ? के गौरव-सम्पन्न ?[2]

पुनः कवि मिथिलांचलक लोकक हृदयमे निहित संकुचित भावनापर दृष्टिनिक्षेप करैत कहैत छथि—

देशक सिमानपर जँ झगड़ा बजरै अछि तँ से कथे कोन ?
मिथिला-मैथिल-मैथिलीकेर स्वत्वो पछड़य तँ अचल मोन ।
बाड़ी-खेतक जँ डारि-टाट घुसकाओत क्यो, चलतै सोँटा
सीमित स्वार्थक ई जीवन जग आबाद रहय भाड़क लोटा ॥[3]

संगे एकरा त्याज्य सेहो नहि कहैत छथि । हिनका विचारे अलंकाररहितो काव्य विद्वद्वर्गकेँ ओहिना आकृष्ट करत जेना अलंकारसहित काव्य । अन्तर एतबे जे अलंकारयुक्त काव्य सामान्यो पाठककेँ आनन्दित करत । डा. झा अलंकारकेँ शारीरिक बाह्य आडम्बर तुल्य मानैत छथि आ तेँ ओकर स्वाभाविक गुण— हृदयक कोमलता, लज्जाशीलता, प्रेम, सेवा, दया, समता आदिकेँ ओहिसँ पृथक कऽ दैत छथि ।[26]

'जिजीविषा'क भूमिका लिखैत प्रो. जगदीश मिश्र कहैत छथि जे आइ युग बदलल अछि तेँ प्राचीन परम्पराक कविता विरले लिखल जाइत अछि । हिनका विचारेँ साहित्यिक क्षेत्रमे आमूल परिवर्तन भऽ गेल अछि । एकर माध्यम, शैली, प्रकार, छन्द आदि सभमे परिवर्तन भऽ गेल । अलंकार तऽ चर्चोक विषय नहि बुझयलनि ।[27]

उक्त विवेचनाक आधारपर अलंकारक विषयपर विचार कयनिहार विद्वानक तीन वर्ग भऽ जाइत अछि—

(1) प्रथम वर्ग— एहि वर्गक विद्वानलोकनि अलंकारकेँ अनिवार्य मानलनि अछि । एकर अन्तर्गत महावैयाकरण दीनबन्धु झा, पं. सीताराम झा, पं. रमानाथ झा, पं. दामोदर झा, प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन', कविचूड़ामणि 'मधुप', उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', डा. जयधारी सिंह आदिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

(2) द्वितीय वर्ग— एहि वर्गक विद्वानलोकनि काव्यक हेतु अलंकारकेँ ने आवश्यके मानलनि अछि आ ने एकरा भारे बुझैत छथि । एकर अन्तर्गत डा. दिनेश कुमार झाक नाम उल्लेखनीय अछि ।

(3) तृतीय वर्ग— एहि वर्गक विद्वानलोकनि काव्यक हेतु अलंकारकेँ भारे बुझैत छथि । एकर अन्तर्गत स्वर्गीय भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सरस कवि ईशनाथ झा, प्रो. जगदीश मिश्र आदिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

संदर्भ :

1. काव्यालङ्कार सूत्र-वृत्ति : वामन - 1-2
2. चन्द्रालोक : जयदेव - प्रथम मयूख, श्लोक-8
3. एकावली-परिणय : कविशेखर बदरीनाथ झा - 1-12
4. वर्णरत्नाकर : ज्योतिरीश्वर - द्वितीय कल्लोल, पृष्ठ- 5
5. तत्रैव - पृष्ठ -6
6. तत्रैव -पृष्ठ - 21
7. अलंकार-सागर : महावैयाकरण दीनबन्धु झा, पृष्ठ-4

करबामे बहुमुखी प्रतिभाक प्रयोजन छैक, जे आधुनिक अधिकांश कविक काव्यमे नहि देखल जाइत अछि । किन्तु बाजय के ? संख्या तऽ ओकरे बेसी छैक । कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' एहन कविकेँ 'कपि' कहैत छथि आ हिनक रचनाकेँ बलात्कारसँ भेल गर्भाधानक अवैध सन्तान तुल्य मानैत छथि । एतबे नहि, दोसर स्थलपर कवि पुनः कहैत छथि जे आइ-काल्हि लोक नवकविता दिस झुकल अछि जाहिमे भारतीय मूल तत्त्व कम भेटत । कविहिक शब्दमे— ''एक टा तेसरो प्रकार अछि विकलांग सृष्टिक - जतऽ ने प्रतिभा रहतैक आ ने विद्या-बुि□, ओतऽ बलात् पद-योजनासँ काव्य बनिते छैक । एहन कवि निश्चयतः कपि-कोटिक । एहन कविता बलात्कारसँ भेल गर्भाधानक अवैध सन्तान तुल्य थिक........।

आब नवकविताक बजार गरम छैक । सभ ओही दिस लपकल अछि । एहिमे भारतीय मूल तत्त्व (रस छन्द अलंकार इत्यादि) ताकब तऽ बड़ कम भेटत, बेसी विदेशी माल भारतीय आवरण ।''[21]

पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सेहो अलंकारक मान्यताकेँ स्वीकार करैत छथि । तेँ ने कहि उठैत छथि—

स्वयं शंकराचार्य जतय भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ ।
भेल अनन्वय उपमालंकारे जनिका लगमे चरितार्थ ।।
मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला सन दोसर नहि हो अनुमान ।
शंकर सन शंकरे तथा भारती सदृश नहि विदुषी आन ।।[22]

डॉ० श्रीकृष्ण मिश्रक कथन अछि जे सुकविक द्वारा प्रयुक्त रसानुभूतिजन्य व्यंजन शब्दे अलंकार थिक । एहि हेतु कोनो प्रयासक योजना नहि होइछ । जतऽ अलंकारक योजनाक हेतु कविकेँ प्रयास करऽ पड़ैत छनि ओतऽ डाक्टर साहेबक शब्दमे अलंकार नहि अलंकाराभास थिक ।[23]

डा. शिवशंकर झा 'कान्त' अपन 'मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास'मे स्पष्ट शब्दे कहने छथि जे महाकाव्यमे अलंकारक प्रयोग— शब्दकेँ श्रुतिमधुर-कर्णप्रिय बनयबाक हेतु आकर्षक रूप देबाक हेतु तथा अर्थमे प्रेषणीयता अनबाक हेतु भेल अछि ।[24]

एक दिस कतोक कविलोकनि अलंकारक प्रयोगकेँ एकटा भार मात्र बुझैत छथि, अर्थक्लिष्टताक कारण बुझैत छथि तऽ दोसर दिस कान्तजी एकरा अर्थक स्पष्टीकरणक माध्यम बुझैत छथि । मैथिलीमे महाकाव्य जतेक अछि से आधुनिके काव्यक अन्तर्गत अबैत अछि । एहि सभमे अलंकारक प्रचुर प्रयोग भेल अछि ।[25]

डा. दिनेश कुमार झा काव्यमे अलंकारक अनिवार्यताकेँ नहि स्वीकार करैत छथि,

कविक विचार अत्युच्च कोटिक अछि । हिनकामे स्वार्थमूलक भावनाक गन्धो तक नहि छनि, जकर परिणाम थिक जे प्रखर बुि□, अलौकिक प्रतिभा आ सूक्ष्म दृष्टि रखितहुँ उच्च पदपर आसीन नहि भऽ सकलाह । स्वभावतः कविकेँ ओहि व्यक्ति सभसँ अत्यन्त घृणा छनि जे स्वार्थी छथि, जे अपन गुण वा विद्या दोसराकेँ नहि सिखाबऽ चाहैत छथि आ जे भाषा एवं समाजक लेल संकुचित दृष्टि रखैत छथि, अर्थात् सार्वजनिक बूझि ओकरा त्याग करैत छथि । उदाहरण अवलोकनीय थिक—

लक्ष्मी-सरस्वती छथि हमरा, उपयोग तकर अपने ले' अछि
भाषा वा जातिक हित किछु जँ त्यागब से की हमरे ले' अछि ?
वेदान्ती अनका लग, अपना ले' छी हम बनल बज्र सोंटा
बरु जगक दृष्टियेँ डूबि जाइ, 'आबाद रहय भाङक लोटा' ।।[4]

कवि ओहन जिनगीकेँ धिक्कारैत छथि जे अनकर भरोसे, ककरो कृपापात्र बनल, अइँठ-कूठि चटैत जीबैत अछि । एहन जिनगी तँ कुकरो-बिलाड़ि बिता लैत अछि । तखन मनुक्ख आ पशुमे अन्तर की ? पुनः ओ व्यक्ति जे इन्द्रिय आ पेटक तृप्ति करबामे लागल रहैत अछि, सेहो मनुक्ख नहि थिक । जे मनुक्ख भइयोकऽ अपन देश, जाति, समाज एवं संस्कृतिक उन्नति-अवनतिक ध्यान नहि रखलक से 'ओछ' थिक । जिनगी तँ ओ थिक जे सिंह जकाँ अपन अधिकारक रक्षा करैत जीबी—

जन्म भेल, इन्द्रिय पेटक चिंतामे जीवन बीतल ।
देश-समाजक उन्नति नहि सोचल ओछक से जिनगी ।
कुकुरो-कौआ जीबै अछि फेकल ऐँठे से तिरपित ।
नाङरि डोलबय-कुदकय ओकरो जिनगी थिक की जिनगी ?
स्वत्व गमाबय, परिभव पाबय, मुइल एहन की जिनगी ।।
जे टोनत से डँसले जायत से विषधर थिक जिनगी ।।
जकर धीर-गतियेँ डोलल धरती, काँपय वन-पाँतर ।
धन्य सिंह दन्तार पछारय, तकरे जिनगी जिनगी ।।[5]

अनुमानतः मैथिली-भाषीक संख्या तीन करोड़सँ बढ़ि गेल अछि, किन्तु आइ धरि हमसभ अपना भाषाकेँ उचित स्थान नहि दिया सकलहुँ अछि । ई बात कविक अन्तःकरणकेँ बेधि देलक अछि । ओ कतबो सम्हारैत छथि तथापि मुँहसँ अवाच्य कथा निकलिए जाइत छनि । देखू तँ केहन आक्रोश अछि—

एक सपूतक सिंहक जननी वन विचरय बिनु त्रास
एक चन्द्रमा भरय जगमगी भरि धरती आकाश ।
दस कपूत गदहाक माय ऊघय मोटा दिन-राति
तारागण अगणित असंख्य मिलि मेटय नहि नभ-पाँति ॥
किछु लाखक ओ भाषा सिन्धी किए प्रतिष्ठासीन ?
कोटि-अढ़ाइ कण्ठकेर भाषा किए मैथिली दीन ?
संख्या-बल रहनहि की, यदि नहि ऊर्जस्वल बल-स्वत्व ?
स्वत्व एहन की, जहिसँ नहि हो अर्जित मान-महत्त्व ?[6]

आब कवि ललकारा दऽकऽ रणक्षेत्रमे उतरबाक हेतु वीर युवक लोकनिकेँ प्रेरित करैत छथि । कविक संकेत अछि जे ई शरीर नाशवान अछि । तेँ एखनहि संभव अछि जे लड़िकऽ नाम अमर बना ली । मातृभाषाक हेतु प्राण उत्सर्ग कऽ मातृ□णसँ उ□ण बनी । कवि परीक्षा लैत छथि—

के अछि माइक लाल ? हाथमे जान ककर छै ।
जे उद्यत बलिदान हेतु वरदान तकर छै ॥
अभिमानी के क्रान्ति-दूत अछि ? -चलओ समर से ।
लपकि लड़त जे निर्भय भऽ, जयगान तकर छै ॥
मातृ-भक्त अछि के ? बहराओ घरक सीमासँ ।
कटब मरब वा प्रण ठानओ मैदान तकर छै ॥
महावीर के निज बल चीन्हत, सागर फानत ?
सकल मैथिलक आशिषसँ अभिमान तकर छै ॥[7]

एतबोपर जखन मैथिलक खून सेरायले देखैत छथि तँ पुनः कवि अतीत दिस ध्यानाकृष्ट कऽ जागरण अनबाक प्रयास करैत छथि । लोककेँ बुझबैत छथि जे मानविहीन जीवनसँ मृत्यु सैह श्रेयस्कर थिक, ताहूमे स्वबन्धुक बीच । एकटा श्लोक छैक—

वरं वनं व्याघ्र गजेन्द्र सेवितं
द्रुमालये पक्व फलाम्बु भोजनम् ।
तृणानि शय्या परिधान वल्कलं
न बंधुमध्ये धनहीन जीवनम् ॥

अर्थात्, बाघ आ सिंहसँ सेवित वनमे निवास करब नीक, अन्न-पानि बिना गाछ-बृक्षक फल खाकऽ रहब नीक, वृक्षक छाल पहिरिकऽ गाछपर सुतब नीक, किन्तु बंधुगणक बीचमे धनहीन बनिकऽ रहब नहि नीक थिक । एतय कविक कहबाक तात्पर्य अछि जे 'बंग-असम-उत्कल'क संग मैथिलीक ओहने सम्बन्ध छैक । तँ ई कहि जगबैत छथि—

प्रो. आनन्द मिश्र कविता-संग्रहक भूमिकामे लिखैत छथि जे विद्यापतिक परवर्ती कविलोकनि अलंकार-योजनापर विशेष ध्यान देलनि, जाहिसँ ओ भाषा जनसामान्यक हेतु दुरूह भऽ गेलैक ।

हिनके शब्दमे— 'भाषा परुष होयबाक कारणेँ जनताक हेतु दुरूह भऽ गेलैक, पदयोजना, अलंकार आदि विषयपर विशेष जोर पड़लासँ ओकर चित्रात्मकता साधारण पाठकक हेतु नष्ट भऽ गेलैक ।"[15]

कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' तऽ अलंकारक पूर्ण समर्थक छथि, तेँ ने प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' राधा-विरहक भूमिकामे लिखने छथि— "कोनो पाँती उठाउ यमकक झमक, उत्प्रेक्षाक चमक ओ ध्वनिक गमक चमकैत दमकैत ।"[16]

पुनः सुमनजी मधुपक 'झांकार'क भूमिकामे हिनका उपमा, दृष्टान्त, रूपक ओ उत्प्रेक्षाक अन्वेषणमे सि□हस्त मानैत छथि- "हिनका कवितामे पदलालित्य, अलंकारक छटा ओ भावावेश पूर्ण रूपेँ प्रस्फुटित भेल अछि ।"[17]

अलंकार-सम्पुटित होयबाक संग सामयिकताक पुट हिनक रचनामे पूर्ण भेटैछ । उपमा, दृष्टांत, रूपक आ उत्प्रेक्षाक अन्वेषणमे हिनक दृष्टि ने केवल काव्यप्रचलित कवि-समयपर निर्भर रहैछ, प्रत्युत प्रस्तुत वातावरणहुसँ ग्रहण करैछ जे यत्र-तत्र प्रकट अछि । मधुपजीक परिचय दैत श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सेहो हिनका श्लेष, यमक एवं उत्प्रेक्षालंकारक विशेषाधिकारी कहिकऽ सम्मान कयने छथि । कवि स्वयं कहैत छथि—

सरसा सालंकाराकृति-साधक-कवि-कृति-गुण-गुम्फित रूप
पदन्यास-विन्यास-प्रशंसित सद्वृत्तिक साक्षात् सरूप ।
सर्जन-रत-कवि-रचित-सुवर्ण खचित आर्यादिक वन्दित नाम
भावमयी ध्वनि-मोहित-सहृदय-हृदया कत कविता अभिराम ।[18]

डॉ० जयधारी सिंह तऽ संस्कृत साहित्यक परम्परानुसार सम्पूर्ण काव्यशास्त्रकेँ अलंकारशास्त्रक अन्तर्गत राखि दैत छथि । तदनुसार काव्यशास्त्रक अन्यान्य विषयसभ यथा- काव्यक लक्षण, हेतु, प्रयोजन, शब्दशक्ति, ध्वनि, रस, गुण, दोष इत्यादि एकर अंग बनि जाइत अछि ।[19]

प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' अलंकारकेँ दशाधिक नामसँ अभिहित करैत एकरा सौन्दर्यब□के तत्त्व टा नहि मानैत छथि अपितु अनिवार्य तत्त्व सेहो । एतबे नहि, हिनक तऽ ई गर्वोक्ति छनि जे अलंकारकेँ मुख्य-गौण जे किछु बुझल जाय- सभकेँ एकर महत्त्वकेँ स्वीकार करहि पड़ल छनि ।[20]

वास्तवमे काव्यशास्त्रक परम्पराक निर्वाह करबामे छन्द-अलंकारक नियोजन

स्वर्गीय भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 'आषाढ़'क भूमिकामे लिखैत छथि जे— "आइ-काल्हि नव्य प्रवाह, छन्दक बन्धन उठि गेल । अलंकार भार भऽ गेल । रस त बरबस सर्वत्र व्याप्ते जकाँ । लक्षणा विलक्षणा भेलि, ध्वनि अर्न्तध्वनित । रीति अनरीति, गुण अवगुण । सभठाम स्वच्छन्दताक ताण्डव । सर्वत्र 'स्वान्तः सुखाय'क जय-घोष । कविता सभ तरहेँ विविध 'वाद'ग्रस्त । दू अक्षर शु□ अशु□ लिखबामे जे समर्थ, तनिके कवि बनबाक स्पृहा ।"[12]

सरस कवि ईशनाथ झा एक दिस जँ छन्द अलंकार युक्त सरस रचनासँ विद्वद्वर्गक मोनकेँ आकृष्ट करैत छथि तऽ दोसर दिस जनसामान्यकेँ हेतु कहि उठैत छथि जे आब छन्द-तालक कोनो बन्धन नहि रहल—

छन्द ताल केवल थिक बन्धन
नहि सम्प्रति अछि तकर प्रयोजन
रुचिर पवित्र भावमय गायन
पंचम स्वरसँ गाउ ॥[13]

प्रो. हरिमोहन झा तऽ 'अलंकार-शिक्षा' लिखिकऽ ई सि□ कऽ देलनि जे मिथिलामे अनपढ़ो लोक झगड़ो करैत काल अलंकारेमे गप्प करैत अछि, भनहि ओ स्वयं एकर भेदोपभेदसँ परिचित रहओ वा नहि । प्रो. झा स्त्रीगण लोकनिक झगड़ाक जे दृश्य उपस्थापित कयने छथि से सहृदय वर्गक अन्तःस्थलकेँ अवश्ये स्पर्श करतनि । किछु झगड़ाक झलकी प्रस्तुत करब अप्रासंगिक नहि होयत—

एक जनी बजलीह— **ऐ ! ओल सन कबकब बोल किएक बजै छी ?** -अनुप्रास एवं पूर्णोपमा ।

दोसर जनी— **अहूँक बात तऽ विषे सन होइत अछि ।** -लुप्तोपमा ।

तेसर जनी— **जेहन ओ छथि तेहने अहाँ छी और जेहने अहाँ छी तेहने ओ छथि ।** -उपमेयोपमा ।

चारिम टिपलनि— **अहाँ सन अहीँ छी ।** —अनन्वय ।

अन्य— **बाप रे बाप ! राति दिन गदहकिच्चनि । ई घर मछहट्टोसँ बढ़ि गेल ।** -व्यतिरेक ।

दोसर जनी— **अहाँ लोकनिक मुँहमे लगाम नहि अछि ? जीभ अछि की चरखी ?** -सन्देह ।

अन्य— **एहि घरमे कम्मे के ? लंकामे बहुत छोट से उनचास हाथ ।** -लोकोक्ति ।[14]

जागह वीर जोआन ।
बिनु मानक की प्राण ?
दर्शन साहित्यक गरिमा की ?
शांति-संस्कृतिक ई महिमा की ?
माय मैथिली दीन बन्दिनी बिलखै छथुन मलान ।
बंग-असम-उत्कल अगुअयलह
प्रतिवेशी तोँ अति पछुअयलह
सऽख-सेहन्ता आन छाड़ि झटपट सोचह उत्थान ।
निज गुनि खेत-घराड़ी-बाड़ी
ठुट्ठी भरि ले झगड़ा मारी
साझी सूइ साङि नहि चलइछ नहि भाषा दिस ध्यान ॥[8]

जखन युवक लोकनि आन्दोलन हेतु डेग बढ़ा दैत छथि तँ कवि उपदेश देमय लगैत छथि—

हे अभिमानी !
अर्पित शत-शत अभिनन्दन, उपहृत 'जय'-वाणी ।
घुरि ताकह पाछाँ नहि जे के संग अबै अछि
तोरे सन-सन जन गिरि वनमे पथ बनबै अछि
तोँ सदर्थ मायक सपूत उद्भट अभिमानी ।
जय टा डेग उठाबह आगाँ तोँ पौरुष-व्रत
तय टा टूटत कड़ी मैथिलीकेँ बन्धन गत[9]

कवि मैथिलीपर लादल गेल अन्य भाषासभकेँ अमरलत्तीक संज्ञा देलनि अछि । अमरलत्तीक स्वभाव छैक जे ओकर जड़ि नहि रहैत छैक, मुदा ऊपरे-ऊपर पसरल रहैए । बड़का-बड़का गाछ - जकर जड़ि कतोक तर पहुँचल छैक, झपि जाइत अछि । उद्देश्य ई छनि जे मैथिली सन सफल आ विकसित एवं प्राचीन साहित्य ओही विशाल तरु तुल्य अछि तथा अन्यान्य भाषा आ साहित्य अमरलत्ती जेकाँ । कविक ई व्यंग्य कने देखू-

नोचि फेँकओ, तीरि कातक ओ सुमति जे लोक
ई अमरलत्ती ग्रसै छै- गाछ, दै छै'
जकर जड़ि छै भूमि धयने ललित शाखा पात
तकर सत्ता छाँपि-झाँपि करैछ ई उत्पात
मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ता उचित पद थिक मान
एकर ई अधिकार जे ग्रसतैक, सैह अमान ।[10]

कविक अनुसार ओ व्यक्ति जकरामे आनि आ पानि नहि छैक से बड़द थिक । व्यंग्य हमरे मैथिल समाजपर नहि अछि की ? स्वार्थी, घमण्डी तथा लाभहानिक ज्ञान नहि रखनिहार व्यक्तिपर कविकेँ मनुष्यत्वक शंका होइत छनि । हिनका अनुसारे वैह व्यक्ति मनुष्य थिक जे अपन अधिकार प्राप्त करबामे अपन बुि, बल आ साहस लगबैत अछि । उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

नाथल-बान्हल डाङो सहि विद्रोह करय नहि
जाबी लागल दाउनि बहइछ, हुड़पेटय नहि
की मनुक्ख थिक से से सीमित स्वार्थे देखय ?
संग समाजक मान-प्राण-कल्याण उपेखय ?
से पशु नहि ? उन्नति-अवनति जे किछु नहि बूझय
हानि-लाभ, यश-अपयश की जकरा नहि सूझय
से मनुक्ख थिक जकरा युगबोधक प्रतिभा छै
स्वत्व अर्जनक हेतु जकर संलग्न विभा छै ।[11]

कवि मिथिलाक आस्तिकतावादी नीतिक सेहो भर्त्सना करैत छथि । एतऽ बेसी लोक आस्तिक छथि । ईश्वरक भजन-कीर्त्तनपर विश्वास रखैत छथि । ओ कर्त्तव्यपर विश्वास रखैत छथि– 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी' । तेँ तऽ कवि मुक्तकंठसँ बाजि उठैत छथि—

जागह दैवी संस्कृतिक दूत, बारह अन्तर्ज्योतिक प्रदीप
डाहह पजारि कऽ ऊक आइ, आसुरी वृत्तिकेर जे समीप
संठीसँ सूप डेङौने की, पौरुष उद्यममे श्रीक बास ।[12]

उपर्युक्त उदाहरणक आधारपर स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे प्रस्तुत पोथी 'बाजि उठल मुरली' मैथिलीकेँ अधिकार देअएबाक हेतु क्रान्तिदूत थिक । जे केओ एकहु बेरि एहि पोथीक अवलोकन करताह, हुनक हृदय अवश्ये द्रवित भए जएतनि, मातृभाषा मैथिलीक प्रति कुदृष्टि रखनिहारसँ प्रतिशोध लेबाक भावना उमड़ि जयतनि । ई विषम स्थिति अयबासँ पूर्वहि कवि हमरालोकनिकेँ चेतावनी देलनि । तेँ ने कविकेँ भविष्यद्रष्टा आ समाजस्रष्टा कहल जाइत अछि ! कवि एहने ने होअए जे अपन काव्यक माध्यमसँ श्रोता वा पाठकक हृदयकेँ खीचि लेअए !

'मोहन'जी वस्तुतः एकटा एहन कवि छलाह जनिक मुहसँ निःसृत शब्द-समूह काव्य बनि जाइत छल । ई कूथि-काथिकऽ कविता रचनिहार नहि छलाह आ ने कविगण मध्य प्रतिष्ठित होयबाक उद्दाम लालसे छलनि । तखन तँ स्वाभाविक रूपेँ जे हिनका मुहसँ वाक्य निःसृत होइत गेलनि आ लिपिब भए सकल, सैह कम उपयोगी नहि ।

literary similes and conventions dealing with the various things in the world and ideas which are usually treated in poetry. We have in it either bare lists of terms, or the similes and conventions are set in the frame-work of a number of 'descriptions'.[6]

कविकोकिल विद्यापति तऽ सौन्दर्योपासकक नामसँ विख्याते छथि । हिनक गीतसभमे विलक्षण रूपेँ अलंकारक समावेश भेल अछि । तहिना, हिनक परवर्तीयो कविलोकनिक गीतसभमे अलंकारक चारुता दृष्टिगोचर होइछ । किन्तु ई लोकनि स्वतन्त्र रूपसँ अलंकारपर विचार नहि कयलनि अछि ।

मैथिलीमे स्वतंत्र रूपसँ अलंकारपर विचार कयनिहार आलंकारिक लोकनिमे प्रमुख छथि– महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झा (अलंकार-सागर), पं. रामचन्द्र मिश्र (चन्द्राभरण), पं. सीताराम झा (अलंकार-दर्पण), पं. दामोदर झा (अलंकार-कमलाकर), पं. रमानाथ झा (अलंकार-प्रवेश), प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' (अलंकार-मालिका), डा. जयधारी सिंह (काव्य-मीमांसा), डा. दिनेश कुमार झा (मैथिली काव्यशास्त्र) आदि ।

अलंकार-सागरक भूमिकामे पं रमानाथ झा उक्तिक विच्छित्तिकेँ अलंकार कहैत छथि, संगहि अलंकाररहित काव्यकेँ साधारण वाणी मानैत छथि ।[7]

पं. झाक अनुसार महावैयाकरणजी विशु अलंकारवादी छथि, संगे इहो स्पष्टतः जना दैत छथि जे अलंकार अनुभव भेदेँ भिन्न-भिन्न रूपेँ देखल जा सकैछ । अतः स्पष्ट अछि जे अनुभवरहित व्यक्ति अलंकारकेँ नहि बुझि सकैछ ।

पं. सीताराम झा कविक हेतु छन्द, अलंकार, गुण, दोष आदिक ज्ञान राखब आवश्यक मानलनि अछि ।[8]

हिनका अनुसारेँ सभ जीवक बीच विष्णु भगवानक जे अस्तित्व अछि सैह भूषण मध्य उपमालंकारक—

जगत जीवमे विष्णु छथि, व्याप्त जाहि परकार ।
सब भूषणमे ताहि विधि, अछि उपमालंकार ॥[9]

पं. दामोदर झा तऽ साहित्यक सभ अंगमे प्रधान अलंकारेकेँ मानैत छथि । एहि हेतु ओ अपन तर्क देलनि अछि जे सभसँ प्राचीन थिक वैदिक साहित्य, जाहिमे यत्र-तत्र अलंकारक उदाहरण प्राप्त होइत अछि । तत्पश्चात् ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वाल्मीकि रामायण, पुराणवर्ग इत्यादि सभमे अलंकारक विश्लेषण भेल अछि ।[10]

पं. रमानाथ झा 'प्राचीन गीत'क भूमिका लिखैत काल पुरान गीतक परिप्रेक्ष्यमे अलंकारसँ लादल काव्य मानैत छथि, तेँ ने सरस कवि ईशनाथझाकेँ अलंकार-निर्देशपूर्वक व्याख्या लिखऽ पड़लनि । किन्तु, नवयुगक गीतक परिप्रेक्ष्यमे कहऽ पड़ैत छनि जे भाषा जे संस्कृतबहुल ओ अलंकारसँ लादल छल, आब पूर्ण स्वतन्त्र भऽ गेल ।[11]

जयदेवक उक्त गर्वोक्तिसँ बुझना जाइछ जे अलंकाररहित काव्य भैए नहि सकैत अछि। जे हो, एतबा धरि अवश्य जे संस्कृत साहित्यक प्रथम आचार्य भामहसँ लऽकऽ अद्यावधि प्राय: सभ आचार्य अलंकारकेँ विवेच्य मानलनि अछि ।

मैथिली साहित्यपर संस्कृतक पूर्ण छाप पड़ल छैक । कविशेखर बदरीनाथ झाक विचारे तऽ मैथिलीमे संस्कृतसँ भावसाम्य रहनहिँ ओहिमे चमत्कार आबि सकैत छैक—

जँ जाइन्हि भावक साम्य सूझि,
संस्कृत काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि ।
तँ करथु सुधीजन समाधान,
भाषा-सौन्दर्यक गति न आन ॥[3]

आ चमत्कारे तऽ थिक अलंकार । आदिकालेसँ मैथिलीमे जतेक विद्वान लोकनि भेलाह अछि ओलोकनि स्वतंत्र रूपेँ अलंकारक विवेचन कयने होथि वा नहि, किन्तु एतबा तऽ अवश्य जे अलंकारकेँ स्वीकार कयलनि अछि ।

सर्वप्रथम हमरा लोकनि आद्य उपलब्ध ग्रंथ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे अलंकारक जे गुम्फन देखैत छी ताहिसँ एतबा धरि स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मैथिलीमे कोन प्रकारक अलंकारक विन्यास रहैत अछि । किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

''पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह, श्वेत पंकजकाँ दल भ्रमर बयिसल अइसन आँषि, काजरक कल्लोल अइसन भ□ुह, गथले फूले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षोम्पा, परवाक पल्लव अइसन अधर, कनिअराक कर अइसन नाक, सिन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त, वेतक साट अइसन बाँह, पारिजातक पल्लव अइसन हाथ, छोलङ्ग छोलल अइसन पयोधर....''[4] इत्यादि (उपमालंकार : धर्मलुप्ता लुप्तोपमा)

पुनश्च—

'मुखक शोभा देषि पद्मे जल प्रवेश कएल, आँषिक शोभा देषि हरिण वण गेल, केशक शोभा देषि चमरी पलायन कएल, दाँतक शोभा देषि तालिवे हृदय वीदीर्ण कएल, अधरक शोभा देषि प्रवाल द्वीपान्तर गेल, काँनक शोभा देषि बौ□ ध्यानस्थित भेल, कण्ठक शोभा देषि कम्बु समुद्र प्रवेश कयल, स्तनक शोभा देषि चक्रबाक उच्छन्न भेल ....इत्यादि ।[5]

एहि महान आचार्यक वर्णनचारुता ओ अलंकारक विलक्षण प्रयोगकेँ डाक्टर सुनीति कुमार चटर्जी सेहो स्वीकार कयलनि अछि—

It is a sort of lexicon of vernacular and Sanskrit terms, a repository of

कविप्रतिभा ईश्वर प्रदत्त होइत छैक । जे बनौआ आ अखरकट्टू कवि होइत छथि तनिका हेतु मोहनजी 'कपि' नामकरण अपन उक्त पोथीक बृहद् भूमिकामे कयलनि अछि ।

एतबा धरि अवश्य जे कविवर मोहनजीक रचना वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे क्रान्तिक धधकैत आगिमे आहूतिक काज करत ।

संदर्भ :

1. बाजि उठल मुरली : उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', पृष्ठ संख्या - 80
2. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 82
3. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 20
4. तत्रैव
5. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 54
6. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 55
7. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 62
8. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 64
9. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 67
10. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 81
11. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 80
12. तत्रैव पृष्ठ संख्या - 37

(मिथिला मिहिर, 4 जनवरी 1981)

V

विद्यापतिक काव्यमे शिवभक्ति

मिथिला–महिमण्डलक मन्दार, मैथिली–माकन्द–मधुकर, कविता–कमलिनीक भास्कर, साहित्य–सीमन्तिनीक सिंदूर कविकोकिल विद्यापति एक समन्वयवादी कवि छलाह । हिनका शाक्त, वैष्णव ओ शैव तीनू कहल जा सकैत अछि । अन्तर एतबेक अछि जे राधाकृष्णक सदृश शिवक सौन्दर्यक नग्न वर्णनमे कविक कण्ठ कुण्ठित अछि । प्रायः हुनका कालिदासक कुमारसम्भवक स्मरण भऽ जाइत छनि ।

कविक काव्यमे विष्णु ओ शक्तिक गीतक प्रचुरता रहितो शिवविषयक गीतक अपन पृथक अस्तित्व अछि । हिनक शिवविषयक गीत वा नाचारी मिथिलामे पदावलियोसँ अधिक ख्याति पौलक अछि । पदावली तँ विशेषतः स्त्रीगण समाजमे गाओल जाइत अछि, किन्तु पुरुषमे तँ नाचारिए प्रसि□ अछि । आइयो–काल्हि तीर्थस्थान जयबाक काल झुण्डक झुण्ड लोक एकस्वरसँ शिवक नाचारी गबैत अछि । भक्तिभावनाक दृष्टिकोणसँ शिव–विषयक गीतक जे महत्त्व अछि से राधाकृष्ण सम्बन्धी गीतक नहि ।

कोनो कार्य करबामे लोकक किछु उद्देश्य रहैत छैक । तहिना विद्यापतियोकेँ शिव–साहित्य लिखबामे किछु उद्देश्य छल होयतनि आ ओ उद्देश्य काव्यक चारू प्रयोजनमेसँ अन्तिम छल होयतनि अर्थात् मोक्ष । साहित्य हेतु 'सत्यं–शिवं–सुन्दरम्' होयब आवश्यक छैक । शिवक अर्थ होइत अछि— कल्याण । आ, वास्तवमे शिवमे कल्याण करबाक भावना छनि जकर अनेक उदाहरण अछि । समुद्रसँ विष निकलल । यदि ओकरा शिव नहि पान करितथि तँ संसार जरिकऽ भस्म भऽ जाइत । चन्द्रमाकेँ, जनिका लोक कलंकी कहैत छनि, शिव मस्तकपर धारण कयने छथि । यदि शिव गंगाकेँ अपन मस्तकपर धारण नहि करितथि तँ भगीरथक तपस्या अपूर्ण रहि जैतनि ।

दोसर बात ई जे शिवमे जे 'इ'कार अछि से तन्त्रशास्त्रक अनुसार शक्तिक द्योतक थिक । अर्थात् शिवसँ 'इ'कार हटा लेल जाय तँ शिव शव भऽ जाइत छथि । उदाहरणस्वरूप विद्यापतिक गोसाओनिक गीतक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य थिक—

वासर रैनि शवासन शोभित चरण चन्द्रमणि चूड़ा ।

मैथिलीमे अलंकार विषयक मान्यता

'अलंकार' एक व्यापक शब्द थिक आ ई मिथिलामे कहियासँ प्रयुक्त ओ चर्चित होइत रहल अछि से कहब कठिन । जहिएसँ भाषा अभिव्यक्तिक माध्यम बनल होयत, लोक ओहिमे उक्ति–वैचित्र्य अनने होयत । आ वैह उक्ति–वैचित्र्य वा सौन्दर्य तऽ थिक अलंकार ।

सौन्दर्यमलंकारः[1]

सौन्दर्य ककरा नीक नहि लगैत छैक ? अंगरेजीक सौन्दर्योपासक कवि कीट्सक मान्यता छनि जे सौन्दर्य सतत आनन्द देबऽवला वस्तु थिक । ई सत्य एवं शाश्वत थिक, संगे कल्याणकारक सेहो –

A thing of beauty is joy for ever.

Beauty is truth and truth is beauty; that is all ye know on earth and all ye need to know.

एहि विषयपर भने काव्यशास्त्रीय लोकनिक ध्यान बादमे गेल होइनि, अलंकार नामसँ सेहो कालान्तरे अभिहित भेल हो, किन्तु मिथिलामे आ विशेषतः मैथिलीमे तऽ एकटा अनपढ़ो लोकक मुँहसँ अलंकारक धारा प्रवाहित होइत रहैत छैक । बुढ़ियो मौगीसभकेँ देखैत छिऐक जे बच्चा सभकेँ तेल लगा, जाँति–पीचि, हाथ–पयर मोड़ैत कहैत रहैत छैक – 'ईल सन, कील सन, धोबियाक पाट सन, कुम्हराक चाक सन.... इत्यादि ।' तऽ की एहिमे अलंकार नहि छैक ? एहि तरहेँ अलंकारक स्थापना लोकभाषामे कहियासँ भेल, ई कहब कठिन अछि ।

सर्वप्रथम अलंकारक स्वरूपकेँ स्वीकार कयनिहार संस्कृतेक आचार्यलोकनि छथि, किन्तु हुनकालोकनिमे मतैक्य नहि छनि । तेँ ने आचार्य जयदेव व्यंग्य करैत लिखैत छथि जे अनलंकृत शब्दार्थकेँ काव्य माननिहार आगियोकेँ किएक ने अनुष्ण मानि लैत छथि—

अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती ॥[2]

हरहरा के कारा छारा पहुँची पनियाँ दरारी ।
ढोढ़ जेसन सुगबा गुनरी मँगटीक मनिहारी ॥

शिवजीक जीवन मिथिला ओ मैथिलक जीवनसँ बहुत किछु साम्य रखैत अछि । आइयो-काल्हि उपनयन, विवाह, चतुर्थी, योग आदिक मांगलिक अवसरपर विद्यापतिक शिव-विषयक गीत गाओल जाइछ । मिथिलान्तर्गत डेग-डेगपर शिव-मन्दिर भेटैत अछि । कोनो शुभ अवसरपर महादेवक नचारीसँ गीतक अन्त कयल जाइत अछि । मिथिलावासीक तँ एहि प्रकारक धारणा छैक जे गीतक अन्तमे जँ शिवक नचारी नहि भेल तँ ओ अपूर्ण रहि गेल । एखनो बहुतो स्थलपर भक्तलोकनि शिवलिंगक समक्ष बैसि आत्मविभोर भऽ गाबि उठैत छथि—

कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ
दुखहि जनम भेल दुखहि गमाओल
सुख सपनहुँ नहि भेल, हे............ ॥

कविकोकिल एक नटक रूपमे शिवक की विलक्षण वर्णन कयलनि अछि ! पार्वती महादेवसँ नचबाक हेतु दुराग्रह करैत छथि आ महादेव अनेक ब्याजसँ अपनाकेँ नाचबासँ मुक्त करऽ चाहैत छथि—

आजु नाथ एक व्रत महा सुख लागत हे ।
तोहेँ शिव धरु नटवेश कि डमरु बजावह हे ।

कविकोकिलक शिवभक्ति-वर्णन किछु विशेष महत्त्व रखैत अछि जकर एक गोट महत्त्वपूर्ण कारण अछि हुनक सामीप्य प्राप्ति । देखल वस्तुक वर्णन जेहन विलक्षण होइत छैक ओहन सुनल वस्तुक नहि । तुलसीदासकेँ जेँ कि रामक दर्शन भऽ गेलनि तेँ रामचरितमानसक एतेक महत्त्व । किंवदन्ती अछि जे शिव उगनाक रूपमे विद्यापतिक अनुचर छलाह । जखन विद्यापतिकेँ ई बुझबायोग्य भऽ गेलनि तँ ओकरा गुप्त नहि राखि सकलाह । आ, ताही कारणेँ उगना अन्तर्ध्यान भऽ गेल । कविकोकिल उगनाक खोजमे वने-वने भटकलाह । ओही समयमे कविक कण्ठसँ फूटि पड़ल—

उगना रे मोर कतए गेला
कतए गेलाह शिव किदहु भेला

शिवक प्रति विद्यापतिक भक्तिभावना चर्मोत्कर्षपर पहुँचि गेल अछि जकर प्रमाणस्वरूप आइयो विद्यापतिक चितापर शिवमंदिर देखल जाइत अछि । जनश्रुति अछि जे ई शिवलिंग स्वयं अंकुरित भऽ गेल छैक ।

(मिथिला मिहिर, 24 जून 1979)

V

बहुतो गोटे एकर सामान्य अर्थ एहि तरहेँ कहि देने छथि जे भगवतीक चरण मुर्दाक आसनपर सुशोभित छनि । किन्तु, हमरा विचारेँ ओ मुर्दा नहि, शक्तिरहित शिवक आसन, अर्थात् शवपर विराजमान छथि । कारण, ओहि समयमे सभ देवताक शक्ति ओही देवीमे एकत्र भऽ गेल छलनि आ वास्तवमे भगवतीक मूर्त्तियो तँ ताही रूपक देखल जाइत अछि । तेँ, कवि शिवक वर्णन कऽ शक्तियोकेँ प्रसन्न कऽ लैत छथि ।

पुनः इहो कहब अप्रासंगिक नहि होयत जे शिव अढरणढरण छथि । जहिना गंगा, यमुना ओ त्रिवेणीक संगमस्थल प्रयाग थिक, तहिना ज्ञान, श्र□ा ओ विश्वासक संगमस्थल भक्ति थिक । हिनका प्रसन्न करबाक हेतु लोककेँ ने घोर तपस्या करऽ पड़ैत छैक आ ने अधिक व्यय । आक, धुथूर, भाङसँ हिनक पूजा कऽ दू बेर बाम् बाम् बू....... कहि दियौन, प्रसन्न भऽ जयताह । हित-अनहित विचार शून्यहृदय रहबाक कारणेँ हिनकासँ लोक किछु प्राप्त कऽ सकैत अछि । हिनक सहृदयताक उदाहरण निम्न पदमे देखल जा सकैछ—

आगे माइ जोगिया हमर जगत सुखदायक
दुख ककरहु नहि देल ।
एहि योगियाके भाङ भुलओलक,
धतुर खोआए धन लेल ॥

विद्यापति स्वयं शिवभक्त बनबाक कारण कहैत छथि जे क्यो चन्द्रक पूजा करैत छथि, क्यो विष्णुक पूजा करैत छथि, किन्तु हम भक्तवत्सल बाण महेश्वरेक पूजा कयल । उदाहरणस्वरूप निम्न पंक्ति अवलोकनीय अछि—

आन चान गन हरि कमलासन
सब परिहरि हम देवा ॥
भक्त बछल प्रभु बाण महेसर
जानि कयल तुअ सेवा ॥

ई 'बाण महेश्वर' विसफीसँ उत्तर एक 'भेड़वा' नामक स्थानमे छथि । कवि हिनके उपासक छलाह । एतबे नहि, कवि सर्वदा शिवक पूजा करबाक संकल्प करैत छथि—

लोढ़ब कुसुम तोड़ब बेलपात ।
पुजब सदाशिव गौरीक साथ ॥

ककरो प्रति लोकक आसक्तिक कारण होइत अछि ओकर असामान्य गुण । शिवमे सेहो किछु विभिन्नता, किछु विशिष्टता एवं किछु विचित्रता दृष्टिगोचर होइत अछि । संगहि हिनका अ□नारीश्वर सेहो कहल गेलनि अछि—

जय-जय शंकर जय त्रिपुरारि ।
जय अधपुरुष जयति अधनारि ॥
आध धवल तनु आधा गोरा ।
आध सहज कुच आध कठोरा ॥

कविकोकिलकेँ शिव साहित्यक सर्जन करबाक एक गोट प्रमुख कारण इहो छल जे हिनक पिता गणपति ठाकुर कपिलेश्वर स्थानमे जाकऽ पुत्रक याचना कयने छलथिन, तेँ शिवक प्रति आस्था रहब स्वाभाविके । एकर ज्वलन्त उदाहरण हमरालोकनिक समक्ष पंडित श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'जी छथि । हिनक जन्म हिनक माय आ पितृभगिनी द्वारा गंगासँ याचनाक फलस्वरूप भेल अछि आ ताही कारणेँ कवि गंगास्तुति लिखने छथि ।

कविकोकिल विद्यापति कखनो कऽ एकेश्वरवादी भऽ जाइत छथि आ तखन सभ देवताक प्रतिच्छाया हिनकेमे पबैत छथि, आ तेँ ने आनन्दविभोर भऽ पंचम स्वरसँ गाबि उठैत छथि–

भल हर भल हरि भल तुअ कला ।
खन पित वसन खनहि बघछला ॥
खन पंचानन खन भुज चारि ।
खन शंकर खन देव मुरारि ॥
एक शरीर लेल दुइ बास ।
खन वैकुण्ठ खनहि कैलास ॥

पुनः कवि शिवक अपरूप रूपक वर्णन विलक्षण ढंगेँ कयलनि अछि –

जोगिया एक हमे देखल गे माई ।
अनहद रूप कहलो नहि जाई ॥
पंचवदन तिन नयन विशाला ।
वसन बिहून ओढ़न बघछाला ॥

कवि शिवभक्तिक वर्णनमे चारुताक संग-संग अपन प्रगतिवादी भावनाक सेहो प्रदर्शन कयलनि अछि । हुनकासँ सामान्य कृषक जकाँ खेती कराबऽ चाहैत छथि । हर-बड़दक जोगार सेहो कविये कऽ दैत छथिन तथा पटयबाक हेतु दमकल हुनका संगहि छनि—

खटङ्ग काटि हर हर जे बनाबिअ
तिरसुल तोरि करु फार ।
बसहा धुरंधर हर लए जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धार ॥

किन्तु कविकेँ एतबेसँ सन्तोष नहि भेलनि । ओ पुनः एही भावनाक प्रदर्शन अपन

दोसर गीतमे कयलनि । अन्तर एतबे अछि जे प्रथम गीतमे कवि खेती करबाक लेल शिवकेँ प्रेरित करैत छथि तँ दोसर गीतमे शिवक खेती करबाक प्रक्रियाक वर्णन अछि—

जटा तोड़ि हर लदहा बनओलनि
भङघोटनाक हरीश ।
त्रिशुल छोड़ाय हर फार बनओलनि
हर कयलनि समतूल ॥
एक दिस जोतलनि बसहा बरदकेँ
एक दिस जोतलनि बाघ ।
एक कोला बोलनि आक धुतुर केर
एक कोला बोलनि भाङ ॥

एतदतिरिक्त बूढ़ विवाहक जे प्रथा आजुक समाजमे प्रचलित अछि से पूर्वकालिके रूप थिक । शिव स्वयं बूढ़मे विवाह कयने छलाह आ ओकर प्रतिरोध हिमालयक पत्नी मेना कोन रूपमे कयलथिन, से सर्वविदिते अछि जे विधातासँ घटक ओ वरसँ बरियाती सभकेँ उकटि देलथिन—

हम नहि आजु रहब एहि आङन
जँ बूढ़ होयता जमाय ।
एक तँ बइरि भेल वीध-विधाता
दोसर धिया केर बाप ॥
तेसर बइरि भेल नारद बाभन
जे बूढ़ आनल जमाय ।

पुनः अपन क्रोधकेँ कोन रूपमे परिणत करतीह तकर आभास पूर्वे भेटि जाइछ–

पहिलुक बाजन डामरु तोड़ब
दोसर तोड़ब रुण्डमाल ।
बरद हाँकि बरियाति बैलाएब
धिया लए जाएब पड़ाए ॥

अस्तु, जेना-तेना नारदक बुझओलासँ विवाह करयबाक लेल तैयार भेलीह । परिछनि इत्यादि भेल । मिथिलाक परम्परागत नियम छैक जे विवाहमे वरपक्षसँ कन्याक लेल किछु आभूषण जाइत छैक । एतऽ वरपक्ष की ? सभ तँ बौक-बताह जकाँ बुझि पड़ैत छल तँ गहना के आनत ? मुदा से नहि । व्यवहारमे त्रुटि नहि भेलैक । आभूषण छलैक, पर्याप्त छलैक आ कथीक छलैक से ध्यातव्य थिक—

एहि सभ स्थानमे एखनो किछु-किछु जमीन बाँचल छैक । सभ ठाम मंदिर छैक, मंदिरमे पुजेगरी छैक, जकर खर्च तदस्थानीय भूमिक आयसँ चलैत छैक । एहि सभ स्थानक मध्य पचाढ़ी महत्त्वपूर्ण स्थान अछि, जतऽ साहेबराम दासजी अपन सम्पूर्ण जीवन बितौलनि ओ शरीर त्याग कयलनि । आइयो करीब-करीब सावा सय बीघा जमीन ओहि स्थानक अन्तर्गत छैक जे साधु-महात्मा, असहाय, निर्धन तथा छात्र ओ शरणार्थीक आश्रय बनल अछि ।

सम्प्रति उत्तराधिकारी छथि महंथ **श्री सियाराम दासजी** । ई साहेबराम दाससँ दसम पुरुष अपनाकेँ कहैत छथि, जनिक अवस्था एकावन वर्षक छनि । हिनक गुरु छथिन जगदीश दासजी जे सत्तरि वर्षक अवस्था व्यतीत कऽ रहल छथि तथा साहेबरामसँ नवम पुरुष थिकाह । एहिसँ पूर्वक आठ व्यक्ति ओ साहेबरामक गुरु बलराम दास मिलाकऽ नओ व्यक्तिक समाधि सम्प्रति महन्थक दिव्य ओ विशाल भवनक दक्षिण दिशामे अछि ।

समाधिस्थ व्यक्तिसभक नाम क्रमशः अछि— (1) गुरुवर बलराम दास, (2) साहेबराम दास, (3) रामभद्र दास, (4) भीषम दास, (5) बालमुकुन्द दास, (6) बलदेव दास, (7) वंशी दास, (8) राजेश्वर दास (9) रामकृष्ण दास ।

उपर्युक्त नवो समाधिस्थ व्यक्ति सभमे साहेबराम दास तथा हुनक शिष्य रामभद्र दासक समाधि एकमे तथा अन्यान्य पृथक-पृथक अछि । ओतऽ एकटा छोट सन मकान छैक जाहिमे पुजेगरी रहैत छथि, जे हुनका लोकनिकेँ जल-फूल दैत छथि ओ भोग लगबैत छथि । साहेबरामक चरणपादुका एखनहुँ धरि ओहि समाधिमे सुशोभित भऽ रहल अछि ।

साहेबरामक अर्जित सम्पत्तिपर शिष्यपरम्पराक अधिकार छैक, वंशपरम्पराक नहि । हिनका लोकनिक नामक आगाँ दासक उपाधि छनि जे हिनक मैथिलेतर होयबाक शंका उपस्थित कऽ दैत अछि । एहि सम्बन्धमे वर्त्तमान महंथ श्रीसियाराम दासजीक वक्तव्य अछि जे—

"हमरालोकनि जन्मजात दास नहि छी, अपितु सामान्य मैथिले ब्राह्मण जकाँ झा, मिसर आ ठाकुर रहैत छी । किन्तु गुरुक दीक्षा पड़लाक बाद हमरालोकनि अपनाकेँ भगवानक 'दास' बुझऽ लगैत छिऐक । तेँ हमरा लोकनिक नामक अंतमे 'दास' रहैत अछि ।"

हिनक गप्प हमरा युक्तिसंगत बुझना गेल ।

सम्प्रति जे मुख्य भवन अछि, जाहिमे स्वयं महंथजी रहैत छथि, से बीच कमलाक धारमे । ई कमला साहेबराम दासजीक कहलासँ किछु पूब घसकि गेलीह जे 'सगुणा'

काव्यमे छन्दक अनिवार्यता

सृष्टिक आदिकालसँ मनुष्यकेँ जे भाषाक स्रोत भेटैत छैक, से छन्दोब□ आ तेँ वेदकेँ सेहो छन्दस् कहल गेलैक अछि । वास्तवमे वाद्य-यंत्र जहिना गीतक स्वरकेँ आरो मधुर बना दैत छैक तहिना छन्द सेहो पद्यकाव्यकेँ सुमधुर बना दैत छैक । हमरा विचारेँ तँ छन्द काव्यक हेतु ओहने आवश्यक तत्त्व थिक जेहन रस किंवा अलंकार । नहि जानि, आइ-काल्हि किएक कविलोकनिकेँ छन्दक प्रति एतेक पैघ आक्रोश छनि ? एकरा फुटली आँखिए नहि देखऽ चाहैत छथि । जे छन्दोब□ रचना करैत छथि, से समाजमे उपहासक पात्र बनैत छथि । सरस कवि ईशनाथ झा सेहो एक दिस तँ अपने छन्दोब□ रचना करैत छथि आ दोसर दिस कहैत छथि -

छन्द ताल केवल थिक बन्धन,
नहि सम्प्रति अछि एकर प्रयोजन।
रुचिर पवित्र भावमय गायन
पंचम स्वरसँ गाउ ॥

ई हम मानैत छी जे छन्द कवि किंवा काव्यक हेतु बन्धन थिक आ से रहब आवश्यक । कोनो वस्तुकेँ ठीक ढंगसँ चलयबाक हेतु किछु निश्चित नियमक आवश्यकता होइत छैक । देशकेँ चलयबाक हेतु जँ नियम नहि रहय तँ क्यो ककरो गप्पे नहि मानत, सभ स्वच्छन्द विचरण करत, क्रान्तिमय जीवन बिताओत । कोनो संस्था बिना नियमक नहि चलि सकैत अछि । कोनो मशीनकेँ चलयबाक हेतु सेहो ओकर नियम बुझब आवश्यक । तहिना काव्यक हेतु किछु नियम आवश्यक छैक आ छन्द ताही नियममेसँ एक अछि ।

छन्द थिक अनुशासन— जे कवि लोकनिकेँ काव्यादर्शक पथपर स्थिर कयने रहैछ । छन्द थिक बन्धन— जे कवि लोकनिकेँ नियमक पाशमे बन्हने रहैछ । छन्द थिक

तराजू – जाहिपर कवि लोकनिक काव्य–गरिमाक ज्ञान कयल जाइछ। छन्द थिक कुम्हारक फर्मा– जाहिसँ वर्ण विन्यस्त भऽ जाइछ। छन्द थिक वीणा––जाहिमे माधुर्य ओ रागात्मकता छैक। छन्द थिक सरिता— जकरा सभ नहि पार कऽ सकैछ।

छन्दोब□ रचना करब कठिन अवश्य अछि। कारण जे एकर पदक रचनाक लेल वर्ण, वर्णक गणना, क्रम, मात्रा, मात्राक गणना, यति–गति आदिकेँ ध्यानमे राखऽ पड़ैत छैक। एहन रचना कर्णप्रिय होइछ तथा एहिमे स्थायित्व रहैछ। कारण जे छन्दोब□ रहबाक कारणे एकरा रटि लेब सुगम भऽ जाइछ। हँ, तखन एतबा अवश्य जे एहि लेल प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास तीनू रहब आवश्यके नहि, अनिवार्य अछि। आ, से बूझी तँ नीके। कारण यदि पद्यकाव्यमे छन्दक अनिवार्यताकेँ स्वीकार कयल जाय तँ मात्र विद्वाने व्यक्ति टा एकर रचयिता भऽ सकैत छथि, जाहिसँ दुष्टकाव्यक सर्जनाक कोनो संभावना नहि रहि जायत। बहुतो कविक पदवी छिना जायत। मैथिली साहित्यमे सुकाव्येटाक रचना होयत, कुकाव्यक नहि। बहुतो एहन कवि वा साहित्यकार छथि जे मैथिली साहित्यक अध्ययन कयने बिना वा काव्यशास्त्रक पन्ना उनटौने बिना काव्यक जन्मदाताक रूपमे अपनाकेँ दक्ष बुझैत छथि। यैह कारण थिक जे लोककेँ एहन धारणा बनि गेल छैक जे मैथिलीक पोथी की पढ़ब ? मैथिलीक साहित्यकार तँ क्यो बनि सकैत अछि। किन्तु, जँ 'एकावली–परिणय' ओ 'राधा–विरह' सन पोथी उनटाकऽ आगूमे राखि देल जाइक तँ के ओकर स्वागत नहि करत ?

छन्दोब□ रचनाक लेल सभसँ अनिवार्य तत्त्व थिक 'अभ्यास'। जँ प्रतिभा ओ व्युत्पत्ति रहबो करय आ अभ्यास नहि रहय तँ काव्यरचना करब सामान्य बात नहि। अभ्यास रहलासँ मात्रा आ वर्ण गनबाक प्रयोजन नहि रहि जाइत छैक। कविक हृदयरूपी काव्य–सरितासँ निकलल पदक वर्ण स्वयं छन्दक नियमानुसार विन्यस्त रहैत अछि। अभ्यास की थिक तकर उदाहरण पण्डित भूपनारायण झा छलाह जे बीच सभामे ठाढ़ भऽ छन्दोब□ भाषण करैत छलाह। एतबे नहि, ओ जाहि छन्दमे भाषण आरम्भ करैत छलाह ताही छन्दमे अन्त धरि बजैत रहैत छलाह, कतहु छदान्तर नहि। हुनक ई प्रतिज्ञा द्रष्टव्य थिक—

अमुष्यां सभायां ममैषा प्रतिज्ञा।
भुजङ्गप्रयातं विना नैव वाच्यम्॥

यदि छन्दक महत्त्व नहि रहैत तऽ संस्कृतक पण्डित लोकनि किएक अद्यावधि छन्दोब□ रचना चला रहलाह अछि ? संस्कृत साहित्यमे तँ बिना छन्दक पद्य होयबे नहि करत। संगहि पद्यक लेल चारिटा चरण होयब सेहो आवश्यक अछि—

साहेबराम दासजी अपन स्थान पचाढ़ीसँ तीन बेर जगन्नाथपुरी दण्डप्रणाम दैत गेलाह। किंवदन्ती अछि जे जखन ई तेसर बेर ओतऽ जाइत छलाह तऽ जगन्नाथजी ब्राह्मणक रूपमे हिनक संग भऽ गेलथिन आ हिनका बारम्बार कहैत रहलथिन जे अहाँ घुरि जाउ। जखन ई मानबाक लेल तैयार नहि भेलथिन तऽ ओ कहलथिन जे अहाँ जनिक दर्शन करबाक लेल जाइत छी से हमहीँ छी आ विश्वास करयबाक लेल, अपन रूप देखा देलथिन। तथापि हिनका विश्वास नहि भेलनि। ई कहलथिन जे ई रूप तऽ हमहुँ बना सकैत छी। ई तऽ सन्त–महात्मा लेल सामान्य बात थिकैक आ ओहने रूप बनाकऽ देखा देलथिन। तखन भगवान कहलथिन जे अहाँ अपन हृदयमे हमर एहि रूपकेँ देखि विश्वास करू। एहि तरहेँ हिनका विश्वास कराओल गेलनि।

पचाढ़ी गाम, जतऽ ई रहैत छलाह, हिनक अपन नहि छलनि। ओ समय छल नवाबक। हिनक महत्ता, गुण, वर्णन ओ अलौकिक शक्तिक विषयमे जखन नवाबकेँ पता चललैक तऽ ओकरा विश्वास नहि भेलैक। ओ साहेबराम दासकेँ पकड़ि जहलमे बन्द कऽ देलकनि। मुदा तेँ की ? जहल बन्दे रहैत छल, पहरादार सतर्क रहैत छल, आ ई अपन समयपर जहलसँ निकलि गंगास्नान कऽ अबैत छलाह आ भगवानक पूजा करऽ लगैत छलाह। एहि सम्बन्धमे डॉ० जयकान्त मिश्रक कथन छनि—

He is said to have gone and bathed in the Ganges even when he was put behind the prison bars by the Nabab.

एतबे नहि, जखन नवाबकेँ ई बात बुझबामे अयलैक तऽ ओ एक दिन एकटा बर्त्तनमे मांस भरि, कपड़ासँ झाँपिकऽ हिनका पठौलकनि जे ई फूल थिक। साहेबराम ओहि समयमे पूजापर बैसल छलाह। ओ जखनहि ओकरा उघारलनि, बर्त्तनमे भरल गुलाबक फूल छल।

एतबोसँ जखन नवाबकेँ सन्तोष नहि भेलैक तऽ ओ हिनक पूजाक समयमे घंटा बजयबापर रोक लगा देलकनि। इहो कहलथिन जे आइ नवाबो केर नगाड़ा नहि बजतनि आ संगे ओहि राति नवाबक घरमे बानरसभ जाकऽ अनेक प्रकारक उपद्रव करऽ लगलैक। तखन नवाब हिनका कारावाससँ मुक्त कऽ किछु याचना करबाक लेल कहलकनि तँ ई अस्वीकार कऽ देलथिन। तथापि ओ पाँचटा गाम हिनका देलकनि, जे थिक—

पचाढ़ी (दरभंगा जिलान्तर्गत),
जमैला (मधुबनी जिलाक झंझारपुर लग),
भटौली भगवानपुर (वैशाली जिलाक हाजीपुर लग),
जमला (सीतामढ़ी जिलाक ढेङ स्टेशन लग), तथा
वएसाही (मधुबनी जिलाक बाबूबरही लग)।

साहेबराम दास ओ पचाढ़ी

कोनो कवि वा लेखकक विषयमे सम्यक्रूपेण जानकारी प्राप्त करबाक लेल सर्वप्रथम ओकर समय निर्धारण करब आवश्यक भऽ जाइछ । मिथिलाक कविलोकनिक ई परम्परागत वैशिष्ट्य रहलनि अछि जे ओलोकनि संसार भरिक गप्प लिखताह, किन्तु अपन परिचय ओ समयक सम्बन्धमे किछु नहि लिखताह । ओना तऽ साहेबराम दास सेहो अपन समयक विषयमे किछु नहि लिखलनि अछि, मुदा एतबा धरि स्पष्ट अछि जे ओ महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकालमे रहथि । ओ स्वयं लिखैत छथि—

शिवलोचन मुख शिवसन जखन,
साहेबराम दास तिथि तखन ।
प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश,
शाशित छल ई मिथिला देश ॥

महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकाल 1743 ई०सँ 1761 ई० धरि मानल जाइत अछि । एहि सत्ताइस वर्षक अभ्यन्तर ओ अवश्य छलाह, किन्तु निश्चित समयक निर्धारण एखन धरि सम्भव नहि भऽ सकल अछि ।

साहेबराम दास मैथिल ब्राह्मण कुलोद्भूत कुसुमौल ग्रामक निवासी छलाह । हिनक वंशज एखनो ओतऽ छथिन । ओना छलाह ई पुत्रहीन । हिनक एकमात्र पुत्र प्रीतमक निधन अल्पावस्थहिमे भऽ गेलनि । जखन ई अत्यधिक कानऽ-कलपऽ लगलाह तऽ ओ उठिकऽ कहलकनि जे अहाँ किएक कनैत छी ? जतबाक प्रेम अहाँकेँ हमर एहि हाड़-मांसक शरीरसँ अछि से यदि भगवानमे रहय तऽ अहाँक भविष्य उज्ज्वल भऽ जायत । एहि शब्दक संग हुनका वैराग्य उत्पन्न भऽ गेलनि आ मात्र ईश्वरेक भजन-कीर्तन करब अपन जीवनक उद्देश्य बनओलनि । आ ओहिमे तेहन सि□ प्राप्त कयलनि जे हिनकासँ किछु असम्भव नहि रहलनि ।

पद्यं चतुष्पदी, तच्च
बृत्तं जातिरिति द्विधा ।
बृत्तमक्षर संख्यातं
जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥

—छन्दोम□जरी, प्रथम स्तवक, श्लोक-4

मैथिलीक आधुनिक कवि, अतुकान्त कविताक रचयितालोकनि तँ कविताक चरण वा पदकेँ तोड़िकऽ चारपर फेकि देलनि आ अपनाकेँ आविष्कर्त्ता वा अनुसंधाता बुझैत छथि जे हम मैथिली साहित्यकेँ नव चीज देलिऐक अछि । एहिमे अपन-अपन बहादुरी बुझैत छथि, कमजोरी नहि । जँ मुक्तके कविताकेँ श्रेष्ठ मानल जाय ओ प्रतिष्ठा देल जाय तँ विद्यापति, गोविन्ददास ओ चन्दाझा लोकनि माँटिमे मिलि जयताह ।

आइ-काल्हि किछु कविलोकनिक कथन छनि जे जँ छन्दक बंधनमे काव्यकेँ बान्हऽ लागब तँ हृदयस्थित भाव-सरिताक तरंग ओहि बान्हकेँ तोड़िकऽ बहि जायत । जँ सैह तँ मैथिली साहित्यक मनीषी कवि लोकनिक भाव अस्फुटिते रहितनि । मुदा की एतऽ भावक संकीर्णता अछि ?

'सुनि विधि सुत वाणी शु□ वाणी समाने ।
चलिल मचलि गोपी पा' जेना त्यक्त प्राणे ॥
मुनि पदपर माथा टेकि सद्यःसनाथा ।
किछु छन पहिने जे वेदनासँ अनाथा ॥

—(मालनी छन्द) राधा-विरह, सर्ग-2, पद्य-46

संस्कृत साहित्यमे तँ अद्यावधि छन्दसँ मुक्त रचना नहि दृष्टिगोचर भेल अछि, तेँ एकर स्थायित्वमे क्यो शंका उपस्थित नहि कऽ सकैत अछि । संस्कृत साहित्यक परम्परागत नियमक पालनार्थ जँ आदिकवि वाल्मीकियोक मुहसँ अनायासे एकटा श्लोक निकलि गेलनि तँ ओहो छन्दोब□ छल—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौं□चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥

—(अनुष्टुप् छन्द) श्रीमद्वाल्मीकि रामायण -बालकाण्ड

पद्यकाव्यक लेल तँ छन्द ओहने अनिवार्य तत्त्व थिक जेहन रस किंवा अलंकार । जँ अलंकारविहीन काव्य विधवा सदृश बुझि पडैछ तँ छन्दविहीन काव्य वेश्या सदृश । कारण, छन्दकेँ बन्धन तँ सभ मानैत छथि । तखन जँ बन्धन रहित युवतीक अलंकरण होइक तँ ओ की भऽ सकैछ ? प्राच्य विद्वानक मतानुसार महाकाव्यक लेल छन्द एक

अनिवार्य तत्त्व थिक । तैँ ने हुनकालोकनिक कथन छनि जे महाकाव्यमे एक सर्गमे एक्के छन्दक प्रयोग होअय आ अंतमे छन्दान्तर । आचार्य दण्डीक कथन अछि जे-

सर्गेरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ।
सर्वत्रभिन्नवृत्तान्तैः रूपेतंलोकर□जनम् ॥

—दण्डी, काव्यादर्श, प्रथम परिच्छेद

आचार्य विश्वनाथ सेहो दण्डीक छन्दसम्बन्धी लक्षणकेँ स्वीकार करैत कहलनि जे एक सर्गमे अनेको छन्दक प्रयोग भऽ सकैत अछि –

एक वृत्तमयैः पद्येरवसानेन्यवृत्तकैः ।
नाना वृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चनदृश्यते ॥

विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, षष्ठ परिच्छेद ।

मैथिली साहित्यक ई सौभाग्य रहलैक अछि जे एकर बेसी महाकाव्यक रचना संस्कृतक छत्रच्छायामे भेलैक अछि आ संस्कृतेक विद्वान द्वारा । तेँ छन्दक बन्धन एखन धरि दृढ़ अछि । हँ, एकर किछु अपवाद सेहो अछि ।

एतदतिरिक्त खण्डकाव्य ओ फुटकर कविताक रचयितालोकनिमे सेहो किछु छथि जे छन्दोब□ रचना करैत छथि, मुदा ओ समुद्रमे जलबिन्दुए सदृश छथि ।

(मिथिला मिहिर, 11 फरवरी 1979)

V

नगरी देनिहार महादेवक घरमे भोजनोपर आफत, कतेक विरोधाभास सन लगइए—

अरजि-अरजि भोला अनका के दै छी,
अपना किछु नै देखै छी यौ ।
जहियासँ शिव तोरा घर अयलौँ,
दुख छोड़ि सुख ने करै छी यौ ॥
अरजि-अरजि भोला ....

2) **संस्कार गीत**- मिथिलामे बच्चाक जन्मसँ विवाह पर्यन्त अनेक प्रकारक संस्कार होइत अछि– छठिहार, मुण्डन, उपनयन (परिछनि, भीख, जूटिकाबन्धन), विवाह इत्यादि । एहि अवसरपर ललना लोकनि गीत गबैत छथि । एहि प्रकारक गीत घर-घरमे सुनबाक अवसर भेटैत अछि ।

3) **□तुगीत**- □तुगीत सेहो मिथिलामे खूब प्रचलित अछि । एकर अन्तर्गत मलार, फाउग, वसन्त, चैतावर, तिनमासा, चौमासा, बरहमासा इत्यादि अबैत अछि । चैत लगिचायल अछि । बरहमासाक एहि पंक्तिक अवलोकन कयल जाय –

चैत हे सखि फुललि बेली विकसु कुंज नेवार यौ,
तेजि मोहन गेल मधुपुर हमर कोन अपराध यौ ।

4) **व्यवहार गीत**- मिथिलामे व्यवहार गीतक प्रचलन खूब अछि । प्रत्येक शुभ अवसरपर गीत गयबाक परिपाटी अछि । एकर अन्तर्गत ईश्वरविषयक गीत सेहो रहैत अछि एवं सोहर, डहकन, समदाउन, कोहवर, उचिती, जोग इत्यादि सेहो । सोहरक एक गोट उदाहरण देखल जाय—

पानहि सन धनि पातर फूल सन सुन्दर रे ।
ललना तिल भरि अन नहि खाथि वेदन कोना सहती रे ॥

5) **श्रमसंबंधी गीत**- मिथिलामे किछु एहनो लोकसंगीत अछि जे श्रमसम्बन्धी गीत थिक, यथा— लगनी, लेपनी, चरखागीत इत्यादि । एकर प्रचलन कम भेल जा रहल अछि ।

6) **विविध गीत**- उपर्युक्त कोटिक गीतक अतिरिक्त आओरो कतोक गीत सभ अछि जे एहि वर्गमे राखल जा सकैछ; यथा– पराती, झूला, तन्त्र-मन्त्र, उदासी, आरती इत्यादि ।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे मिथिलामे लोकसंगीतक विविधता ओ लोकप्रियताक कारण मिथिलाक संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार, धर्म-कर्म, विधि-व्यवहार इत्यादि सुरक्षित अछि ।

(ललित स्मारिका- 2004)

V

मिथिलाक लोकसंगीतक विभाजन एहि तरहेँ कयल जा सकैछ—

1) ईश्वरविषयक गीत 2) संस्कारगीत 3) □तुगीत

4) व्यवहार गीत 5) श्रमसंबंधी गीत 6) विविध गीत ।

1) ईश्वरविषयक गीत— मिथिलामे ईश्वरविषयक गीतक विविधता अछि । एहन गीतक संख्या सेहो पर्याप्त अछि, कारण जे ई सभ अवसरपर गाओल जाइत अछि । एतए सब देवी–देवताक उपासक छथि, तेँ कविकोकिल विद्यापति सेहो कखनहुँ शाक्त कखनहुँ वैष्णव आ कखनहुँ शैव बनि जाइत छलाह । परिणामतः लोकगीतमे विविध देवी–देवताक विशद चित्रण भेटैत अछि— भगवान, भगवती, महादेव, शीतला, विषहरा, गंगा, कमला इत्यादिक । किछु देवी–देवताक गीतक उदाहरण प्रस्तुत अछि—

क) भगवती गीत- मिथिलामे भगवती बहुत छथि, किन्तु एतए एकेटा उदाहरण देल जा रहल अछि—

सब के सुधि अहाँ लै छी माता, हमरा किए बिसरै छी हे ।
सगर रैनि हम ठाढ़ रहै छी, दरसन बिनु तरसै छी हे ॥
थिकहुँ पुत्र अहीकेँ अम्बा, ई तऽ अहाँ जनै छी हे ।
सगर रैनि हम ठाढ़ रहै छी, दरसन बिनु तरसै छी हे ॥

ख) भगवानक गीत- मिथिलामे सूर्य, चन्द्र, अग्नि, इन्द्र, राम, कृष्ण फराक–फराक भगवान छथि, किन्तु एतए समेकित रूपसँ एकटा भगवानक गीतक किछु पंक्ति अवलोकनीय अछि । फगुआ लगिचायल अछि । वसन्ती हवा चलि रहल अछि । लोक मदमस्त भए झूमि रहल अछि । भगवान सेहो प्रेमरंगमे सरावोर भए गेल छथि आ भक्त आत्मविभोर भऽ गाबि उठैत अछि—

कतहु भीजैत हेता भगवान प्रेमके बुनियामे ।
किनका के भीजलै रामा लालियो पगड़िया;
किनका के भीजलै पटोर ?
प्रेम के बुनिया मे ॥
रामचन्द्र के भीजलै रामा लालियो पगड़िया ।
सीता के भीजलै पटोर ।
प्रेम के बुनिया मे ।

ग) महादेवक गीत— मिथिलामे सबसँ बेसी महादेवक मन्दिर भेटत, कारण जे भोलाबाबा अढरनढरन छथि । भक्तक बेसी परीक्षा नहि लैत छथि । स्वल्पे समयमे तुष्ट । **कलौ चण्डी महेश्वरः** चरितार्थ भए जाइत अछि । सम्पूर्ण जगतकेँ सम्पत्ति देनिहार, रावणकेँ सोनाक

मिथिलाभाषा रामायणमे छन्द-विन्यास

मिथिलाभाषा रामायणक अध्ययन एवं अवलोकनक क्रममे जे तत्त्व हमरा लोकनिकेँ सर्वाधिक आकृष्ट करैत अछि से थिक कवीश्वरक छन्द–विन्यास । यद्यपि विभिन्न प्रकारक छन्दक प्रयोग एकहिटा पोथीमे अन्यत्रो देखबामे अबैत अछि किन्तु एहि रामायणमे प्रत्येक छन्दक नाम ओहि छन्दक ऊपरमे देल गेल अछि, जाहिसँ छन्दक विविधता सर्वसाधारणो लोकक हेतु स्पष्ट भए जाइत अछि । हँ, एतबा तँ निर्विवाद रूपेँ कहल जा सकैत अछि जे जतेक प्रकारक छन्दक प्रयोग मिथिलाभाषा रामायणमे भेल अछि से अद्यपर्यन्त कोनहु एकटा ग्रंथमे भेटब असंभव ।

कवीश्वरक मिथिलाभाषा रामायणमे छन्द–विन्यासपर चर्चा करबासँ पूर्व हम छन्दक विषयमे अति संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करए चाहब । वस्तुतः छन्दक उद्‌भावक शेषनाग वा पिंगल मुनि भेल छथि ।[1] छन्द पद्य साहित्यक प्राण थिक । छान्दहिक कारण पद्य साहित्य गद्यसँ भिन्न अछि, एकरामे गेयधर्मिता छैक, यति छैक, गति छैक, वर्ण आ मात्राक विन्यास छैक, गण आ लघु–गुरुक समास छैक । छन्द एकटा शब्द थिक जे सृष्टिक आदि कालहिसँ चर्चित–व्यवहृत अछि । हमरा लोकनिक आद्य उपलब्ध ग्रंथ थिक वेद, जकरा भाषाक स्रोत मानल जाइत अछि आ ओकरे अपर नाम थिक छन्दस् । वेदक □चा सभमे वर्ण आ मात्रा विन्यस्त छैक, ओकर स्वरक विधान छैक, ओकर गायन करबाक अपन ढंग छैक आ ओ सभ किछु छन्दहिक कारण अछि । आब प्रश्न उठैत अछि जे पहिने छन्द अथवा भाषा, पहिने भाषा अथवा व्याकरण, पहिने काव्य अथवा काव्यशा□ ?

एतबा तऽ निर्विवाद जे पहिने भाषा आ तत्पश्चाते व्याकरण बनल होएत – ओकरा नियमक पाशमे बान्हि अनुशासित रखबाक हेतु, ओकर स्वरूपकेँ स्थिर करबाक हेतु । पहिने काव्य आ तत्पश्चात् काव्यशास्त्र बनल होएत– काव्यक उत्कृष्टताक समीक्षा करबाक हेतु, किन्तु छन्दक प्रसंग एहन गप्प कहब कठिन होएत । भए सकैत अछि जे भाषासँ

पूर्वहि लोकक हृदयमे कोनो स्वर गुंजित भेल हो आ तकर बाद भाषाक जन्म भेल होएत। एहि प्रसंग पं० गोविन्द झाक मन्तव्य हमरा समीचीन बुझि पड़ैत अछि –

''जखन कोनहुँ शिशुकेँ आनन्दक उद्रेकमे आबि अनर्थक पदावलीसँ गुम्फित छन्दोब□ फकड़ा पढ़ैत देखैत छी तँ कल्पना जागि उठैत अछि जे सृष्टिक प्रारम्भमे, जहिया मानव भाषाक वरदान नहि पओने छल होएत, जखन-जखन मानव-शिशु भावक आवेशमे अबैत छल होएत, तखन-तखन एहिना अर्थ-शृंखलाहीन छन्दोब□ पदावली गाबए लगैत छल होएत। अतः छन्दक सृष्टिकेँ यदि भाषाक सृष्टिअहुसँ प्राचीन कही तँ असंभव नहि।''[2]

''छन्द-विन्यास पद्य काव्यक शोभा थिक आ पद्यक हेतु शास्त्रमे चारिटा चरण रहब आवश्यक कहल गेल अछि- पद्यं चतुस्पदी.........''[3]

छन्दयुक्त पद्यक प्रधान गुण थिक गेयधर्मिता, राग-ताल-लयाश्रित रहब आ एहि हेतु मात्रा आ वर्ण विन्यस्त रहब अनिवार्य अछि। मात्रा आ वर्णक अनियमितता रहने ओकरा कोनहुँ तरहेँ सस्वर नहि पढ़ल जा सकैत अछि। पं० गोविन्द झा छन्दकेँ परिभाषित करैत कहैत छथि –

''छन्द से पद-समुदाय थिक जाहिमे लय ओ तालक अनुकूल वर्ण-विन्यास हो। छन्दोब□ पद-समुदाय पद्य कहबैत अछि।''[4]

युगेश्वर झा सेहो अपन 'मैथिली व्याकरण आओर रचना'मे छन्दकेँ पद्य अथवा कविता कहि उठलाह–

''छन्द थिक ओ काव्यात्मक रचना जे मात्रा अथवा वर्णक संख्या, क्रम, यति, गति तथा नियमक आधारपर कएल जाइछ। अतएव छन्द थिक पद्य अर्थात् कविता।''[5]

उपर्युक्त परिभाषासँ स्पष्टतः प्रतीत होइत अछि जे युगेश्वर झा संस्कृत काव्य-परम्परासँ पूर्णतः प्रभावित छथि। हिनका द्वारा छन्दकेँ पद्य आ कविताक रूपमे प्रतिष्ठित कएने तथाकथित नव कविता कविता कोटिसँ वहिर्गत सन बुझना जाइत अछि जे वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे हास्यास्पदे सन मानल जाएत, कारण जे नवकविता आब साहित्य अकादेमी सन पुरस्कारसँ सेहो सम्मानित भए उच्च सिंहासनकेँ प्राप्त कए चुकल अछि। एम्हर दू-तीन दशकसँ लोक एहि दिस तेना ने लपकल अछि जे एकर मार्ग ओहिना प्रशस्त भए गेल जेना बाबाधामक कमरथुआक भीड़ कोनो जंगलकेँ चिरने आगू बढ़ैत अछि आ वैह मुख्य मार्ग बनि जाइत छैक।

एतबा तऽ अवश्य जे छन्द कविलोकनिक स्वतंत्रताकेँ समाप्त कए दैत अछि तथा काव्यकेँ स्थिर रूप प्रदान करबामे महत्त्वपूर्ण घटकक कार्य करैत अछि। एहि प्रसंग हम अपन धारणा लगभग तीन दशक पूर्वहि स्पष्ट कए चुकल छी–

संगीतक प्रभाव ऐहिलौकिक जन्तुएटापर नहि पड़ैत अछि, अपितु ईश्वरो संगीतक वशीभूत छथि। भगवान विष्णुक नारदक प्रति उक्ति कतेक आकर्षक अछि–

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदयेन च।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

याज्ञवल्क्य तऽ संगीतकेँ पुरुषार्थचतुष्टयक परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्तिक साधन मानैत छथि–

वीणावादन तत्वज्ञः श्रुतिजाति विशारदः।
तालज्ञाचा प्रयासेन मोक्षमार्गं प्रयच्छति॥

मिथिलामे लोकसंगीतक परम्परा अत्यन्त प्राचीन अछि। एहिमे मिथिलाक संस्कृति, रीति-रेवाज, शुचि-संस्कार, आचार-व्यवहार इत्यादि अक्षुण्ण भेटत, कारण जे शास्त्रीय संगीत जकाँ लोकसंगीत नियमक पाशमे नहि बान्हल अछि। एकर प्रशिक्षण कोनो पटु आचार्यसँ नहि लेमय पड़ैत छैक, अपितु सहज भावसँ प्रबु□-गमार, युवक-युवती, बाल-बृ□ सभ अपन पूर्वजसँ स्वतः ग्रहण करैत छथि। एकर भाषा-भाव, विषय-विन्यास सभ किछु स्पष्ट रहैत छैक। जेना नामहिसँ स्पष्ट अछि 'लोकगीत' अर्थात् ई सामान्य मनुष्यक बोधगम्य अछि। एतबे नहि, लोकसंगीतक भिन्न-भिन्न गीतकार एवं स्वरकार नहि होइत छथि। शास्त्रीय संगीतकेँ बेरि-बेरि अभ्यासक प्रयोजन होइत छैक किन्तु लोकसंगीतकेँ सिखबाक आवश्यकता नहि, ई सहजहिँ लोककंठसँ सहजतापूर्वक ग्रहण कयल जा सकैछ।

मिथिलामे लोक आ वेदक खूब व्याख्या चलैत रहल अछि। वेदसम्मत भेल वैदिक आ लोकसम्मत लौकिक। वैदिक विधान नियमक पाशमे जकड़ल, विद्वानेटाक बु□गोचर होइछ, किन्तु लौकिक विधान सर्वजन सुलभ रहैत अछि। लोकक मान्यता अछि जे यदि वैदिक रूपेँ शु□ो रहए, किन्तु लोकविरु□ होअए तऽ ने ओ आदरणीय भेल आ ने आचरणीय– **यद्यपि शु□ं लोकविरु□ं नादरणीयं नाचरणीयम्॥**

महाभारतमे सेहो लोकविधि आ वेदविधिमे विरोध देखाओल गेल अछि –

वेदाच्च वैदिकाः शब्दाः सि□ा लोकाश्च लौकिकाः॥

अतः लोकभाषा वा लोकसाहित्य अथवा लोकसंगीत- सभ किछु अधिक लोकप्रिय होइत अछि।

मिथिलाक लोकसंगीत ततेक ने व्यापक अछि जे मनुष्यक जन्मसँ मृत्यु पर्यन्तक प्रत्येक अवसरक अनेकानेक गीत तऽ अछिए संगहि प्रकृतिपरक, ईश्वरविषयक गीतक भण्डार कतोक युवक-युवती आ मुग्धा-प्रौढ़ाक कंठमे एखनहुँ धरि सुरक्षित होएत जखन कि आब अधिकांश गीत लिपिब□ भए चुकल अछि। एहि दिशामे श्रीमती अणिमा सिंहक प्रयास सराहनीय अछि जे एक संग सभ अवसरक गीतक संकलन लोकक समक्षमे राखि देलनि, जे साहित्य एकेडमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित अछि।

मिथिलाक लोकसंगीत

मानव जीवनमे संगीतक बड़ विशिष्ट स्थान अछि । विद्वान लोकनि तऽ साहित्य संगीत आ कलासँ विहीन मानवकेँ मानव नहि, पशु कहैत छथि –

सहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन् अपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

संगीत ककरा नहि नीक लगैछ ? एहिमे स्वर, ताल, लय, यति, झंकार, मादकता एवं सम्मोहन छैक आ सबसँ बेसी छैक मात्रा आ वर्णक विन्यास, जे कर्णप्रिय बनबैत छैक । हमरालोकनिक आद्य उपलब्ध ग्रन्थ थिक 'वेद' जकर गायन तऽ प्रसि□ अछिए । बैजू बाबराक संबंधमे कहल गेल अछि जे ओ अपन गायनसँ मृगकेँ आकृष्ट कए लैत छलाह । कविकोकिल विद्यापति हजारक संख्यामे गीत लिखि अमरत्वकेँ प्राप्त कए लेलनि । संस्कृतक विद्वान रहितहुँ कविवर लोकक मोनकेँ चिन्हलनि, बुझलनि, गुनलनि आ तदनुसार लोकभाषामे रचना कयलनि, जकरा ओ देसिल वयना कहलनि–

सक्कअ वाणी बहुअण भावइ । पॉउअ रसको मम्म न पाबइ ॥

देसिल वयना सबजन मिट्ठा । तेँ तैसन जम्पउँ अबहट्ठा ॥

ओ पुरुषपरीक्षाक 'गीतविद्य' शीर्षकमे एकटा एहन संगीतज्ञक वर्णन कयलनि अछि जे मृगक कोन कथा, तीन दिन भूखलि गायकेँ भरल नादि सानी छोड़ि गीत सुनबा ले' विवश कए देलनि । अतः संगीतमे एहन आकर्षण छैक जे मनुष्येटाकेँ नहि अपितु सभ जीवकेँ आत्मविभोर कए दैत अछि ।

मैथिल डाकक वचन तऽ लोकसंगीतब□ रहलाक कारण अनपढ़ो लोककेँ ज्योतिषी बनाए देलक । एहनहुँ गामघरमे अंगूठा बोरनिहार बृ□ लोकनिक मुहसँ सुनबनि–

केरा रोपी सोचि बिचारि । सीमी भादो भदवा वारि ॥

उत्तर छिक्का मान सम्मान । सर्व सिरि□ लै कोन ईशान ॥

पूरब छिक्का मृत्यु हकार । अग्निकोणमे दुःखक भार ॥

''छन्द थिक अनुशासन – जे कवि लोकनिकेँ काव्यादर्शक पथपर स्थिर कएने रहैछ । छन्द थिक बन्धन– जे कवि लोकनिकेँ नियमक पाशमे बन्हने रहैछ । छन्द थिक तराजू– जाहिपर कवि लोकनिक काव्य–गरिमाकेँ तौलल जाइछ । छन्द थिक कुम्हारक फर्मा– जाहिपर वर्ण विन्यस्त भए जाइछ । छन्द थिक वीणा– जाहिमे माधुर्य ओ रागात्मकता छैक । छन्द थिक सरिता– जकरा सभ नहि पार कए सकैछ ।''[6]

वस्तुतः प्राचीन परम्परामे छन्दकेँ कविक कसौटी मानल जाइत छल । बिनु छन्दशास्त्र पढ़ने क्यो कविता नहि लिखि सकैत छलाह । छन्दक ज्ञानक पश्चाते काव्यक आन–आन तत्त्व सभ देखल जाइत छल । एहि प्रसंग कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क मन्तव्य अछि–

''प्राचीन परिपाटीमे तँ पहिल मोर्चा छलैक छन्द, वैह जटिल बुझाइ तँ सहजहिँ क्यो आगाँ बढ़त तऽ कोना ? आ छन्दमे लिखिए लेअए, तँ तेँ की कवि भऽ जायत ? शब्द आ अर्थक कसौटीपर जे सही उतरबाक प्रश्न उठैत छलैक ?''[7]

छन्दक प्रसंग एतय एतबे । जतय धरि मिथिलाभाषा रामायणक प्रश्न अछि, कवीश्वर चन्दाझा छन्द–विन्यासमे बेजोड़ छथि । जेहने मात्रिक छन्द तेहने वार्णिक । रामायण गेयप्रधान महाकाव्य थिक जे समुचित छन्द–योजनेसँ सम्भव अछि । संस्कृत साहित्यमे वार्णिक छन्दक बाहुल्य छैक किन्तु अन्यान्य भाषा साहित्यमे मात्रिक छन्दक विविधता । एकर कारण जे हो, परन्तु एतबा तऽ निर्विवाद जे वार्णिक छन्दक नियोजन करब विशेष प्रतिभा–विद्वत्ताक संग–संग अभ्यासोक अपेक्षा रखैत छैक आ मात्रिक छन्द अपेक्षाकृत सरल, सुबोध आ सुपाठ्य होइत छैक ।

रामायण शत कोटि अपारा तऽ सर्वविदित अछिए । रामकथा कतबो बेरि पढ़ू सुनू, मन नहि अघायत । गोस्वामी तुलसीदास **नाना पुराण निगमागम सम्मतं** कहि रामायणक रचना कए अमर भए गेलाह । ओहिमे प्रयुक्त भेने तीनिटा मात्रिक छन्द—चौपाइ, दोहा, सोरठा– सेहो अत्यन्त लोकप्रिय भए गेल । चौपाइ छन्द तऽ रामायणक पर्याय सन बनि गेल, जकरा नाना प्रकारक रागमे बान्हि गायक लोकनि प्रस्तुत करैत छथि । मिथिलाभाषा रामायणमे सेहो चौपाइ छन्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । चौपाइ छन्द जयकरीसँ बहुत अंश धरि साम्य रखैत अछि । जयकरीमे 15 मात्रा रहैत छैक आ सेहो 12 + गुरु + लघु केर क्रममे किन्तु चौपाइमे कोनहु रूपेँ 16 मात्रा रहैत अछि । कतोक कवि जयकरीकेँ चौपाइसँ अभिन्न मानैत छथि । आनक तऽ कथे कोन जे कवीश्वर जाहि छन्दकेँ चौपाइ कहलनि से वस्तुतः जयकरी थिक, चौपाइ नहि । एतय जयकरी एवं चौपाइ दूनू छन्दक लक्षण एवं उदाहरण अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि –

लक्षण : 16 मात्रा

ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ । ।

चौपाइ – **जँ सोलह चौपाइ कहाबए**[8] – 16 मात्रा / चरण

12 मात्रा

ऽ ॥ । । । । । ऽ । ऽ ।

जयकारी – **बारह ग ल जयकरी प्रसि□**[1] – 12 मात्रा + गुरु + लघु/चरण

उपर्युक्त दुनू छन्दक लक्षणमे मात्र एक मात्राक अन्तर अछि । जयकरीमे अन्तिम दू वर्णक विन्यास गुरु एवं लघु (ऽ।) केर रूपमे रहब आवश्यक अछि जखन कि चौपाइमे एहन कोनो बन्धन नहि, सोलहटा मात्रा भेल ताकए । मिथिलाभाषा रामायणमे जयकरी कहि कए कोनो छन्दक प्रयोग नहि कएल गेल अछि, किन्तु चौपाइ नामे अभिहित कएल गेल पद्य वस्तुतः जयकरीक लक्षणसँ युक्त अछि । एहिमे 16 गोट मात्रा किन्हहुँ नहि भेटत । हिनक रामायणक एकाधे स्थल पर 16 मात्रा युक्त चौपाइ भेटैत अछि । द्रष्टव्य थिक—

16 मात्रा	16 मात्रा
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ	। । ऽ । । । । ऽ ऽ । । ऽ
भक्त्या तस्य च नामस्मरणे ।	**मरणे भयमपि नान्तःकरणे ॥**
16 मात्रा	16 मात्रा
ऽ ॥ ऽ। । ऽ। । ऽ । ।	ऽ । । ऽ । । । । । । ऽ । ।
हे रघुनन्दन दुर्गति खण्ड न ।	**पालय मां दिनकर कुल मण्डन ।**[10]

एतदतिरिक्त मिथिलाभाषा रामायणमे प्रयुक्त प्रायः सभ चौपाइ जयकरी थिक । हिनक चौपाइ नामे अभिहित छन्दक वर्ण-विन्यास 12 + गुरु + लघु एहि प्रकारक अछि—

12 + गु + ल	12 + गु + ल
ऽ । । । । । । । । । । ऽ ।	। । ऽ ऽ । । । । । । ऽ ।
शौनक पुछल कहल भल सूत ।	**अति आनन्द मगन मन पूत ॥**
12 + गु + ल	12 + गु + ल
ऽ ॥ ऽ ऽ । । ॥ ऽ ।	। । । ऽ । ऽ ॥ ऽ ऽ।
नारद जोगी पर उपकार ।	**करक हेतु संचर संसार ।**[11]

उपर्युक्त छन्द चौपाइक अन्तर्गत मिथिलाभाषा रामायणमे वर्णित अछि जे विशु□ जयकरी थिक, संगहि जयकरी छन्दक उदाहरण (नामेल्लेखक संग) एहि रामायणमे नहि

साहित्यमे सर्वाधिक व्याप्त अछि । एहि आलेखमे चर्चित छन्द सभक उदाहरण मिथिलाभाषा रामायणमे देखल जा सकैत अछि । विस्तारक भयसँ एतय उदाहरण नहि प्रस्तुत कए मात्र नामोल्लेखे धरि कए सकलहुँ अछि ।

संदर्भ :

1. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 1
2. तत्रैव
3. छन्दोमंजरी— पं० गंगादास, पृ० 3
4. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 11
5. मैथिली व्याकरण आओर रचना— युगेश्वर झा, पृ० 412
6. मिथिला-मिहिर, 11-17 फरवरी 1979— डॉ० रमण झा, पृ० 16
7. बाजि उठल मुरली— उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', पृ० 18
8. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 24
9. तत्रैव
10. मिथिलाभाषा रामायण— चन्दा झा, पृ० 1
11. तत्रैव, पृ० 2
12. कृष्णजन्म, मनबोध
13. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 31
14. मिथिलाभाषा रामायण— चन्दा झा, पृ० 19
15. तत्रैव, पृ० 46
16. तत्रैव, पृ० 95
17. तत्रैव, पृ० 94
18. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 36
19. तत्रैव
20. मिथिलाभाषा रामायण— चन्दा झा, पृ० 1
21. तत्रैव, पृ० 54
22. छन्द:शास्त्र— पं० गोविन्द झा, पृ० 27
23. तत्रैव, पृ० 30
24. तत्रैव, पृ० 28
25. तत्रैव, पृ० 39
26. तत्रैव, पृ० 23
27. तत्रैव, पृ० 23

(चेतना समिति पटना द्वारा आयोजित सेमिनारक हेतु- 2007)

V

अछि), सवैया इत्यादि । छन्द:शास्त्रमे देल कतोक लक्षण बुझि पड़ैत अछि जेना हिनक एकमात्र छन्दहिक उदाहरणक लेल देल गेल अछि, तथापि एखनहुँ कतोक छन्द एहन अछि जकर लक्षण उक्त छन्द:शास्त्रमे नहि अछि ।

मैथिली काव्यमे वार्णिक छन्दक प्रयोग प्राय: ओहने मैथिलीक महाकवि लोकनि कयलनि अछि जे मूलत: संस्कृतक पंडित छथि । एकर प्रयोग कम भेटत । रामचरितमानसमे सेहो किछु संस्कृत श्लोककेँ छोड़ि अन्यत्र वार्णिक छन्द नहि दृष्टिगोचर होएत, किन्तु एकर विपरीत कवीश्वरक रामायण वार्णिक छन्दक विविधतासँ भरल पड़ल अछि । वार्णिक छन्द मात्रिक छन्दक अपेक्षा क्लिष्टतर होइत अछि । एकर रचना कएनिहारकेँ छन्दशास्त्रमे निपुणता चाहियनि । संस्कृत साहित्यमे सर्वत्र एकर विविधता भेटत मात्रिक छन्द यदाकदा, मुदा अन्यान्य भाषा साहित्यमे मात्रिके छन्दक विविधता । परन्तु मिथिलाभाषा रामायणमे वार्णिक छन्दक प्रचुर प्रयोग कवीश्वरक गम्भीर पाण्डित्यकेँ प्रदर्शित करैत अछि । एहि रामायण मध्य सर्वाधिक प्रयोग जाहि वार्णिक छन्द सभक भेल अछि, ओ थिक – भुजङ्गप्रयात (य–य–य–य गण □ 12 वर्ण/चरण), मालिनी (न–न–म–य–य□15 वर्ण/चरण), शिखरिणी (य–म–न–स–भ–लघु + गुरु□ 17 वर्ण/चरण), मन्दाक्रान्ता (म–भ–न–त–त–गुरु+गुरु□17 वर्ण/चरण), शार्दूलविक्रीड़ित (म–स–ज–स–त–त+गुरु □ 19 वर्ण / चरण), वसन्ततिलका (त–भ–ज–ज–गुरु+गुरु□14वर्ण/ चरण), द्रुतविलंवित (न–भ–भ–र□12मात्रा/चरण), तोटक (स–स–स–स□12मात्रा/चरण), नाराच (ज–र–ज–र–ज–गु□16मात्रा/चरण, यैह संस्कृतमे पंचचामर कहबैछ) प्रभृति ।

एहि रामायण मध्य जाहि वार्णिक छन्द सभक कम प्रयोग भेल अछि ओ थिक–मालिका (र–ज+गुरु+लघु□8 वर्ण/चरण), मौक्तिकदाम (ज–ज–ज–ज□12 वर्ण/चरण), चामर (र–ज–र–ज–र□15 वर्ण/चरण), मणिगुण (न–न–न–न–स□15 वर्ण/चरण), चंचला (र–ज–र–ज–र+गुरु□16 वर्ण/चरण), पृथ्वी (ज–स–ज–स–य+लघु+गुरु□17 वर्ण/चरण), हंसी (भ–म–त–न–न–न–स+गुरु□22 वर्ण/चरण), चकोर (भ–भ–भ–भ–भ–भ–भ+गुरु+लघु□23 मात्रा/चरण), किरीट (भ–भ–भ–भ–भ–भ–भ–भ□24 मात्रा/चरण), इत्यादि ।

किछु वार्णिक छन्द एहनो अछि जकर मात्र एकहि बेरि प्रयोग एहि रामायणमे भेटैत अछि, यथा– समानिका (र–ज+गुरु□7 वर्ण/चरण), उपजाति सुन्दरी (स–भ–र+लघु+गुरु□11 वर्ण/चरण), तरलनयन (न–न–न–न□12 वर्ण/चरण), स्रग्विणी (र–र–र–र□12 वर्ण/चरण), चंचरी (र–स–ज–ज–भ–र□18 वर्ण/चरण), मुदिरा (भ–भ–भ–भ–भ–भ–भ+गुरु□22 वर्ण/चरण) प्रभृति ।

उपर्युक्त सभटा वार्णिक छन्द समवृत्त कोटिक थिक । एकर अतिरिक्त अ□समवृत्त एवं विषमवृत्त सेहो अछि । अ□समवृत्तमे हिनक सभसँ प्रसि□ अछि अनुष्टुप, जे संस्कृत

देल गेल अछि । अत: स्पष्ट अछि जे कवीश्वर सन छन्द–मर्मज्ञ जयकरीकेँ चौपाइ छन्दहिक अन्तर्गत समाहित मानि लैत छथि । चौपाइ छन्दक अन्यत्र देल गेल उदाहरण द्रष्टव्य थिक––

16 मात्रा	16 मात्रा
। । । । ऽ । । । । । । ऽ ऽ	। । । ।ऽ । । । । । । । ऽ ऽ
नव अनुरागिनि नव अनुरागी ।	**मिलल दुहू तन गल गल लागी ।**[12]

चौपाइक अतिरिक्त रामायणमे जे दू गोट मात्रिक छन्दक बाहुल्य अछि से थिक दोहा एवं सोरठा । एकर बाहुल्य रामचरितमानसमे सेहो अछि । दोहा एवं सोरठा दुनू छन्द लगभग समाने अछि, समाने लक्षणयुक्त अछि, मात्र चरणक उलटफेर छैक । तेँ दोहाकेँ सोरठा जकाँ आ सोरठाकेँ दोहा जकाँ सुगमतासँ पढ़ल आ गाओल जा सकैत अछि । सोरठाक पृथक लक्षण नहि दैत पं० गोविन्द झाक कथन अछि –

8 मात्रा गु ल	10 मात्रा	ल ण गण
। । । । । । । । ऽ ।	ऽ ऽ ऽ । । । ।	। । ।
विषम चरण भए जाए	**जँ दोहागत सम**	**चरण**
8 मात्रा गु ल	10 मात्रा	ल ण गण
ऽ । । ऽ । । ऽ ।	। । । ऽ । ऽ । । । ऽ	
सोरठ छन्द कहाए	**अछि प्रसि□ से जगत मे ॥**[13]	

उपर्युक्त लक्षण दोहा छन्दहिक लक्षण थिक किन्तु चरणक फेर अछि । एतय दोहा एवं सोरठा दुनूक किछु उदाहरण अवलोकनार्थ उपस्थापित कयल जा रहल अछि––

दोहा

मानव लीला करथि प्रभु **निर्गुण रहित विकार**
जानथि ब्रह्मा प्रभृत नहि **विभु माया विस्तार ।**[14]

पुनश्च

पंकज-लोचन राम-पद **लेलनि जखन धोआए ।**
विधिवत से जल भक्तिसोँ **माथा लेल चढ़ाए ॥**[15]

सोरठा

गज पिबइत अछि पानि **शब्द-बेधसँ बि□ से ।**
व्याकुल उठला कानि **के मारल अपराध बिनु ॥**[16]

पुनश्च

दूइ पहर छल राति नदी तीर वन घोर मे ।
दुस्सह क्षत्रिय जाति वाण चलाओल जानि गज ।[17]

सामान्यतया चौपाइ/जयकरीक स्वर परिवर्तन करबाक हेतु बीच-बीचमे दोहा आ सोरठा छन्दक उल्लेख कएल जाइत छैक । कवीश्वर तऽ कतहु-कतहु लगातार दस-दसटा सोरठा छन्दक प्रयोग कएलनि अछि । लगैत अछि जे करुण रसक प्रयोगमे हुनका ई छन्द बेसी उपयोगी बुझि पड़ैत छनि । दशरथ द्वारा भ्रमवशात् श्रवण कुमारक बधक समयमे करुण गाथाक किछु अंश सोरठा छन्दमे देल गेल अछि जे उपर्युक्त पद्यसँ सेहो संकेत भेटैत अछि ।

कवीश्वरक रामायणमे छन्द-विधानपर एहि लघुकाय आलेखमे विशेष चर्चा नहि कएल जा सकैत अछि, किन्तु जतए किछु विशेषता वा भिन्नता देखबामे अबैत अछि, हम ओतबे अंश धरिक उल्लेख करब आवश्यक बुझैत छी । एहि क्रममे हम हरिगीतिका छन्दक सेहो चर्चा करए चाहब, जकर प्रत्येक चरणमे 28 मात्रा रहैत छैक । चन्दा झा हरिगीतिका छन्दक उल्लेख एहि रामायणमे नहि कएने छथि मुदा ओ जाहि गीतिका छन्दक उल्लेख कएलनि अछि से वस्तुतः हरिगीतिकाक लक्षणसँ समन्वित अछि । हरिगीतिकामे 2 मात्रापर 26 मात्रा अर्थात् 28 मात्रा प्रति चरण रहैत अछि, परन्तु गीतिकामे सोझे 26 मात्रा प्रति चरण । एतए दुनूक लक्षण ध्यातव्य थिक –

हरिगीतिका

2 + 26 मात्रा

ऽ । । । ऽ । । ऽ । । । ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

जँ दुइक आगु कला रहए छब्बीस तँ हरिगीतिका ।[18]

गीतिका –

26 मात्रा

ऽ । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ

जँ रहए छब्बीस मात्रा तँ बुझू से गीतिका[19]

हिनक गीतिका छन्दमे उपर्युक्त हरिगीतिकाक लक्षण घटित होइत अछि । हिनक गीतिकाक उदाहरण देखल जाए जाहिमे 28 मात्रा अछि –

कहि देल जे मुनि भेल से दिन इष्ट देवि कृपा करू ।
अभिलाष-पूरण-कारिणी जनकार्यमे मन दै पड़ू ॥
सकलेष्ट -साधन-शक्ति-सकला भूधरेन्द्र-सुता अहाँ ।
कत किंकरी शरणागता रहिता मनोरथसँ कहाँ ॥

एकटा अन्य उदाहरण रामकरीक अन्तर्गत भेटैत अछि, जकर लक्षण छन्दःशास्त्रमे नहि देल गेल अछि । प्रायः गोविन्द झा एकरा हरिगीतिकेमे समाहित मानैत छथि । हरिगीतिकाक लक्षण एहिमे पूर्णरूपेण घटित भए जाइत अछि । अवलोकनीय थिक –

जय भक्ति-भावन विश्व-पावन रामचन्द्र दयानिधे ।
धृतचाप-सायक सर्वनायक जानकीश विधे-विधे ॥
जय पंचभूत-विभूति-कारण सर्वचारण सद्गते ।
त्वयि सन्तु मन्नतयोध मामिह पाहि पाहि जगत्पते ॥[20]

उपर्युक्त पद्यमे 2+26 मात्रा हरिगीतिकाक अनुसार द्रष्टव्य थिक ।

कवीश्वर अपन रामायणमे कतोक आओर मात्रिक छन्दक प्रयोग प्रचुरतासँ कएने छथि, जे छन्द सभ थिक – रूपमाला (21 +गुरु+लघु □24मात्रा/चरण), दोबय (16+8+2+2□28 मात्रा/चरण, पं० गोविन्द झा[21] एही छन्दकेँ सार, हरिपद एवं नरेन्द्र सेहो कहैत छथि), सवैया (16+16□32मात्रा/चरण), हरिपद (16+12□28मात्रा / चरण, पं० झा एकर लक्षण पृथक नहि देने छथि । ओ प्रायः एकरा दोबय, सार आ नरेन्द्रक पर्याय बुझैत छथि), रोला (16+8□24मात्रा/चरण), वरवृत्त (अर्धसम-4+गुरु+लघु□7 मात्रा सम चरण तथा 12 मात्रा विषम चरण, पं०झा[22] बारब तथा बरबाकेँ एके मानैत छथि) ।

कवीश्वर किछु मात्रिक छन्दक कम प्रयोग कएलनि अछि, जे थिक हंसगति (16+2+2 □ 20 मात्रा / चरण), झूलना (20+15+2□37 मात्रा / चरण), विष्णुपद (16+8+2 □ 26 मात्रा / चरण), प्लवंगम (16+2+1+2□21मात्रा/ चरण), प्रज्झटिति (2+8+3+ऽ।□16मात्रा/चरण), प□रि, प्रज्झटिका, चौवेल (16+8+3+3□30 मात्रा/चरण, पं० झा[23] एकरा चौवेला कहने छथि), वानिनी (18+2+2□22 मात्रा/चरण, पं० झा[24] एकरा झझोटी कहने छथि तथा छन्दोमंजरीमे एकरा वार्णिक छन्दक अन्तर्गत राखल गेल अछि) ।

कवीश्वरक सम्पूर्ण रामायणमे किछु छन्दक मात्र एकहि गोट उदाहरण दृष्टिपथपर अबैत अछि, लगैए जेना छन्दमर्मज्ञ चन्दा झा छन्दक कोषकेँ विस्तीर्ण करबा ले' उदाहरणक रूपमे एहन छन्द सभक प्रयोग कएने होथि जे बेजोड़ अछि, अर्थात् रामायणमे ओकर जोड़ा नहि देखि पड़त । एहन छन्दसभ थिक – बाला (13+2+2□17मात्रा/चरण), कड़खा (20+20□40मात्रा/चरण, पं० झा[25] एकरा विजया छन्दसँ अभिन्न बुझैत छथि), अहीर(8+2+1□11मात्रा/चरण, पं झा[26]क अनुसार अभिराम थिक), दण्डक (मानव दण्डक 10 +2+2□14 मात्रा/चरण, कोनो छन्दक मात्राक तीन बेरि आवृत्ति भेने ई छन्द होइत छैक) ।

कवीश्वरक किछु उपजाति कोटिक छन्द अत्यन्त लोकप्रिय अछि, यथा— कुण्डलिया (दोहा+रोला), छप्पय (पं० गोविन्द झा एकरा छपद तथा षट्पद सेहो कहलनि

छथि । आधुनिक मैथिली साहित्यक अधिष्ठाता कवीश्वर चन्दाझा श्रीरामचन्द्रक जन्म समयक विशिष्ट ग्रहयोगक जे संकेत दैत छथि, से सहज अवलोकनीय थिक –

शुक्ल पक्ष नवमी शुभ कर्क उदित हित ।
मध्य दिवस नक्षत्र पुनर्व्वसु अभिजित ।।
प□चग्रह उच्चस्थ मेषमे दिनकर ।।
सृष्टि त्रिगुण उत्पत्ति शक्तिकर जनिकर ।।[3]

कविशेखर बदरीनाथझा अपन एकावली–परिणयमे यात्रा समयमे जाहि वस्तु सभकेँ शुभ मानैत छथि, तकरहु आधार ज्यौतिषे थिक । अवलोकनीय थिक –

पूर्ण कलश दधि मीन द्विज, गणिका निरखि नरेश ।
वनिता-सुत-अनुचर सहित, कएलन्हि भवन प्रवेश ।।[4]

उपर्युक्त पद्य ज्यौतिषशास्त्रक निर्म्नांकित श्लोकसँ कोना प्रभावित अछि से देखल जाय–

अग्रे धेनुः सवत्सा वृषगजतुरगा दक्षिणावर्त्त वह्निः ।
दिव्यस्त्री पूर्ण कुम्भो द्विजवर गणिका पुष्पमाला पताका ।।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधि मधु रजतं का□चनं शुक्लवर्णं ।
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः ।।

मिथिलामे बच्चाक जन्म होइतहिँ ओकर टीपनि बनाओल जाइत छैक, जाहि आधारपर जातकक भविष्यक संकेत भेटैत छैक । राजा तुर्वसु सेहो एकवीरक टीपनि बनबाए ओकर फलादेश व्यग्रतापूर्वक सुनलनि । कविशेखरहिक शब्दमे द्रष्टव्य थिक –

शिशु लखि गणना करइत जे, रहलाह राति भरि जगले ।
टीपनि बनाए से शुभ फल, दैवज्ञ सुनाओल लगले ।।
बुझि सुतक ग्रहस्थिति उत्तम, नृप गणकगणहि परितोषल ।
वितरण प्रभावसँ मानू, कल्पद्रुमहुक मद सोखल ।।[5]

कविवर सीताराम झा तऽ ज्यौतिषीये छलाह । हुनक अम्बचरित एवं अन्यायो रचनामे ज्यौतिषतत्त्वक प्रधानता अछि । मिथिलावासीक मान्यता छनि जे कोनो प्रकारक विपत्ति ग्रहक क्रूरता, बक्रता, युति, गति, उच्च, नीच, मार्गी, वक्री, शुभाशुभ दृष्ट, अंशबल इत्यादिक कारणेँ अबैत अछि । पं. सीतारामझा भूकम्पक लक्षण दैत कहैत छथि –

जखन कुगर्भक विकृत वह्नि जल वायु बढ़ै अछि ।
रविक राशि पुनि जखन पाँच ग्रह आबि चढ़ै अछि ।।
यदि वा रविशशिबिम्ब निकट पृथ्वीक रहै अछि ।
भूगर्भस्थ विकार तखन बहराए चहै अछि ।।[6]

नदीक रूपमे एखनो वर्त्तमान, यद्यपि मृतप्राय अछि । भवनक सटले पश्चिम एकटा अति विशाल पाकड़िक गाछ अछि जे साहेबराम दास दतमनि कऽकऽ गाड़ि देने छलथिन । ई गाछ आब ततेक पसरि गेल छैक जे बुझि पड़ैत अछि जे एक नहि अनेक गाछ हो । एहि भवनक आगू अर्थात् पूब दिशामे एकटा पोखरि अछि । ई कहिया खुनाओल गेल ओ के खुनबौलक तकर कोनो प्रमाण नहि भेटैछ । एहि तरहेँ पश्चिमो दिशामे ओही ढंगक पोखरि अछि आ प्रायः ओतबे पुरान ।

पछबरिया पोखरिक पुबरिया मोहारपर एकटा छोटसन मुदा दिव्य मन्दिर अछि जकर निर्माणकर्त्ता वर्तमान महंथ श्रीसियाराम दासजी थिकाह । ई मन्दिर 1976 ईस्वीमे बनबाओल गेल अछि तथा एहिमे रामेश्वरनाथ महादेव प्रतिष्ठित छथि । पोखरिक उतरबरिया मोहारपर महंथ बंशीदास संस्कृत हाइस्कूल ओ बाबा साहेबराम संस्कृत कॉलेज अछि । पोखरिक दक्षिण भाग किछु हटिकऽ एकटा मिडिल स्कूल सेहो अछि ।

एकटा महत्त्वपूर्ण स्थान अछि बूढ़वन, जे मुख्य भवनसँ करीब–करीब एक किलोमीटर दक्षिण होयत । एहि ठाम कृष्ण भगवान साहेबरामक संग नृत्य करैत छलाह ।

बुढ़वनसँ किछु हटिकऽ धोबिघट□ा अछि, जे पूर्वकालक थिक । सम्प्रति एतऽ नाममात्र धोबिघट्टा छैक । एहिपर एखन खेती–पथारी चलि रहल छैक ।

मुख्य भवनसँ अग्निकोणक दिशामे एकटा पक्की सड़क जकाँ गेलैक अछि जे आब अपन रूप विकृत कऽ चुकल अछि । एकर अन्त सगुणा नदीक तीरमे होइत छैक जतऽ किछु सीढ़ी जकाँ सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि । ओहि ठामक लोकसभसँ जिज्ञासा कयला सन्ताँ ई बुझबा योग्य भेल जे ओहि सड़कपर दऽकऽ दासजी लोकनि भ्रमणार्थ निकलैत छलाह ।

वर्तमानो समयमे लगभग पचास गोट साधु–महात्मा ओ सैकड़ाक करीब छात्रगण महंथ श्रीसियाराम दासजीक आश्रममे छथि । एतेक लोकक भोजन जाहि बर्त्तनमे बनैत छैक सेहो तेहने अछि जे चारि गोटे ओहिमे पैसिकऽ मजैत छैक । यैह कारण अछि जे ई बर्तन प्रतिदिन नहि माँजल जाइत छैक । एक समयमे दालिबाला बर्तनमे एक साधुक पतन भऽ गेल रहैक । बर्त्तन तऽ अपने उनटि गेलैक, मुदा साधुक प्राण नहि बचलैक ।

साहेबराम दास अपन कृतित्व ओ व्यक्तित्वसँ मैथिली साहित्यक प्रबु□ ओ सुविख्यात कविगण मध्य अपन नाम प्रतिष्ठित कयलनि । हिनक विषयमे डॉ० जयकान्त मिश्रक कथन अछि––

The greatest of these, from the point of view of their literary output, is undoubtedly Sahebaramdasa.

ई वस्तुतः कवि नहि छलाह – सन्त छलाह, भक्त छलाह । हिनक कवितामे कृत्रिमताक कतहु दरस नहि रहैत छल । ईश्वरक स्तवन–कीर्त्तनमे लीन रहबाक कारण हिनक हृदयक भावना ओही रूपेँ प्रस्फुटित होइत छल– जे छल हिनक कविता । तेँ हिनक कविता कविता नहि, गीत थिक । एहिमे रागात्मकता छैक, गेयधर्मिता छैक । यैह कारण थिक जे हिनक सभटा गीत भक्तिरसप्रधाने अछि, शृंगारिक नहि, खाहे ओ कोनो देवी–देवताक रहनि । हिनक पद सभ मुख्यतः श्रीकृष्णविषयक वा शिवविषयक अछि ।

साहेबराम दास कम पदक रचना नहि कयलनि, मुदा सभटा प्राप्य नहि अछि, जकर अनेक कारण अछि । सर्वप्रथम तँ ई जे एक बेर सभटा कागज–पत्र रैमाक चोर उठाकऽ लऽ गेलनि, किन्तु ओकरा ओ प्रयोजनीय नहि बुझि पड़लैक आ तेँ ओहि सभ पत्रकेँ दिगौनक एक जंगलमे छोड़ि देलकैक । ई पत्र सभ ओतय केर एक महात्मा देखलथिन आ पता लगाकऽ ओकरा अपन स्थान पहुँचा देलथिन, यद्यपि छलाह ओ अनपढ़ ।

एहि क्रममे अनेक पत्र नष्ट भऽ गेलैक ओ हेरा गेलैक । बचल पाण्डुलिपिक प्रेसकापी दड़िमाक एक कवि करऽ लगलाह जे किछु दिनक बाद स्वयं परलोकवासी भऽ गेलाह । हुनको ओतऽ चोरी भेलनि, जाहिमे पुनः किछु पत्र नष्ट भऽ गेलैक । एहि तरहेँ खण्डित अवस्थामे ओ ओतऽसँ कोनो रूपेँ ऊपर कयल गेल । आब पुनः ओकर प्रेसकापी तैयार भऽ रहल अछि, जे निकट भविष्यमे विद्वन्मण्डली मध्य समादृत होयत ।

महन्थ श्रीसियाराम दासजी तत्परतासँ उचित पारिश्रमिक दऽ एकर प्रतिलिपि करा रहल छथि । प्रतिलिपिकार थिकाह राँची कालेजक हिन्दी विभागक रिटायर्ड प्रो० श्रीकालीकान्त चौधरी । ई महन्थजीकेँ आश्वस्त कयने छथिन जे वर्षाभ्यन्तरे ई गीतसभ प्रकाशित होयत । हिनक एकमात्र कवितावली कवीश्वर चन्दाझाक सम्पादकत्वमे प्रकाशमे आयल अछि, किन्तु सेहो भेटब दुर्लभे । एहिमे प्रायः 478 गीत संकलित अछि । ओहि संकलनमे साहेबराम दासक संक्षिप्त परिचय एवं भक्तिभावक प्रेरणाप्रद भूमिका सन्निहित अछि, जे पूर्ण उपादेय अछि ।

□नोटः उपर्युक्त सर्वेक्षण हम अपन अभिन्न मित्र खिड़मा निवासी श्री राजेन्द्र मंडलक सहयोगसँ पचाढ़ीस्थानक भ्रमण कऽ कए सकलहुँ ।

आइ वैह राजेन्द्र मण्डल प्रायः कतहु ए.डी.एम.क समकक्ष होयताह जे 1983 बैचमे बि.प्र.से.मे आयल छलाह ।]

(मिथिला मिहिर, 28 जनवरी 1979)

V

मिथिलामे रहनिहार विद्वान चाहे धर्मशास्त्र पढ़ने होथि वा व्याकरण, दर्शन पढ़ने होथि वा न्याय, वेद पढ़ने होथि वा साहित्य– ज्यौतिषशास्त्रक ज्ञान हुनका रहिते छनि । यैह कारण थिक जे मिथिलामे रचल गेल साहित्यपर ज्यौतिषक प्रभाव पूर्णरूपेण भेटैत अछि कारण जे लेखकक विभिन्न शास्त्रक ज्ञान हुनक साहित्यमे सन्निहित होयब स्वाभाविके अछि ।

एतऽ लोक बिनु दिन गुनओने कोनो शुभ कार्य तऽ नहिएँ करैत अछि, अपितु सामान्यो यात्रा धरिमे सामान्यो बुझनिहार लोक दिनक विचार कऽ लैत अछि, यैह कहैत जे– 'नहि किछु जानी तऽ दिग्बल धऽ तानी ।' एहिसँ स्पष्ट अछि जे दिग्बल, दिग्विरोध, दग्धयाम, अ□प्रहरा, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक ज्ञान मिथिलाक मूर्खो नर–नारीकेँ रहैत छैक । यैह कारण थिक जे मैथिली काव्यमे ज्यौतिष–ज्ञान भरल–पड़ल अछि ।

मैथिलीक हास्यव्यंग्यसम्राट् स्व० प्रो० हरिमोहनझा तऽ अपन 'खट□र ककाक तरंग'मे तेना ने ज्यौतिषीजीकेँ खट्टरककासँ भिड़न्त करा देलनि जे एक दोसराक मतक खण्डनमे लागि गेलाह । ओ खण्डन–मण्डन ततेक ने रोचक, प्रचलित तथा सर्वग्राही अछि जे सामान्यो पाठक आकृष्ट भए जाइत अछि । कारण जे एतय तऽ सबकेँ एतबा ज्ञान छैके जे– "शनौ चन्द्रे त्यजेत् पूर्वां...... मेष, सिंह, धनु पूर्वे चन्दा......' तथा हरति सकल दोषाः चन्द्रमा सम्मुखस्थः ।" प्रो० झा उपर्युक्त पुस्तकक 'ज्योतिष' शीर्षकमे खट्टर कका द्वारा पर्याप्त वाद–विवादसँ पाठककेँ आनन्दक संग कतोक गूढ़ तत्त्वक सेहो संकेत दैत छथि ।[1] तहिना 'प्रणम्य देवता'क ज्योतिषाचार्य शीर्षकमे दूटा ज्यौतिषीकेँ एक दोसरासँ लड़ाए दैत छथि, जाहिसँ पाठकक मनोर□जन तऽ होइतहि छनि, संगहि ज्यौतिषक कतोक गुत्थी सेहो सोझरा जाइत अछि ।[2]

मैथिलीमे काव्य रचनिहार प्राचीन कालमे तऽ पंडिते (संस्कृतक विद्वान) रहैत छलाह, किन्तु आइयो बीसमो शताब्दीमे पण्डित द्वारा रचल मैथिली काव्यक अभाव नहि अछि, जाहिमे पर्याप्त ज्योतिषविद्याक प्रभाव देखबामे अबैत अछि; यथा– कविशेखर बदरीनाथझाक एकावली–परिणय, कविचूड़ामणि मधुपक राधा–विरह; कविवर सीतारामझाक अम्बचरित, प्रो० तन्त्रनाथझाक कृष्ण–चरित, प्रो० सुरेन्द्रझा सुमनक दत्त–वती, प्रतिपदा, उत्तरा इत्यादि ।

मिथिलामे ज्यौतिष विद्याक बड़ विशिष्ट महत्त्व अछि, कारण जे लोककेँ एकर प्रामाणिकतापर विश्वास भए गेल छैक । प□चांगमे जाहि प्रकारेँ गणना कएल गेल रहैत छैक, तहिना फलीभूतो होइत छैक । उदय एवं अस्तक समय, सूर्य–ग्रहण एवं चन्द्र–ग्रहणक समय, दिन, तिथि, नक्षत्र इत्यादिक जे मान छैक तकर प्रामाणिकतापर ककरहु संदेह नहि छैक । मैथिल कवि लोकनि ज्यौतिषशास्त्रमे पटु रहलाह अछि आ एहिपर विश्वासो ततेक ने छनि जे ओ अपन काव्यहुमे यथास्थान ओकर समावेश कएने

मिथिलामे ज्यौतिष विषयक मान्यता

मिथिला प्राचीन कालहिसँ विद्याक केन्द्र रहल अछि आ खासकऽ ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र विषयमे तऽ एहि ठामक व्यावहारिके निर्णय अकाट्य मानल जयबाक प्रमाण अछि—

धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतः ।

देशक विभिन्न भागसँ विद्वानलोकनि वेद, धर्मशास्त्र, ज्यौतिष, दर्शन, न्याय, व्याकरण इत्यादि विशिष्टक ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु मिथिला अबैत छलाह, जकर कतोक प्रमाण अछि । एतऽ केर लोक सदासँ धार्मिक प्रवृत्तिक रहल अछि आ धर्मशास्त्रक निर्णयक हेतु ज्यौतिष अभिन्न अङ्ग थिक । जतेक प्रकारक व्रतक प्रचलन एतऽ अछि से कतहु अन्यत्र भेटब दुर्लभ । एतऽ नाना प्रकारक देवी-देवताक पूजा होइत अछि, यथा- दुर्गापूजा, कालीपूजा, विश्वकर्मापूजा, इन्द्रपूजा, सरस्वतीपूजा, अनन्तपूजा, गणेशपूजा, सत्यनारायणपूजा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी आदि । एतदतिरिक्त सूर्य, चन्द्र, नाग इत्यादि दृष्ट देवताक पूजा सेहो कम महत्त्वक नहि अछि । नागपंचमी दिन तऽ लोक धानक लावाकेँ 'खेलो खेलो रे सर्प्पा........ दोहाइ ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकेँ ।' पढ़ि अपन आलयमे छिटैत अछि, जे नागदेवता ग्रहण करथि । एतबे नहि, नवग्रहक पूजा, वटसावित्री, मधुश्रावणी एवं कतोक एहन पूजाक प्रचलन मिथिलामे अछि तकर ठेकान नहि । ग्रहक नामपर तऽ लोक सोमवारी, मङ्गलवारीसँ लऽकऽ रवि पर्यन्तक व्रत करैत अछि । एतय केर प्रसि□ व्रत थिक- शिवरात्रि, नरकनिवारण, हरितालिका, हरिवासर, जितिया, रामनवमी, कृष्णाष्टमी, महाष्टमी (दुर्गापूजा), देवोत्थान एकादशी इत्यादि । आजुक समयमे कठिन व्रत अछि- हरिवासर, जितिया, छठि इत्यादि, कारण जे आब तऽ चन्द्रायण, तारायण (पन्द्रह दिन आ मास दिनक) व्रत कएनिहारक दर्शन दुर्लभ अछि । हँ, दुर्गापूजामे दस दिन पर्यन्त अन्न-जल त्यागि छातीपर कलश राखि जयन्ती जनमौनिहारक दर्शन समय-समयपर अवश्य होइत रहल अछि ।

कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'

मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक अनन्य उपासक कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 24 मइ 1980केँ राति एक बाजि दस मिनटमे परलोक-यात्रा कऽ लेलनि । एहि समय हिनक अवस्था 67 वर्षक छलनि । ई अपन पाछाँ विधवा, एक पुत्र एवं विवाहिता दू पुत्रीक अतिरिक्त एक विशाल परिवार छोड़ि गेलाह । हिनक निधनसँ सम्पूर्ण मिथिलावासी शोक-सन्तप्त अछि । मैथिली साहित्यकेँ कोन तरहक क्षति पहुँचलैक अछि, से तँ ककरोसँ अज्ञात नहिएँ अछि ।

स्वर्गीय उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क जन्म सन् 1913 ई०मे ग्राम पुरुषोत्तमपुर (चतरिया), पो० शुभंकरपुर, जिला दरभंगाक अन्तर्गत भेल छलनि । ई एकान्त साहित्य-साधक छलाह । बहुतो दिन धरि हिनक प्रतिभाक परिचय लोककेँ नहि भेल छलैक, यद्यपि हिनक काव्यक स्रोत निरन्तर प्रवाहित होइत रहल । हिनक कवि-कर्मक प्रेरणाक स्रोत छलथिन श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' । मुख्यतः छलाह ई पत्रकार । दैनिक आर्यावर्तक प्रकाशनक आदिए कालसँ ई ओकर संशोधन विभागमे कार्यरत रहि अपन जीविकोपार्जन करैत रहलाह । 1960 ई०मे जखन 'मिथिला मिहिर'क पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेल तँ पहिने ई ओकर उप-सम्पादक आ बादमे सहायक सम्पादकक रूपमे 1977 ई० धरि रहलाह आ ओही पदसँ सेवानिवृत्त सेहो भेलाह ।

मोहन मुख्यतः कवि छलाह । छिट-फुट हिनक ततबा रचना अछि जे एकत्र कयलाक बाद अपन समसामयिक कोनो कविसँ कम नहि होयतनि । हिनक प्रकाशित मात्र दू गोट पोथी अछि- पहिल 'फुलडाली' नामसँ बहुत दिन पूर्वे प्रकाशित भेल आ दोसर ओ पोथी थिक जे हिनका सर्वसाधारणो लेल चर्चित बना देलकनि । ई पोथी 1977 ई०मे 44 पृष्ठक वृहद् भूमिकाक संग छपल जाहिमे 101 कविताक संकलन अछि । एकर नाम थिकैक 'बाजि उठल मुरली' जे 1978 ई०मे साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भेल । मिथिला मिहिरमे तँ अद्यावधि हिनक कविता खूब छपैत रहल अछि । आइ किछु वर्षसँ तँ हिनक पद्य मिहिरक एक टा अनिवार्य अंग बनल रहल अछि । मिहिरक प्रत्येक अंकमे

प्रथमे पेजक उपरका बाम कोणपर हिनक एक टा पद्य भेटैत अछि जे रोचक तँ रहिते अछि, उपदेशप्रद सेहो। किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

फुलय फड़य नहि, चार गछारय, से लतिये की ?
तन नहि पोसय, मन नहि तोषय, से पतिये की ?
दूध ने देअय, हुड़पेटय बड़, से गाये की ?
नहि अपनाबय, बूझय दाबय, से पाये की ?

–मिहिर, 20 अप्रैल '08

अपिच—

स्थिति वा समयक अनुसारेँ नहि सभ बदलै अछि ।
दृष्टि बिन्दु किछु स्थिरो होइ जे नहि बदलै अछि ॥
सिंह बाघ केहनो भूखल नहि घास-पात रुचि ।
अवसरवादी किन्नहु नहि सि□ान्ती दृढ़ मुचि ॥

—मिहिर, 9 दिसम्बर '79

कविवर मोहन अपन एहि स्फुट कवितासभमे किछु खास व्यक्तिक लक्षण सेहो कहि गेलाह अछि । एहि दिशामे ई पण्डित सीताराम झाक अनुयायी बुझि पड़ैत छथि । कवि युगपुरुषक लक्षण दैत कहैत छथि—

टहलि लेथि कौलेज कदाचित, छूबथि भ्रमवश पोथी ।
अभिनेता-नेताक गप्प छाँटथि, झगड़थि लऽ थोथी ॥
बलधिङरो कऽ कूदथि-फानथि, उचङथि लूटथि खाथि ।
बगय लगनि हिप्पी सन हीरो, ई युगपुरुष कहाथि ॥

हिनका चिरकाल धरि साहित्यकारक बीच चर्चित बनौने रहबा ले' हिनक एकमात्र कृति 'बाजि उठल मुरली' पर्याप्त अछि । हम कहि सकैत छी जे हिनक समसामयिक कोनो एक कविक एकठाम एतेक दमगर संकलन नहि भेटत । एहि कवितासभकेँ पढ़लासँ कविक जीवनक विभिन्न पक्षक संकेत भेटैत अछि । ई हिनक कोनो एके समयक रचना नहि थिकनि । हँ, एतबा धरि अवश्य जे हिनक कोनो कविता पढ़ू तँ ओहिमे कविक सुदीर्घ चिंतन, दृढ़ मन आ गहन अनुभूतिक आभास भेटबे करत । हिनक अधिकांश कवितामे गेयधर्मिता अछि, भावक गम्भीरता अछि, किन्तु क्लिष्टता नहि अछि । ई एकटा एहन कवि छथि जे राजनीतिसँ सतत अपनाकेँ फराक रखियोकऽ मात्र अपन प्रतिभाक बलपर अग्रोन्मुख होइत रहलाह ।

कविकेँ अपन भाषा, अपन संस्कृति आ अपन देश-कोसक प्रति जे ममता अछि से अन्यत्र भेटब दुर्लभ । कवि उपर्युक्त गुणसँ युक्त व्यक्ति मात्रकेँ अपन देश-कोसक

नाम तँ थिक वैह अहँकेर **भीमनाथ** जहान जानय ।
कायसँ अहँ भीम नहिएँ नाम यशमे भीम मानय ॥
की फुरैए की ने हमरा नित्य **भावा□जलि** चढ़ाबी ।
मान्यवर हे ! साधना-रत साधकहु केर जड़ि हिलाबी ॥

जीवनक उद्देश्य पुस्तक संचये टा रहल जनिकर ।
'पण्डितः पुस्तकी भवति'क उक्तिकेँ अहँ कएल रुचिकर ।
जीवनक संचित सकल निधि लोक कल्याणार्थ त्यागल ।
नहि हिला सकता केओ जन आइ जे अहँ खाम्ह गाड़ल ।

मिथिला मैथिल मैथिलीक हित देह सुखौलहुँ ।
मैथिलीक मुकुलित काननकेँ विकसित कएलहुँ ॥
साहित्ये नहि अहाँ ओकर पुनि स्रष्टा रचलहुँ ।
मिथिला केर एहि दिव्य भूमिकेँ स्वर्ग बनौलहुँ ॥

सम्पादनमे श्रेष्ठ जे, कवि-लेखान गम्भीर ।
अभिधा-लक्षण-व्यंजना, विहुँसि चलाबथि तीर ॥
विहुँसि चलाबथि तीर बुझथि सुधरथि अबुधो जन ।
कल-बल-छल नहि हृदय करथि आदर सभकेँ मन ॥
अकादमी सम्मानक जे कयलनि आस्वादन ।
करथि निरीह आर्त्त जनहुक कार्यक सम्पादन ॥

(वसुधैव कुटुम्बकम् : मिथिला सांस्कृतिक परिषद, जमशेदपुर, स्मारिका 2006)

V

स्वार्थसाधनविरत । सतत मृदुभाषण एवं परहित साधनरत किन्तु अहंकार ओ ममकारविरत । हमरा जनैत वर्त्तमान समयमे भीम भाइ अद्वितीय छथि – की गद्य की पद्य, की इतिहास की समालोचना, की भाषण की वाचन, की भूमिका की उपसंहार– सभ क्षेत्रमे शीर्षस्थ । यद्यपि हमर एहन उद्घोषणा बहुतोकेँ ने रुचतनि ने पचतनि । मुदा सभक अपन दृष्टि छैक, अपन बौ□क क्षमता छैक, अपन मापदण्डक आधार छैक । भीम भाइ निर्विकार, सुजन–दुर्जन सभक संग समान व्यवहार कयनिहार थिकाह, जनिका हेतु **वसुधैव कुटुम्बकम्** चरितार्थ होइछ ।

मैथिली जगतमे—

1. हिनका छोड़ि के एहन भाग्यशाली छथि जनिका कविचूड़ामणिक पद्यब□ एतेक पत्र भेटल होयतनि जे एकटा पोथीक रूप धारण कयलक ?
2. हिनका छोड़ि के एहन दाता जे अपन सेवाकालहिमे अपन विशाल पुस्तकालय दान कए देलनि ?
3. हिनका छोड़ि के एहन साहित्यकार जे अपन सेवाकालक पूर्वा□हिमे साहित्य अकादेमी सन संस्थाक सम्मानसँ सम्मानित भेल होथि ?
4. हिनका छोड़ि के एहन प्राध्यापक जे मात्र तेरहे वर्षमे मेधाप्रोन्नतिक आधारपर विश्वविद्यालय प्राचार्य बनि गेल होथि ?

हमरा जनैत सभक उत्तर एकेटा – भीम भाइ । तेँ हमरा आश्चर्य लागल जे एहन विशिष्ट व्यक्तित्वक लोक कोना अपनाकेँ एतेक सरल, विनम्र आ सर्वजन सुलभ बनाए सकैत अछि । जनिका भाइ कहबामे हम स्वयं संकोचक अनुभव करैत छी, तनिकर भाइ हम कोना ? एहन भीम भाइकेँ हम पद्यक माध्यमे अभिनन्दन करैत छियनि—

मन आङनमे ठाढ़ अचल नगपतिक सदृश नित ।
ज्ञान–गंग केर सबल **त्रिधारा** बहबी अहँ सित ।।
अहँक वाक्‌पटुता **विविधा** स्वर **वीणा** झंकृत ।
मैथिलीक साहित्य–यानमे **धूरी** अंकित ।।
सतत सृजनरत विरत नहि, सभक संग हिलिमिलि रहब ।
मृदुल हास परिहासरत, ककरहु नहि कुवचन कहब ।।

मनुक्ख मानबा ले' तैयार छथि—

भाषा–संस्कृतिकेँ जे क्यो प्राणोपम मानय
देश–समाजक हित–क्षतिकेँ जे निज कय जानय
अपन देश–कोसक मनुक्ख से, से यश पाओत
मैथिलीक अधिकार–यु□केँ जे सुढ़ियाओत

—बाजि उठल मुरली, पृष्ठ सं.–80

बहुत गोटे पढ़ियो–लिखिकऽ आ बिनु पढ़नहुँ अपन मातृभाषाक प्रति उदासीन भाव देखबैत छथि । एहन व्यक्ति सतत हिन्दी किंवा कोनो अन्ये भाषाक प्रयोग करबाक चेष्टामे रहैत छथि, मैथिली बजबामे वा अपनाकेँ मैथिल कहबामे लज्जाक अनुभव करैत छथि । अपन सन्तानकेँ माँ आ बाबू नहि सिखाकऽ मम्मी, डैडी, पापा, अन्टी आदि सिखयबाक प्रयास करैत छथि । वस्तुतः एहन व्यक्ति मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक नामपर कलंक छथि । कवि एहन व्यक्तिपर गूढ़ व्यंग्य करैत छथि –

घरक गोसाउनि झँखथि अन्हारे मन्दिर बारब दीप ।
गाम नोत नहि, नोत बेलाही जड़ि तजि पकड़ब छीप ।
जखन मैथिली सूपक भाटा भेल संकटापन्न ।
की राष्ट्रियता ? देश–भक्ति की ? के गौरव–सम्पन्न ?

—बाजि उठल मुरली, पृ. सं. – 82

कवि विभिन्न प्रकारक छन्दक प्रयोग कऽ अपन काव्य–प्रतिभाक परिचय दैत छथि । एक दिस जँ ई प्राचीन परम्पराक अनुयायी बनि राग, ताल, लयाश्रित काव्यक सृजन करैत छथि तँ दोसर दिस वर्तमान काव्यधाराक दिशाक चिन्तन करैत किछु मुक्तको लिखि गेलाह अछि । किन्तु हिनक मुक्तवृत्तियोमे जेना भीतरसँ स्वरक (लयक) झंकार बुझाइत अछि । एकटा उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

जानि ने ओ कोन क्षण छल
अमङ्गल मनहूस !
मनुज मनमे स्वार्थ कयलक वास !
एक दोसराकेँ अपन हित–हेतु
करऽ लागल ध्वस्त सत्यानाश ।

—बाजि उठल मुरली, पृष्ठसंख्या – 87

कविवर मोहन जखन शब्दालंकारक प्रयोग करऽ लगैत छथि तँ बुझि पड़ैछ जे ई मधुपजीक अनुयायी बनऽ चाहैत छथि । शब्दालंकारक विन्यास जेहन कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र मधुपजी कयने छथि तेहन कोनो आन कवि नहि । किन्तु मोहनजी बहुत

अंश धरि अपनाकेँ ओहि मार्गपर आगू बढ़ौलनि । हिनक यमक अलंकारक विन्यास जँ देखबाक हो तँ निम्नांकित पाँतीकेँ अवश्य देखू—

कानब सुन क्यो कान न कानन-सन जग रे ।
जन विच दु:खक असर न अशरण सभ लग रे ॥
बीतय यौवन असगर सगर रयनि दुख रे ।
अछि नहि शान्तिक लेश कलेश-मलिन मुख रे ॥

–बाजि उठल मुरली, पृष्ठसंख्या-112

उपर्युक्त पाँतीमे 'कान न' –'कानन', 'असर न'–'अशरण', 'असगर'–'सगर', 'लेश'–'कलेश', इत्यादि शब्दसँ यमक अलंकार स्पष्ट अछि ।

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' जेहने सि□हस्त कवि छलाह तेहने गम्भीर लेखक सेहो । यद्यपि हिनक कोनो प्रकाशित गद्यग्रंथ देखबामे नहि अबैछ, किन्तु छिटुफुट निबन्ध तँ अवश्ये दृष्टिगोचर होइछ । हँ, ई भऽ सकैछ जे ओ निबन्धसभ हिनक मोहनहि टा नामसँ नहि, छद्मनामसँ सेहो होइनि । ई गद्य लिखबामे केहन सि□हस्त छथि से तँ 'बाजि उठल मुरली'क भूमिके देखिकऽ क्यो जानि सकैछ । कविक गद्योसँ पद्येक गन्ध अबैत अछि । उक्त पोथीक भूमिका 'कवि आ कविता : दशा आ दिशा' शीर्षकक अन्तर्गत कवि कोन प्रकारेँ कविक परिभाषा देलनि अछि से तँ देखू—

"कवि माने प्रस्फुटित पुष्प, जतऽसँ पराग झहरय आ मकरन्द सरबय । कवि माने उदित इन्दु, जतऽसँ मादक ज्योत्स्ना पसरय आ आह्लाद बरिसय । कवि माने स्वच्छ उच्छल निर्झर, जतऽसँ निर्मल सलिल-स्रोत बहय आ झहर-झहर संगीत-सुर निनादित होइत रहय ।''

कविता—

"कविता माने कविक जीवन-जगतक दर्शनरूपी तड़िपत-पोथी । कविता माने कविक आचार-विचारक चित्रित मूर्त्त-रूप, चिन्तन-मननक यथातथ्य बिम्ब-प्रतीक । कविता माने कविक व्यक्तित्व-कृतित्वक निचोड़ । कविता माने कविक प्रतिभा-मेधाक सार पदार्थ— नेनु । कविता माने सृष्टिक समस्त सौन्दर्य-राशिक आकलित-संचित केन्द्र-बिन्दु ।"

—भूमिका, बाजि उठल मुरली, पृष्ठसंख्या-1

केहन विलक्षण परिभाषा अछि ! केहन सुमधुर भाषा अछि ! आइ धरि प्राय: सभ क्यो काव्यशास्त्रक विषयक प्रतिपादन करबामे संस्कृत आचार्यलोकनिक मतक उल्लेख करैत छलाह, किन्तु मोहनजी मैथिलीक प्राध्यापक एवं छात्रगणकेँ एक नव दिशाक संकेत दैत छथि । ई नवीनता सराहनीय अवश्य ।

(मिथिला मिहिर, 22 जून 1980)

V

अछि आ हिनके मुँहसँ सुनल गप्पकेँ प्रमाणिक बुझैत अछि । ओ जे किछु बजैत छथि, जे किछु लिखैत छथि, जे किछु चिन्तन करैत छथि –सभ किछु शास्त्रसम्मत रहैत अछि, अकाट्य रहैत अछि, प्रमाणिक रहैत अछि । —हुनक सान्निध्यमे रहि जे किछु बुझबाक, गुनबाक आ देखबाक अवसर भेल ताहि आधारपर हमर ई आकलन अछि । केहन-केहन दिग्गज सभ स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे समस्या लए कए अबैत छथि आ भीम भाइ सहज रूपेँ सन्तुष्ट कए दैत छथिन । ओ पहिने मौखिके उत्तर दैत छथिन पुन: पोथी उनटाकए देखा दैत छथिन । ई कार्य हुनका हेतु आब आओरो सहज भए गेलनि अछि । जे पोथी कतहु नहि भेटत, जे पत्र-पत्रिका कतोक व्यक्ति देखनहुँ नहि होयताह, हमर विभागीय पुस्तकालयमे भीम बाबूक सौजन्यसँ उपलब्ध अछि । ई अपन जीवनक संचित एकमात्र अक्षय निधि- व्यक्तिगत पुस्तकालय (लगभग अठ गोट आलमारी कसल) बहुजनहिताय, विश्वविद्यालय मैथिली विभागकेँ दानस्वरूप दए देलनि, जाहिसँ निर्विवाद ई विभाग एक एहन स्थल बनि गेल जे साहित्यप्रेमी लोकनिक आकर्षणक केन्द्र थिक ।

लगैए जेना भीम भाइक दिमाग कम्प्यूटर होनि । एक तऽ पचासो हजार पोथी-पत्रिकामे कतए की छैक आ ताहूसँ अधिक जे किछु मिनटक अभ्यन्तरे कैटलॉग देखि ईप्सित पोथी आलमारीसँ निकालि आ अभीष्ट पन्ना उलटि कए सामने राखि देताह, बाँचि देताह, बुझा देताह । कम्प्यूटरोमे बिजलीक प्रयोजन, औपरेटरक प्रयोजन, किन्तु एहि भीम भाइ रूपी कम्प्यूटरकेँ कथूक प्रयोजन नहि । चलैत-फिरैत, बैसैत-उठैत कतहुसँ किछु पुछि दियनु, डाटा भेटय लागत, ओ चाहे मैथिली जगतक राजनीतिक उथल-पुथल हो अथवा कोनो साहित्य-संसारक सार, कोनो पत्र-पत्रिकाक पोस्टमार्टम करबाक हो अथवा कोनो थिसिसक बाइपास सर्जरी, कोनो साहित्य अकादेमीक गतिविधिक आरोह-अवरोह हो अथवा कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवेचन, विरेचन-सि□ान्त हो अथवा तरलनयन छन्द, कोनो पुरस्कार-सम्मान समारोह हो अथवा कोनो कार्यशाला-सेमिनारक क्रिया-कलाप— सर्वत्र हिनक विचार मन्तव्य, श्रोतव्य, ध्यातव्य आ कर्त्तव्य ।

सभसँ मजगर तऽ होइत छैक पी-एच०डी०क भाइभा । कैण्डिडेट भीम भाइक डरेँ त्रस्त । की पुछि देताह ? कतयसँ ? हुनक प्रश्नक जबाव हुनकहि लग रहैत छनि । कतोक बेरि तऽ शोधकर्त्ताक कोन गप्प जे हुनक निर्देशको व्य□जनाक वाणसँ बि□ भए तड़पि उठैत छथि, पसेना-पसेना भए जाइत छथि, जोर-जोरसँ निसास छोड़ए लगैत छथि आ पुन: भीम भाइ हँसैत-सम्हारैत सभकेँ सन्तुष्ट करैत छथि । कखनहुँ सिरियस नहि, कखनहुँ बौखलायल नहि । सतत अधरपर स्मित हास, कखनहुँ अट्टहास नहि । सतत अध्ययन-अध्यापनरत, कखनहुँ शास्त्रविरत नहि । सतत जिज्ञासा समीक्षारत, कखनहुँ सहृदय सुजनविरत नहि । सतत अनुसंधान आ समस्याक समाधानरत, किन्तु छिद्रान्वेषण आ दोषारोपणविरत । सतत साहित्यसृजन एवं पुस्तक-संचयनरत किन्तु कटुवाचन एवं

भीम भाइ

हम हिम्मत बटोरि कए लेखनी उठबैत छी, कागतक पन्ना उलटि सामने रखैत छी, किछु चिन्तन करए लगैत छी आ पुनः किछु समयक पश्चात् पन्ना बन्न कए लेखनीकेँ विराम दए दैत छिऐक । ई क्रम लगातार तीन-चारि खेप चलल ।

वस्तुतः भीम भाइ ओ अथाह सागर थिकाह, जाहिमे डुबकी लगएबाक हमरा साहसे नहि होइत अछि, तखन ओहि रत्नाकरक गर्भमे प्रवेश कए, ओकर मन्थन कए, ओहिसँ अमूल्य रत्नकेँ प्राप्त करब कोना सम्भव होएत ? हमरा सन स्थूल बुि□बलाकेँ तऽ कछेड़मे पड़ल डोका-सितुआ सैह ने हाथ लगतैक ! मुदा जे किछु । आइ आठ-दस वर्षसँ संग रहबाक सौभाग्य जे भेटल ! हिनक आदर्श चरित्र, कर्त्तव्यनिष्ठता, भाषामृदुता, उदारता आ सहिष्णुता सतत हमरा आकृष्ट करैत रहल । हिनक विद्वत्ताक प्रसंग हमरा किछु कहबाक प्रयोजने नहि – 'देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हें ।' हिनक अनुजतुल्य स्नेह आ मार्गदर्शन सतत हमरा स्वपथपर अग्रसर होएबामे सहायक रहल अछि ।

भीम भाइ हमरो भाइ, अहुँक भाइ आ सभक भाइ थिकाह । हमर ई कथन निराधार नहि । एक दिनक गप्प थिक । हम फोनक नम्बर लगौलियनि । घंटी बजलैक । भीम भाइक आवाज । प्रणाम सर ! हम रमण झा । कहिते उत्तर भेटल— भाइ ! की समाचार ? हम अवाक् रहि गेलहुँ । प्रायः नहि चिन्हलनि । हम पुनः कहलिएनि— सर ! हम अपनेक विभागीय रमणजी । हँ, हँ, चिन्हलहुँ । चिन्हब किएक ने ? फोन उठएबासँ पहिनहि अहाँक नम्बर देखि लेने छलहुँ । ...तऽ भाइ सम्बोधन ? हमरा तेँ संदेह भेल ? ओ कहलनि— हुँ । कतोक दिनधरि इएह चिन्तनमे लागल रहलहुँ जे एहन उदार चरित्रवला व्यक्तित्व मैथिली जगतमे दोसर के ? जेहने उद्यमी तेहने परिश्रमी, जेहने विद्याव्यसनी तेहने पुस्तकसंचयी, जेहने पत्रकारिता तेहने पत्राचारिता, जेहने वर्ग-संभारण तेहने म□च-संचालन - भीम बाबू सभमे अद्वितीय । तैँ ने हमरा आश्चर्य भेल जे एहन विशिष्ट व्यक्तित्व, जनिका समक्षमे उपस्थित होइतहिँ लोक अपन सभ किछु बिसरि जाइत

प्रो. उमानाथ झा

मिथिला महिमण्डलक मान बढ़ओनिहार, मैथिली भाषा-साहित्यक भण्डारकेँ अक्षय कृतिसँ भरनिहार, आङ्लभाषाक मूर्धन्य विद्वान् रहैत संस्कृत-साहित्यक सरोवरमे डूबि कए ओकर रस पिनिहार, मैथिली कथा-साहित्यकेँ नव दिशा प्रदान कयनिहार, सतत स्मित-हास ओ मृदुल वाणीसँ श्रोताक ह्रदयकेँ जितनिहार, अत्यन्त गम्भीर ओ तेजस्वितापूर्ण-आनन युक्त व्यक्तित्व प्रो० श्री उमानाथ झाक प्रसंग किछु कहबासँ पूर्व हमरा बेरि-बेरि रामचरितमानसक ओहि पंक्तिक स्मरण भऽ अबैत अछि—

देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे ।

वस्तुतः सूर्यक प्रकाशकेँ देखयबाले' ककरो प्रयोजन नहि, शरद□तुक पूर्णचन्द्रकेँ चिन्हयबाक काज की ? दुनूमे आकर्षण छैक, आह्लादकता छैक, अन्हारसँ निकालि प्रकाशमे अनबाक क्षमता छैक— **तमसो मा ज्योतिर्गमय** । प्रो० झाक आदर्श जीवन, निष्कलंक चरित्र, कर्त्तव्यनिष्ठता, बहुभाषाविज्ञता, पाण्डित्य, काव्यकलाकौशल अवश्यमेव मिथिला□चलक ओहि भूभागकेँ गौरवान्वित कयलक जतय हिनक जन्म भेल अछि ।

जन्म—

प्रो० उमानाथ झाक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत महरैल ग्राममे एक जनवरी 1923 ई० केँ भेलनि । महरैल ग्राम झंझारपुर रेलवे स्टेशनसँ किछुए दूर उत्तरमे अवस्थित अछि । ई 'नरोनए पूरे' मूलक पराशर गोत्रीय श्रोत्रिय ब्राह्मण थिकाह । हिनक पिता पण्डितप्रवर कलानाथ झा एवं पितामह पंडित रघुनन्दन झा तथा प्रपितामह पण्डित चुम्मन झा छलथिन । हिनक घर विशु□ पंडितक घर थिक जतय कतोक पुस्तसँ पण्डिते पण्डित भेल छथि । हिनक पिता पंडित **कलानाथ झा** (महामहिमोपाध्याय— भारती परिषद्, प्रयाग, जे बनारसक म० म० जयदेव मिश्रक शिष्य छलाह) संस्कृतक नीक पण्डित मानल जाइत छलाह जे पैघ अन्तराल धरि मधुबनी जिलान्तर्गत लोहना पाठशालामे (जकरा विद्यापीठक

दर्जा भेटल छलैक, जे स्नातकोत्तरक समकक्ष होइछ आ जतय व्याकरण, साहित्य, न्याय, दर्शन, ज्यौतिष आदिक नीक अध्यापन होइत छल) प्रधानाध्यापकक पदकेँ सुशोभित कयलनि । प्रो० झाक पितामहभ्राता **तेजनाथ झा** (प्रकाशित कृति— भक्ति प्रकाश— 1901, गौरीशंकरविनोद नाटक—1912, रामजन्म— 1924, कुण्डलिया रामायण— 1925, सुराजविजय नाटक— 1995) छलाह जनिका दुइ गोट पुत्र छलथिन— पण्डित **मथुरानाथ झा** (बनारसक महामहोपाध्याय शिवकुमारमिश्रक शिष्य आ लक्ष्मीवती संस्कृत प्राचीन टोल विद्यालयक पूर्व प्रधानाचार्य) एवं पण्डित **मणिनाथ झा** एवं पौत्र सभ छलथिन— पण्डितप्रवर **श्याम सुन्दर झा** (संस्कृतमे राष्ट्रपतिसम्मान प्राप्त— 1995, काव्यतीर्थ, व्याकरणतीर्थ; प्रकाशित कृति— राजलक्ष्मीचरितम्— काव्य— 1970, रमेश्वरचरित आ शिवराजविजय टीका— अप्रकाशित; पूर्व प्रधानाचार्य— कीर्त्तिनारायण कामाख्या संस्कृत महाविद्यालय, महरैल; पूर्व प्राचार्य— देवधीरा संस्कृत कॉलेज, दीप), पण्डित **मोतीनाथ झा** (पूर्व प्रधानाध्यापक— भैरवी भैरवेश्वर संस्कृत विद्यालय, झंझारपुर), पण्डित **निरसन झा** (पूर्व प्रधानाध्यापक एस. एस. उच्च विद्यालय, जयदेवपट्टी; संस्थापक अवैतनिक प्रधानाचार्य— संस्कृत महाविधालय, जयदेवपट्टी) तथा **श्री युगनाथ झा** ।

मातृपक्ष—

प्रो० उमानाथ झाक पितृपक्ष यदि विशिष्ट पण्डित लोकनिसँ मण्डित छल तऽ हिनक मातृपक्ष सेहो कम महत्त्वक नहि । हिनक मातृपक्षक सभसँ पैघ वैशिष्ट्य ई छल जे ओहि परिवारकेँ राज परिवारसँ अत्यन्त निकट सम्बन्ध छलैक अर्थात् हिनक मातामह स्व० तीर्थमणि झाक बहिनक विवाह स्वयं महाराज रमेश्वर सिंहसँ भेल छलनि । तीर्थमणि झा सकरी-झंझारपुर रोडक किनारमे अवस्थित खररख ग्रामक निवासी छलाह जनिका दुइ गोट बालक-बलभद्र झा (ज्येष्ठ) तथा दयानाथ झा (छोट) एवं दुइ गोटि कन्या-बरगोरिया रघुनन्दनजीक पत्नी (ज्येष्ठा) तथा उमानाथ बाबूक माय (कनिष्ठा) भेलथिन । राज परिवारसँ निकटता रहनहुँ ई लोकनि ओहिसँ लाभान्वित नहि भेलाह अपितु समय-समयपर राजाक कोपभाजने बनय पड़लनि । हिनक मातृपक्षहिमे 'कृष्ण-जन्म'क रचयिता मनबोध भेल छलाह ।

पितृमातृक—

प्रो० झाक पितृमातृक मधुबनी जिलान्तर्गत गंगौली ग्राम थिकनि । स्व० गोविन्द मिश्र एवं स्व० आद्यानाथ मिश्र हिनक पिताक ममियौत भाइ छलथिन । दुखक गप्प जे आइ हुनका लोकनिक केओ उत्तराधिकारी नहि रहलथिन ।

प्रो० झाक पितृपक्षपर सरस्वतीक असीम अनुकम्पा रहलनि । हिनक पितृपक्षकेँ एहि तालिकासँ स्पष्ट कयल जा सकैछ—

रचना—

प्रो० उमानाथ झा छात्रावस्थहिसँ सर्जनात्मक क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि । अंग्रेजीक प्रति विशेष लगावक कारण ई प्रथम कथा अंग्रेजीएमे लिखलनि— 'Lost Child' आ सेहो ओहि समयमे जखन ई द्वितीय वर्षक छात्र छलाह । ओही समयमे आचार्य रमानाथ झाक प्रेरणासँ संकलनमे देबाक हेतु मैथिलीमे सेहो कथा लिखने रहथि । डॉ० अमरनाथ झा सेहो हिनका मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा देलथिन, ई कहैत जे अंग्रेजीमे कतबो लिखब तऽ विदेशी सभ मोजर नहि देत । अतः अंग्रेजीक गम्भीर विद्वान् रहितहुँ, संस्कृतक पर्याप्त अध्ययन छलनि किन्तु विशेष लाभ मैथिलीये साहित्यकेँ भेलैक । एतय हिनक किछु प्रमुख कृतिक मात्र नामोल्लेख करब हमर उद्देश्य अछि कारण जे ओहि सभपर थोड़बो चर्चा कयने विस्तारक भय अछि ।

1. **रेखाचित्र :** मैथिली कथा-संग्रह - 1951, पृ.सं. 157, तीरभुक्ति पब्लिकेशन, प्रयाग ।
2. **अतीत :** मैथिली कथा-संग्रह - 1984, पृ.सं. 68, मैथिली अकादमी, पटना ।

सम्पादित पोथी :

1. **मैथिली नवीन साहित्य :** 1945
2. **इन्द्रधनुष :** 1967
3. **विद्यापति गीतशती :** 1972, साहित्य अकादमी प्रकाशन (एकाधिक संस्करण भेल)
4. **पूर्वा□चलीय भाषा साहित्य एवं संस्कृतिक पारस्परिक प्रभाव :** (चेतना समिति, पटना) - 1972
5. **श्री अरविन्द** (अनुवाद) 1982 (साहित्य अकादमी, दिल्ली)
6. **Literary and Linguistic Studies** - 1974

प्रो० उमानाथ झा एहन कीर्त्तिमान पुरुष छथि जे अपन कृति, मेधाविता, कार्यकुशलता, अध्यापन, प्रशासन एवं लोकप्रियताक कारण अमर रहताह । यावत् धरि मिथिला रहतीह, मैथिली साहित्य रहत, हिनक नाम श्र□ा एवं गौरवक संग लेल जाइत रहत ।

('कीर्त्तिर्यस्य स जीवति' प्रो. उमानाथ झा अभिनन्दनग्रंथ— 2003)

V

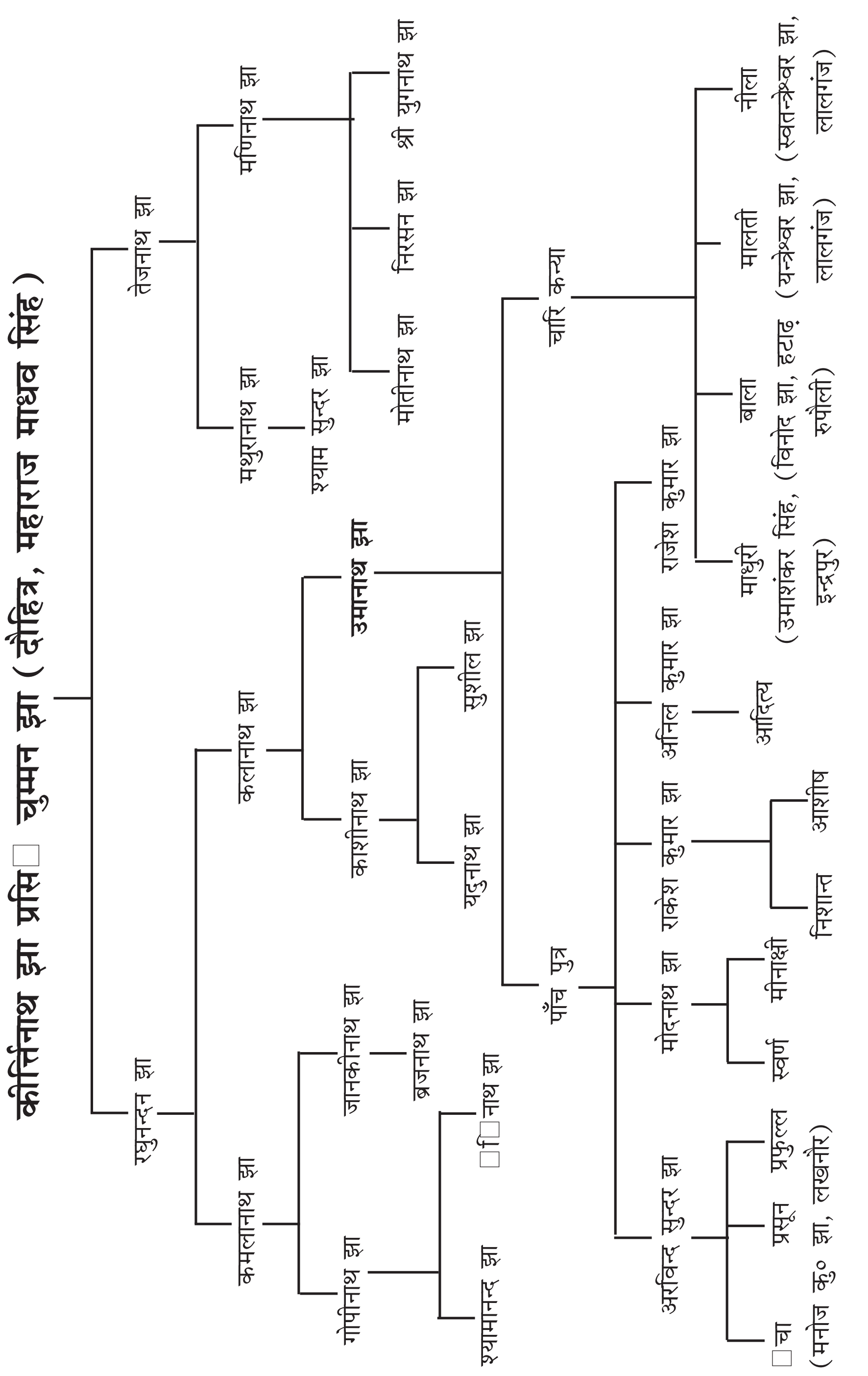
रहथि । झट दए उत्तर देलथिन– ‘‘सर ! हम नहि डिसाइड कए सकलहुँ । अहाँ हमर गार्जियन छी तेँ जे उपयुक्त होअए से कहल जाए ।’’ ओ आरा ज्वाइन करबाक अनुमति देलथिन कारण जे ओतय परमानेंट पद रहैक आ तेँ ई प्रथम ज्वाइनिंग H.D. Jain College आरामे देलनि । ओतय मात्र छओ सप्ताह रहि सकलाह । ओही बीच हिनका L.S. College मुज□फरपुर (ई स्वतन्त्रतासँ पूर्व जी०बी०बी० कालेज रहैक) सँ नियुक्तिपत्र भेटलनि आ जनवरी 1945 मे ई ओतय ज्वाइन कए लेलनि । 1945 सँ 1958 पर्यन्त ई L.S. College मे अंग्रेजीक अध्यापन कए पूर्ण यश प्राप्त कयलनि । हिनक प्रतिभा, कार्य-कुशलता, व्यापक अध्ययन, गहन अनुभूति तथा विलक्षण अभिव्य□जनाक प्रभाव तऽ अपन क्षेत्रपर पड़बे कयल अपितु नेपाल सरकार भारत सरकारसँ दू वर्षक हेतु हिनका माङि लेलक । ई 1958 ई० मे गॅवर्नमेंट ऑफ इण्डियाक डिप्युटेशनपर दू वर्षक हेतु त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमाण्डू चल गेलाह मुदा दू वर्षक बदलामे हिनका ओतय पाँच वर्ष रहय पड़लनि । परिणामतः ई 1963 ई०मे पुनः भारत आबि मगध विश्वविद्यालयमे अंग्रेजी विभागाध्यक्षक पदकेँ सुशोभित कयलनि । 1963 सँ ’68 पर्यन्त ई ओतय उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष बनल रहलाह । 1968 ई०क जुलाइमे ई पटना विश्वविद्यालयमे अपन योगदान कयलनि । 1975 ई० मे प्रो० झा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्षक पद ग्रहण कयलनि आ तत्पश्चात् जून 1980 मे हिनका एही विश्वविद्यालयक प्रतिकुलपतिक पदकेँ गौरवान्वित करबाक अवसर भेटलनि आ एहि तरहेँ ई जनवरी 1983 पर्यन्त, अर्थात् अवकाश ग्रहण करबाक तिथि धरि पदपर बनल रहलाह ।

अनेक संस्थाक सदस्यता–

प्रो० उमानाथ झा अपन कार्यकालमे कतोक बेरि सिनेट सिण्डिकेटक सदस्य बनल रहलाह । 1975 ई०मे प्रो० झा चेतना समितिक लाइफ मेम्बर बनलाह । 1969सँ 1972 धरि भाइस प्रेसिडेन्ट तथा 1973सँ ’75 धरि प्रेसिडेन्ट सेहो रहलाह । 1976 सँ ’80 धरि मैथिली अकादमीक कार्यकारिणीक सदस्य छलाह तथा साहित्य एकेडमी दिल्लीक मैथिली एडभाइजरी बोर्डक मेम्बर सेहो 1968सँ ’72 ई० धरि रहलाह । ई Indian Association for English Studies केर लाइफ मेम्बर छथि। 1964 सँ ’66 पर्यन्त एकर कार्यकारिणीक सदस्य सेहो रहलाह ।

सम्मान–

प्रो० झाकेँ 1984 ई० मे मैथिली अकादमी पटनासँ **ताम्रपत्र**सँ सम्मानित कयल गेलनि । 1987 ई०मे हिनका **अतीत** कथा संग्रहपर **साहित्य एकेडमी पुरस्कार**सँ सम्मानित कएल गेल । 1988 ई०मे चेतना समिति, पटनाक दिससँ हिनका **ताम्रपत्र**सँ सम्मानित कयल गेलनि ।



शिक्षा संस्कार—

प्रो० उमानाथ झाक प्रारम्भिक शिक्षा घरहिमे भेल, संस्कृतेक माध्यमे । आरम्भहिमे हिनका अनेक संस्कृतक श्लोक सभ, अमरकोष इत्यादि रटाओल गेल । उपनयनक दू वर्षक बादे ई सर्वप्रथम विद्यालयक मुँह देखलनि । हिनक उपनयन संस्कार 1929 ई० मे भेल आ ओही वर्ष महाराज रमेश्वर सिंहक देहावसान सेहो । हिनक आचार्यगुरु पं० मथुरानाथ झा भेलाह जे हिनक विद्या व्यवसायक गुरु सेहो रहथि । 1931 ई० मे हिनक नामाङ्कन एम० एल० एकेडमी सरिसबमे पाँचम कक्षामे भेल । 1933 ई० मे ई मिड्ल बोर्ड प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह जकर परीक्षाक केन्द्र छलैक वाट्सन स्कूल मधुबनी । सरिसब स्कूल प्रो० झाक गामसँ काफी दूर छैक तथापि राजनीतिक कारणसँ हिनका ओतहि प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करय पड़लनि । यद्यपि राज-परिवारसँ सम्बन्ध-सम्पर्क रहने हिनका दरभङ्गामे पढ़बाक सुविधा भेटि सकैत छलनि किन्तु हिनक पिता पं० कलानाथ झा स्वाभिमानी रहथि आ तेँ महाराज कामेश्वर सिंहक समुद्रयात्राक विरोध करैत महाराजक संग भोजन नहि कयलनि । हुनका डेनवी साहेबक एकटा पत्र भेटल रहनि जे अहाँ महाराजक संग भोजन कए सकैत छी वा नहि ? पंडित जी कोनो जवाब बिनु देनहि महाविद्यालयक प्रधानाचार्यक पदसँ त्यागपत्र दए देलनि । एहन स्थितिमे प्रो० झा अपन पितृमातृक गंगौलीमे रहि सरिसब स्कूल गेलाह, संगहि पिताक ममियौत भाइ स्व० गोविन्द मिश्रसँ अंग्रेजी एवं संस्कृत पढ़लनि ।

आठम कक्षामे प्रो० झा दरभङ्गामे नाम लिखाय सकलाह किन्तु प्राकृतिक आपदा अर्थात् 1934 ई०क प्रलयंकारी भूकम्पक कारण हिनका नामांकनमे दू मास देरी भऽ गेलनि आ तेँ जिला स्कूलमे नाम नहि लिखा सकलनि, राजस्कूलेक शरण धयलनि । पढ़बामे तेज रहबाक कारण हिनका मैट्रिकुलेशन परीक्षामे डिस्ट्रिक्ट स्कॉलरशिप भेटलनि ।

उच्च शिक्षाक हेतु प्रो० झा पटना गेलाह आ ओतय साइन्स कॉलेजमे नामाङ्कन करओलनि जाहिमे हिनक विषय छल-केमिस्ट्री, फिजिक्स एवं गणित तथा अंग्रेजी अनिवार्य विषयक रूपमे । अतिरिक्त विषयक रूपमे ई जर्मन सेहो रखने छलाह । 1940 ई०मे प्रो० झा आइ०एस-सी० प्रथम श्रेणीमे पास कयलनि । बी०ए०मे ई अंग्रेजीमे आनर्स रखलनि । अंग्रेजी ऑनर्समे हिनका सेकेण्ड क्लास भेटलनि । एम०ए० (अंग्रेजी)मे सेहो सेकेण्ड क्लास भेल रहनि ।

संतति—

प्रो० उमानाथ झाक विवाह स्व० गोपीनन्द झा (लोहना)क कन्यामे भेलनि जाहिमे हिनका पाँच पुत्र एवं चारि कन्या छथिन । ज्येष्ठ पुत्र डॉ० अरविन्द सुन्दर झा सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर रसायनशास्त्र विभागमे विश्वविद्यालय

प्रचार्यक पदकेँ सुशोभित करैत छथि । हुनक विवाह 1974 ई०मे राजकुमार जीवेश्वर सिंहक कन्यामे भेलनि जाहिमे हिनका एक कन्या □चा तथा दुइ बालक प्रसून एवं प्रफुल्ल छथिन । दोसर पुत्र श्री मोदनाथ झा भूगर्भ शास्त्रमे एम० एस-सी० छथि । हुनका दुइ गोट कन्या छथिन— स्वर्णा एवं मीनाक्षी । तेसर पुत्र श्री राकेश कुमार झा, पी० ओ०, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौरमे ए० जी० एम० रैंकमे छथि, जनिका दुइ पुत्र— निशान्त एवं आशीष छथिन । चारिम पुत्र डॉ० अनिल कुमार झा, एम० डी० (कार्डियोलॉजी) हैदराबादमे कार्यरत छथि जनिका मात्र एकहिटा पुत्र छथिन— आदित्य तथा पाँचम पुत्र श्री राजेश कुमार झा, बी० एस-सी० (एग्रिकल्चर), पी० ओ०, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, सम्प्रति जबलपुरमे पदस्थापित छथि ।

चारि गोटि कन्यामे श्रीमती माधुरी एवं श्रीमती बाला डॉ० अरविन्द सुन्दर झासँ जेठि तथा श्रीमती मालती एवं श्रीमती नीला श्री मोदनाथ झासँ छोटि तथा श्री राकेश कुमार झासँ जेठि छथि । श्रीमती माधुरीक विवाह श्री उमाशंकर सिंह (इन्द्रपुर)सँ जे रिटायर्ड मैनेजर एन० पी० सी० सी० छथि । श्रीमती बालाक विवाह हटाढ़-रुपौलीक श्री विनोद झा, आइ०ए०एस०सँ भेलनि । श्रीमती मालतीक विवाह डॉ० यन्त्रेश्वर झा (एम० डी०) लालगंजसँ तथा श्रीमती नीलाक विवाह लालगंजेक डॉ० स्वतन्त्रेश्वर झासँ, जे ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर रसायनशास्त्र विभागमे प्राचार्यक पदपर कार्यरत छथि ।

विद्या व्यवसाय—

प्रो० उमानाथ झा जहिया आठम पत्रक परीक्षा दैत रहथि तहिये पटना विश्वविद्यालयक रजिस्ट्रारक एक गोट पुर्जी भेटलनि— ''यदि अहाँ योगदान करए चाही तऽ विश्वविद्यालयकेँ अहाँक सेवा स्वीकार छैक ।'' हिनक उत्तर भेलनि— ''परीक्षाक झमारक कारण एखन थाकल छी । दू मास आराम करब ।'' दू मासक बाद रिजल्ट निकललनि आ तत्पश्चात् पटना विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक तत्कालीन अध्यक्ष कलिमुद्दीन अहमद हिनका एकटा तिनपैयाही पोस्टकार्ड लिखलथिन— ''यदि अहाँ ज्वाइन करए चाही तऽ ज्वाइन कए लियऽ ।'' ओहि समयमे पटना कालेजक प्रधानाचार्य Batheja रहथि जे हिनका देखितहि पुछलथिन— "Have you come to join ? This is purely temporary." ओहि समयमे हिनका H.D. Jain College आरामे परमानेंट पद भेटैत छलनि तेँ किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए गेलाह आ विचारबाले' समय मङलथिन । हिनका 24 घंटाक समय भेटलनि । ई अपन हितचिंतक कलिमुद्दीन साहेबसँ विचार कयलनि तऽ ओ हुनकहिसँ परामर्श लेबाक गप्प कहलथिन । प्रातः जखन उमानाथ बाबू ओहि प्रधानाचार्यक समक्ष पहुँचलाह तऽ ओ देखितहि पुछलथिन— "Young man ! What have you decided ?" ओहि समयमे प्रधानाचार्यसँ भेँट करबाले' पूर्वहिमे समय निर्धारित करए पड़ैक मुदा ई तऽ बजाओल

नहि होइछ । चन्द्रकान्तमणिक प्रभावसँ ओकर दाहक क्षमता क्षीण भए जाइत अछि। भारतीय दर्शन तँ अध्यात्म शास्त्रक आधारपर सि□ करैत अछि जे पूर्व जन्मार्जित संस्कारक आधारेपर मनुष्यकेँ जीवनमे सुख-दुःख, उन्नति-अवनति, जीवन-मरण, करुणा-व्यथा, दया-क्रोध इत्यादिक भोग करए पड़ैत छैक ।

ज्योतिषशास्त्रक सभसँ पैघ उपयोग अछि जे मनुष्य अपन भावी दुःख-सुखक अनुमान समयसँ पूर्वहि कए लैत अछि जहि आधारपर आगम दुःखकेँ सुखमे परिवर्तित करबाक प्रयास कए सकए ।

भाग्य आ पुरुषार्थ दुनूमे अन्योन्याश्रय संबंध अछि । कतहु-कतहु पुरुषार्थ भाग्यकेँ पछाड़ि दैत छैक तऽ कतहु-कतहु पुरुषार्थ भाग्यसँ पराजित भए जाइत अछि । मनुष्यक विश्वास छैक जे पुरुषार्थवान व्यक्ति विधाताक लेखकेँ बदलि सकैत अछि, अपन भाग्यकेँ चमका सकैत अछि, एहि प्रसंग डॉ० नेमिचन्द शास्त्रीक कथन पूर्ण समीचीन बुझि पड़ैत अछि–

''मेरी तो दृढ़ धारणा है कि जहाँ पुरुषार्थ प्रबल होता है, वहाँ अदृष्ट को टाला जा सकता है अथवा न्यून रूप में किया जा सकता है । कहीं-कहीं पुरुषार्थ अदृष्ट को पुष्ट करनेवाला भी होता है । लेकिन जहाँ अदृष्ट अत्यन्त प्रबल होता है और पुरुषार्थ न्यून रूप में किया जाता है, वहाँ अदृष्ट की अपेक्षा पुरुषार्थ हीनपर जाने के कारण अदृष्ट जन्य फलाफल अवश्य भोगने पड़ते हैं ।''

ग्रहक गतिक कारण ओकर विष आ अमृत रश्मिक सूचना भेटैत छैक । ज्योतिर्विद्केँ एहि सूचनाक सदुपयोग करैत ग्रहक फलाफलमे परिवर्तन करबाक प्रयास करबाक चाहियनि ।

ज्योतिषशास्त्रमे प्रधान ग्रह सूर्य आ चन्द्रकेँ मानल गेल अछि । सूर्यकेँ पुरुष आ चन्द्रकेँ स्त्री अर्थात् पुरुष आ प्रकृतिक रूपमे एहि दूनू ग्रहकेँ मानल गेल अछि । पाँच तत्त्वक रूपमे भौम, बु□, गुरु, शुक्र एवं शनिकेँ मानल गेल अछि । एहि प्रकृति, पुरुष आ तत्त्वक संबंधसँ संपूर्ण ज्योतिषचक्र भ्रमण करैत अछि ।

यद्यपि चन्द्रमाकेँ आकारान्त रहबाक कारणे स्त्री रूपमे परिकल्पित करब हास्यास्पद बुझाइत अछि । वस्तुतः चन्द्रमा पुरुष थिकाह आ हिनक पत्नीक नाम रोहिणी थिकनि । यैह कारण थिक जे चौठचन्द्रमे चन्द्रमाक पूजा– ''रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः'' कहिकेँ होइत अछि । एतबे नहि चन्द्रमाकेँ पुरुष साबित करबाक हेतु हम एतए एकटा प्रसि□ श्लोककेँ उ□त करैत छी जाहिमे एकटा सखी रोहिणीसँ कहैत छथि– ''हे रोहिणि ! अहाँ रात्रिकर अर्थात् चन्द्रमाक भार्या थिकहुँ । अहाँक पति व्यभिचारी छथि तेँ अहाँ हुनका वर्जन करियनु । द्रष्टव्य थिक–

पुनश्च–

□तु परिवर्तन समयमे, भूकम्पक अछि लेख ।
मकर-मेष-कर्कट-तुला-संक्रम निकट विशेख ॥[7]

मैथिली साहित्यक आधार-स्तम्भ प्रो० सुरेन्द्रझा 'सुमन'क ज्यौतिषशास्त्रमे केहन पहुँच अछि से ककरहुसँ चोराओल नहि अछि । हुनक 'मिथिला-पंचाङ्ग'सँ के परिचित नहि छी ? स्वाभाविक छैक एहन कविक काव्यमे ज्यौतिष तत्त्वक बाहुल्यक । दत्त-वती महाकाव्यक निम्नांकित पंक्ति देखल जाय जाहिमे गुरु कोन प्रकारेँ अन्य शास्त्रहि जकाँ ज्यौतिषक ज्ञान सेहो अपन शिष्यकेँ करबैत छथि—

गणित फलित नक्षत्र राशि दिन लग्न करण तिथि योग ।
ग्रह उपग्रह गति अनुगति ग्रहणहुमे ज्योतिष उपयोग ।[8]

पुनश्च सुमनजी कहैत छथि जे क्रूर ग्रहक निवारण मात्र शान्तिपाठ नहि थिक, टीपनि मात्र टिपने ग्रह नहि कटैछ, शनैश्चर सन पापग्रहक संक्रमणसँ घोर विपत्ति अयबे करत । निम्नांकित पंक्तिक अवलोकन अप्रासङ्गिक नहि होयत—

विग्रहकेँ ग्रह क्रूर मानि कय दान । शान्तिपाठ करबे की उचित निदान ?
शनैश्चरक संक्रमण काल विकाराल । टीपनि टिपने की टरइछ ग्रह-जाल ?[9]

सुमनजीक लिखल अनेकानेक रचनामे हुनक ज्यौतिषज्ञानक छाप पड़ल अछि । प्रतिपदाक पद्य द्रष्टव्य थिक—

हुनक रेवती प्रिया हन्त ! भदवा धरि बारलि एक ।
आर्द्रासँ स्वाती धरि अनुगामिनी अहाँक अनेक ॥[10]

उपर्युक्त पद्य श्रीसुमनजीक सूक्ष्म एवं संतुलित ज्योतिष ज्ञानक द्योतक थीक, कारण जे आर्द्रासँ स्वाती धरि दसटा नक्षत्र अछि (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्व फाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी, हस्त, चित्रा एवं स्वाती) जे स्त्रीसंज्ञक थीक, पुनः विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल नपुंसक आ शेष तेरह गोट पुरुषसंज्ञक । प□चाङ्गमे एकटा दैनिक नक्षत्र रहैत अछि आ दोसर लगभग तेरह दिनपर बदलैत अछि कारण जे बारह मासमे सत्ताइसटा नक्षत्रक संचार होइत छैक । पंडितलोकनि नक्षत्रक स्त्री-पुरुष योग देखि वर्षाक भविष्यवाणी करैत छथि । स्त्री-नपुंसक योग आ पुरुष-नपुंसक योगमे तथा पुरुष-पुरुष योगमे वर्षा नहि होइत अछि ।

उपर्युक्त पद्यमे श्रीसुमनजी द्वापर केर हलधर (बलराम)क तुलना कलियुगक हलधरसँ करैत कहैत छथि जे हुनका एकटा प्रिया छथिन रेवती आ सेहो 'हन्त' (स्वर्गीया) आ अहाँकेँ दसटा- आर्द्रासँ स्वाती पर्यन्त । एतऽ ध्यातव्य थिक जे अनुगामिनी

शब्दक प्रयोग कतेक सटीक छैक, कारण जे श्रीसुमनजी प्रिया कहने छथि तेँ दसोटा स्त्रीसंज्ञक नक्षत्रक नाम लेलनि अछि आ दोसर जे वस्तुतः कृषक हेतु ओहि नक्षत्रक विशेष महत्त्व अछियो ।

उत्तरा खण्डाकाव्य मध्य सेहो प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' क्रूरग्रहक कारण दुर्योग आएब तथा ग्रहक शान्ति आवश्यक बुझैत छथि । द्रष्टव्य थिक –

बुझि पड़इछ किछु तहिना सन दुर्योग । आबि तुलायल एतय क्रूरग्रह योग ॥

– – –

ग्रहक शांति दैवीक उपद्रव हेतु । क्यौ कह, सैन्य सुसज्जित रक्षा हेतु ॥[11]

महाकविलोकनि प्रायः अपन काव्यक समाप्तिपर ओकर समाप्ति–तिथिक घोषणा करैत छथि जे सामान्य पाठकक हेतु दुरूह भऽ जाइत अछि, कारण जे ओकर अर्थक संगति बैसएबाक हेतु ज्यौतिषक सूत्र 'अंकस्य वामा गतिः' केर अनुपालन करऽ पड़ैत छैक । एतऽ प्रस्तुत अछि प्रो० तन्त्रनाथझाक 'कृष्ण–चरित' महाकाव्यक निम्नांकित पद्य—

नग-विधि-वसु-शशि-शक समा, ज्येष्ठ असित अहि जीव ।
अरपल ई कृष्णाक चरण प्रणत 'मुकुन्द' अतीव ॥[12]

उपर्युक्त पद्यमे नग–7, निधि–9, वसु–8, शशि–1, 'अंकस्य वामा गतिः, सँ 1897 शाके भऽ जाइत अछि । पुनः ज्येष्ठ असित (कृष्णपक्ष) 15 अर्थात् प□चदशी तिथि भऽ जाइत अछि कारण जे अहि 5 एवं जीव 1 केर द्योतक थिक ।

ज्यौतिषीलोकनि ग्रहक स्थिति, गति, संक्रमण, क्रूरता, बलाबल, शुभाशुभ इत्यादिक आधारपर भविष्यक संकेत दैत छथि, किन्तु एतदतिरिक्त यात्रा, खेती, अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदिक लक्षण तथा शकुन–अपशकुनक विचार समाजमे होइत अछि जकर मैथिली काव्यपर सेहो प्रभाव देखबामे अबैत अछि । एतऽ हम उ□ृत करैत छी डॉ० भीमनाथ झाक 'भूकम्पसँ पहिने आ पछाति' शीर्षकक किछु अंश जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे 1988क भूकम्पक आभास हुनका पूर्वहिसँ छलनि । द्रष्टव्य थिक –

फाड़ै छल झुण्ड-झुण्ड कारकौआ कान, कत्ता दिनसँ !
छल कनैत बेर-बेर गाम भरिक श्वान, कत्ता दिनसँ !
निकलि मूस बीहरिसँ मारय छरपान, कत्ता दिनसँ !
भऽकऽ बदरंग अरे ! ऊगै छल चान, कत्ता दिनसँ ![14]

एहि तरहेँ हमसभ देखैत छी जे मिथिलामे ज्यौतिषपर लोककेँ विश्वास छैक, फलीभूतो होइत छैक, लोक एकर अध्ययनो करैत अछि, शास्त्रार्थो करैत अछि तथा विद्वानलोकनि अपन काव्यमे सेहो एकर स्थान दैत छथि । परम्परागत पण्डितवर्गक तऽ

वर्णव्यवस्था जकर अन्तर्गत चारूटा वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र अबैत अछि एकरहु उत्पत्ति ग्रहक संबंधसँ होइत अछि । भारतीय ज्योतिर्विद् लोकनिक कथन छनि जे मनुष्य जाहि नक्षत्र, ग्रह, वातावरणक प्रभावविशेषमे उत्पन्न एवं पोषित होइत अछि, ओहिमे ओही तत्त्वक विशेषता रहैत छैक । ग्रहक स्थितिक विलक्षणताक कारणेँ अन्य तत्त्वक न्यूनाधिक प्रभाव होइत अछि । देशकृत ग्रहक संस्कार एहि गप्पक द्योतक थिक जे स्थानविशेषक वातावरणमे उत्पन्न एवं पुष्ट होमएबला प्राणी ओहि स्थानपर पड़यवला ग्रहरश्मिकेँ अपन खास विशेषताक कारण अन्य स्थानपर ओहि क्षण जन्म ग्रहण कयनिहार बच्चाक अपेक्षा भिन्न स्वभाव, भिन्न आकृति इत्यादि देखबामे अबैछ । ग्रहरश्मिक प्रभाव मात्र मानवेपर नहि, अपितु अन्य स्थलज एवं उद्भिद आदिपर सेहो अवश्य पड़ैत छैक । ज्योतिषशास्त्रमे मुहूर्तक अत्यधिक महत्त्व अछि । ओकर रहस्य एहन गम्भीर अछि जे गगनगामी ग्रह नक्षत्रक अमृत, विष तथा अन्य उभयगुण युक्त रश्मिक प्रभाव सतत समान नहि रहैत अछि । गतिक विलक्षणताक कारण कोनहु क्षणमे एहन नक्षत्र अथवा वातावरण रहैत अछि जे अपन गुण आ तत्त्वक विशेषताक कारण कोनो विशेष कार्यक सि□क हेतु उपयुक्त होइत अछि ।

ग्रहक अनिष्ट प्रभावकेँ दूर करबाक हेतु जे रत्न धारण करबाक परिपाटी ज्योतिषशास्त्रमे विहित अछि तकरा कोनो तरहेँ निरर्थक नहि कहल जा सकैत अछि । एकरो पाछाँ वैज्ञानिक तर्क अछि । ई सर्वविदित अछि जे सौरमण्डलीय वातावरणक प्रभाव पाथरक रंग–रूप, आकार–प्रकार तथा पृथ्वी, जल, अग्नि तत्त्वमेसँ कोनहुँ तत्त्वक प्रधानता पर पड़ैत छैक । सम गुणयुक्त रश्मिक ग्रहसँ पुष्ट आ संचालित व्यक्तिकेँ यदि ओहने रश्मिक वातावरणमे उत्पन्न रत्न धारण कराओल जाए तऽ ओ विशेष प्रभावकारी होइत छैक । प्रतिकूल प्रभावक मनुष्यकेँ विपरीत स्वभावोत्पन्न रत्न धारण करओने विपरीत फल दैत छैक । कहबाक तात्पर्य जे ग्रहक जाहि तत्त्वक प्रभावसँ जे ग्रहविशेष प्रभावित अछि, ओकर प्रयोग ओहि ग्रहक तत्त्वक अभावमे मनुष्यपर कएने विशेष लाभप्रद होइछ । उदाहरणार्थ क्षीणचन्द्रक समयमे जन्म लेनिहार बच्चा, जकरामे चन्द्रमाक अमृत रश्मिक शक्ति उपलब्ध नहि होइत छैक, तकरा ज्योतिषी लोकनि मोती पहिरयबाक हेतु कहैत छथि, जे विशेष लाभप्रद छैक । एहिसँ शारीरिक आ मानसिक दूनू तरहक विकास समुचित रूपसँ होइत अछि । ग्रहरश्मिक प्रभाव संसारक समस्त पदार्थपर पड़ैत अछि, एहिमे कतहु संदेह नहि ।

ग्रह ककरो सुख–दुःख नहि दैत छैक अपितु ओ भविष्यमे अएनिहार सुख–दुःखक सूचक थिक । जेना पूर्वमे कहल गेल अछि, ग्रहरश्मिक प्रभावक अनुसारहि मनुष्य पर कोनहुँ प्रकारक रत्नक प्रयोग होएबाक चाही । यथा— अग्निक स्वभाव दहन करब अछि, किन्तु यदि चन्द्रकान्त मणि हाथमे लए लेल जाए तऽ ओ अग्नि दहनक्रिया करबामे सक्षम

मानव जीवनपर ज्योतिषक प्रभाव

मानव जीवनमे ज्योतिषक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । दैनन्दिन व्यवहारक अत्यन्त उपयोगी दिन, तिथि, सप्ताह, पक्ष, मास, अयन, □तु, वर्ष, पावनि–तिहारक ज्ञान एही शास्त्रक द्वारा होइत अछि । चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण इत्यादिक ज्ञानक माध्यम सेहो ज्योतिषे थिक ।

यदि मनुष्यकेँ उपर्युक्त तथ्य सभक ज्ञान नहि होइक तऽ धार्मिक उत्सव, सामाजिक पर्व, महापुरुषक जन्मदिन इत्यादिक ने तऽ ठीक–ठीक समयक ज्ञान भए सकत आ ने समयपर पूजा–पाठसँ लए पितरक कृत्य धरि सम्पन्न भए सकत । पढ़ल–लिखल लोकक तऽ गप्पे कोन जे मिथिला□चलक किंवा समस्त पृथ्वीक सामान्यो लोक एहि बातकेँ बुझैत अछि जे कोन मास आ नक्षत्रमे वर्षा होयतैक आ तदनुसार ओ बीज वपन करैत अछि, अन्यथा ओकर सभटा परिश्रम व्यर्थ भए जयतैक ।

मानव जीवनक पल–पलपर ज्योतिषक प्रभाव पड़ैत छैक । ज्योतिषशास्त्रक अन्य नाम ज्योतिःशास्त्र सेहो थिक, जकर अर्थ होइछ प्रकाश देबएबला अथवा प्रकाशक संबंधमे बुझबयबला । अर्थात् जाहि शास्त्रक माध्यमे संसारक मर्म, जीवन–मरणक रहस्य आ जीवनक सुख–दुःखक संबंधमे पूर्ण प्रकाश भेटए सैह थिक ज्योतिषशास्त्र ।

जातकक जन्म समयमे जाहि–जाहि रश्मिवला ग्रहक प्रधानता होइत अछि, तेहने ओकर स्वभाव बनि जाइत छैक । निम्नांकित उक्तिकेँ देखल जाय—

एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणांस्वमूर्तिसमयम् ।
उर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

अर्थात् संसारक प्रत्येक वस्तु आनन्दित अवस्थामे रहैत अछि आ सभपर ग्रहक प्रभाव पड़ैत छैक ।

कथे कोन जे सामान्यो कोटिक विद्वानक काव्यमे ज्यौतिष तत्त्वक प्रचुर स्थान भेटल अछि, जकर अध्ययन कऽ ओकर अर्थक संगति बुझबा हेतु मिथिला□चलक सामान्यो पाठक सक्षम रहैत छथि ।

मैथिली काव्य मध्य तऽ छिट–फुट ज्यौतिषक प्रभाव अछिए, मात्र ज्यौतिष विषयेटा पर 'डाकवचन संग्रह' तीन भागमे प्रकाशित अछि, जाहिमे ततेक ने सोझ भाषामे ज्यौतिषक सूत्र सभक व्याख्या कएल गेल अछि जे अनपढ़ो लोकक कंठमे ई समाएल अछि । अनपढ़ो लोकक मुहसँ सुनब–

केरा रोपी सोचि विचारि । शी मी भादो भदवा बारि ॥[15]

एतय 'शी' भेल एकादशी, द्वादशी इत्यादि तथा मी भेल प□चमी, सप्तमी इत्यादि । अर्थात् परीव, द्वितीया, तृतीया, चौठ आ षष्ठी एतबे तिथिमे केरा रोपी आ ताहूमे भादव मास आ भदवा बारिकऽ । तहिना यात्राक सम्बन्धमे डाकक वचन सर्वविदित अछि –

रविके पान सोमके दर्पण, मंगल किछु किछु धनियाँ चर्वन ।
बुधके गूड़, वृहस्पति राई, शुक्र कहे जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहि अदरखभाव, सकल काजकेँ जिति घर आब ।
ने गुनी भदवा ने दिक्शूल, कहथि 'डाक' अमृत समतूल ॥[16]

एही तरहेँ यात्राक समयमे छीकक विचार छैक । सामान्यतया लोक यात्राक समयमे छीक सुनितहिँ सहमि जाइत अछि, घबरा जाइत अछि, अशकुनक संदेह करऽ लगैत अछि, किन्तु ध्यातव्य थिक जे छीकक शुभ फल सेहो छैक । बहुत कम छीकक अशुभ फल छैक । छिकनिहार कोन दिशामे अछि से ध्यान राखब आवश्यक । एहि प्रसंग डाकक वचन सामान्यो लोकक कंठमे अछि । द्रष्टव्य थिक –

दक्षिण छीकै धन लै छीजै । नै□त कोन सिंहासन दीजै ॥
पश्चिम छीकै मीठ भोजना । गेलो पलटे बायब कोना ॥
उत्तर छीकै मान समान । सर्वसि□ लै कोन ईशान ॥
सबहक छिक्का कहि गेल'डाक' । अपने छिक्का नहि करु काज॥
आकाशक छिक्के नर जाय । पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय ॥[17]

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे मिथिलामे ज्यौतिषविद्याक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । छोटसँ पैघ कार्य लोक बिनु दिन, तिथि, नक्षत्र, अ□प्रहरा, संक्रान्ति, मासान्त इत्यादि विचार कयने नहि करैत अछि । विद्वानसँ निरक्षर धरि, अङरेजियासँ पण्डित धरि, राजासँ रङ्क धरि सभकेँ एहि गम्भीर शास्त्रक प्रति आस्था छैक आ तदनुसार लोक आचरणो करैत अछि ।

सन्दर्भ :

1. खट□र ककाक तरंग : प्रो० हरिमोहन झा, पृ० 51-57
2. प्रणम्य देवता : प्रो० हरिमोहन झा, पृ० 71-86
3. मिथिलाभाषा रामायण : कवीश्वर चन्दा झा, पृ० 16
4. एकावली-परिणय : कविशेखर बदरीनाथ झा, 2/68
5. तत्रैव, 3/67, 68
6. भूकम्प-वर्णन : ज्यौ० कविवर सीताराम झा,
7. तत्रैव ।
8. दत्त-वती : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', 2/19
9. तत्रैव, पृ० 4/58
10. प्रतिपदा : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृ० 24
11. उत्तरा : प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ 32
12. कृष्ण-चरित : प्रो० तन्त्रनाथ झा, 12/11
13. तिथीशा वह्निको गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
    शिवादुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ।। —अमरकोष
14. नाम तँ थिक वैह : डॉ० भीमनाथ झा, पृष्ठ-106
15. डाकवचनसंग्रह ।
16. तत्रैव ।
17. तत्रैव ।

('श्रीअमर–अर्चना'सँ - 2001)

V

रातुक अ□प्रहराक क्रममे जे श्लोक उ□ृत कयल गेल अछि ताहिमे गुरौ शराष्टौ क स्थानपर 'गुरौ रसाष्टौ' अनेक ज्यौतिष ग्रन्थमे छपल अछि जे भ्रामक थिक, निराधार अछि । बहुतो व्यक्ति ओकरा शु□ मानैत छथि । परन्तु एहि निबन्धमे उ□ृत सभसँ प्रथम सूत्र जे अछि– 'वारस्त्रिघ्नो .... । ताहिसँ ओ खण्डित भऽ जाइत छनि ।

आब प्रश्न उठैत अछि जे एकटा अ□प्रहरा कतेक काल धरि रहैत अछि ? ओना तँ मोटामोटी कहि देने छी जे 12 घंटाक दिन भेल जाहिमे आठटा अ□प्रहरा होइत अछि । तदनुसार एकटा अ□प्रहरा डेढ़ घंटाक भेल । मुदा ई तँ सोझुक्का हिसाब भेल । कारण जे कखनो बारह घंटाक बदला एगारहे घंटाक दिन भऽ जाइत अछि आ कखनो तेरह घंटाक । तेँ अ□प्रहराक समय घटैत-बढ़ैत रहैत अछि ।

अतः शु□-शु□ अ□प्रहरा ज्ञानक लेल जाहि दिनक अ□प्रहरा ज्ञात करबाक हो ताहि दिनक सूर्योदय एवं सूर्यास्तक समय पंचांगमे देखि लेबाक चाही । तत्पश्चात् ओहि समयकेँ 8 सँ भाग दऽ अ□प्रहरा निकालि ली । उदाहरणार्थ सूर्योदय (5.30) पाँच बाजि तीस मिनटमे होइत अछि आ सूर्यास्त (6.50) 6 बाजि 50 मिनटमे । आब सूर्योदयसँ सूर्यास्त धरिक समय 13 घंटा 20 मिनट भेल । एहि समयकेँ 8 सँ भाग देलासँ 1 घंटा 40 मिनट भेल । तेँ ओहि दिन 1 घंटा 40 मिनटक अ□प्रहरा होयत ।

आब यदि ओहि दिनक चारिम अ□प्रहरा ज्ञात करबाक अछि तऽ 1 घंटा 40 मिनटकेँ 3 सँ गुणा कऽ सूर्योदयक समयमे जोड़ि दी अर्थात् 1 घंटा 40 मिनट x 3 + सूर्योदयक समय ।

अतः 5 घंटा + 5.30 घंटा □ 10.30 घंटा

तेँ साढ़े दस बजेसँ चारिम अ□प्रहरा शुरू होयत आ एक घंटा चालीस मिनट धरि रहत, अर्थात् 12 बाजि 10 मिनट धरि । एवंप्रकारेँ कोनो दिनक कोनो अ□प्रहरा ज्ञात कयल जा सकैत अछि । रातिक अ□प्रहरा सेहो एहिना ज्ञात कयल जाइत अछि । एहिमे सूर्यास्तसँ सूर्योदय धरिक समयकेँ 8 सँ भाग देल जाइत अछि । पुनः जतबाक कालक अ□प्रहरा भेल तकरा ध्यानमे राखि अभीष्ट अ□प्रहरा ज्ञात कयल जाइत अछि ।

(मिथिला मिहिर, 10 दिसम्बर 1978)

V

आब उपर्युक्त व्याख्याक आधारपर निम्नलिखित सारणी बनाओल जाइत अछि, जाहिमे दिन एवं रातिक दुनू अ□प्रहरा संगहि देखाओल गेल अछि–

अ□प्रहराक सारणी

	दिन		राति	
	दग्धयाम	रविसूनुबेला	दग्धयाम	रविसुनूबेला
रवि	4	5	4	6
सोम	7	2	7	4
मंगल	2	6	2	2
बुध	5	3	5	7
वृहस्पति	8	7	8	5
शुक्र	3	4	3	3
शनि	6	1, 8	6	1, 8

उपर्युक्त सारणीकेँ ध्यानमे रखबाक लेल निम्नलिखित श्लोक उपयोगी अछि––

दिनुका अ□प्रहरा –

रवौवर्ज्याश्चतुष्पंचं सोमे सप्तद्वयं तथा ।
कुजे षष्ठद्वयं चैव बुधे वाण तृतीयकम् ॥
गुरौ सप्ताष्टकं ज्ञेयं त्रिचत्वारि च भार्गवे ।
शनावाद्यन्त षष्ठं च वर्ज्याऽर्धप्रहरा बुधैः ॥

रातुक अ□प्रहरा—

रवौ रसाब्धी हिमगो हयाब्धी ।
द्वयं महीजे विधुजे शरागो ॥
गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीयं ।
शनौ रसाद्यन्त मितिक्षपायां ॥

रवि (दिन) चारिम–पाँचम, सोम दिन सातम–दोसर, कुज(मंगल)दिन छठम—दोसर, बुध दिन वाण (पाँचम)— तेसर, वृहस्पति दिन सातम–आठम, भार्गव (शुक्र) दिन तेसर–चारिम एवं शनि दिन आदि, अन्त तथा छठम अ□प्रहरा बुध जन त्याग करैत छथि।

रवि (राति) छठम (रस), चारिम (अब्धि); सोम (हिमग)–सातम (हय), चारिम (अब्धि); मंगल (महीज) दोसर; बुध (विधुज) पाँचम (शर) सातम (अग); वृहस्पति – पाँचम–आठम, शुक्र (भृगुज) तेसर, शनि 6 (रस), आदि एवं अन्त।

ज्योतिष : दैनन्दिन उपयोगक किछु महत्त्वपूर्ण तथ्य

ज्योतिष एकटा एहन विषय थिक जे उपयोगी तऽ अछिए संगहि रुचिकरो ततबे। मनुष्यक जीवनमे जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त जतेक प्रकारक संस्कार होइत छैक सभमे प्रथमतः दिन गुनाओल जाइत अछि जाहि हेतु जोतखीक आवश्यकता होइत छैक। मैथिली साहित्यक कोनो विधाक यदि गप्प करैत छी तऽ ओहिमे मुण्डन, उपनयन, कर्णबेध, विवाह आदिक वर्णन भेटैत अछि। यदि यात्राक वर्णन देखैत छी तऽ यु□क हेतु यात्रा, विवाहक हेतु यात्रा, अपहरणक हेतु यात्रा, शिकारक हेतु यात्रा प्रभृति भेटैत अछि। यात्राक समयमे शकुन, अपशकुन, छिक्काक विचार भिन्ने भेटैत अछि। मास, दिन, तिथि, चन्द्र, तारा इत्यादिक अनुसार दिन देखि लोक अपन यात्रा निश्चित करैत अछि। वस्त्र पहिरबासँ लए भवन–निर्माण पर्यन्त लोक बिनु दिन गुणओने नहि करैत अछि।

मिथिलांचलक पंचांग, डायरी इत्यादिमे सेहो ज्योतिषक ज्ञान कराओल गेल अछि जे व्यावहारिक, रोचक, उपयोगी, हृदयग्राही तथा सर्वजन सुलभ अछि। एहि क्रममे हम दैनन्दिन जीवनमे उपयोगी किछु महत्त्वपूर्ण तथ्यपर ध्यान आकृष्ट करए चाहब–

राशि चक्र :

12 गोट राशि अछि जे नक्षत्रक चरणक अनुसार ज्ञात कएल जाइत अछि। मैथिली काव्यक माध्यमे एकरा कतेक रोचक ढंगसँ दर्शाओल गेल अछि, से जनबा लेल किछु अंश अवलोकनीय थिक–

मेष– **अश्विनी भरणी कृत्तिका एक पाय। मेष राशि केर एतेक उपाय॥**

वृष– **कृत्तिका तीनि रोहिणी भौवेद। दू मृगशिर लै वृष परिछेद॥**[1] प्रभृति।

चन्द्र दिग्ज्ञान :

मेष सिंह धनु पूवे चन्दा ।
दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा ॥
पश्चिम कुंभ तुला ओ मिथुना ।
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥

अर्थात् मेष, सिंह आ धनु राशिक चन्द्रमा पूर्व दिशामे रहैत छथि । कन्या, वृष आओर मकरक दक्षिणमे, कुंभ, तुला तथा मिथुनक पश्चिममे एंव कर्क, वृश्चिक आ मीनक चन्द्र उत्तर दिशामे रहैत छथि ।

यात्रामे चन्द्रविचार :

दक्षिणे सम्मुखे लाभस्त्यजेत्पश्चिमवामयोः ।

अपिच-

सम्मुखे चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे च शोकसन्तापो वामे चन्द्रे धनक्षयः ।[2]

अर्थात् सम्मुख चन्द्र अर्थलाभ दैत छथि, दहिन चन्द्र सुख सम्पत्ति देनिहार थिकाह, पाछूक चन्द्रमा शोक सन्ताप देनिहार तथा वाम चन्द्रकेँ अपव्यय करओनिहार कहल गेल अछि ।

दिन-नक्षत्र योगसँ मृत्युयोग :

दिन तिथिक योगसँ मृत्युयोगपर विचार तऽ सभ करितहि छथि, जे यात्रा तथा शुभ कार्यमे वर्जित अछि । एतए दिन नक्षत्र योगसँ मृत्युयोगक चर्चा कए रहल छी, देखल जाय-

त्यज रविमनुराधे वैश्यदेवं च सोमे,
शतभिषमपि भौमे चन्द्रजच्चाश्विनीषु ।
मृगशिरसि सुरेज्यं सर्पदेवं च शुक्रे,
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगा भवन्ति ॥

अर्थात्- रविकेँ अनुराधा, सोमकेँ उत्तराषाढ़, मंगलकेँ शतभिषा, बु□केँ अश्विनी, वृहस्पतिकेँ मृगशिरा, शुक्रकेँ आश्लेषा तथा शनिकेँ हस्त नक्षत्र पड़लासँ मृत्युयोग होइत अछि । एहिमे शुभकार्य एवं यात्रा वर्जित अछि ।

तारा ज्ञान :

चन्द्रमासँ कनियो कम महत्त्वक तारा नहि । विवाह, उपनयन अदि शुभ कार्यमे चन्द्रमा तथा ताराक अनुकूलता देखब अनिवार्य होइत अछि । जन्म नक्षत्रसँ अभीष्ट नक्षत्र धरि गणना कए नओसँ भाग देल जाइत अछि । एकसँ नओ धरि शेष रहैत अछि जे तारा थिक, क्रमशः -जन्म, सम्पत, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, बध, मित्र, अतिमित्र ।

एहिमे सम्पत, क्षेत्र, साधक, मित्र, अतिमित्र, अपन नामानुकूल शुभ फल देनिहार थिक तथा शेष अशुभ । अशुभ तारामे लोक शुभ कार्य नहि करैत अछि । प□चम तारा

शनि- 7 । एतऽ सातम आवृत्तिमे शनि अबैत अछि तेँ वृहस्पति दिन सातम अ□प्रहरा रविसूनुबेला भेल ।

शुक्र— शुक्र-1, बुध-2, सोम-3, एवं शनि-4 । अतः शुक्र दिन 4म अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

शनि— शनि-1, वृहस्पति-2, मंगल-3, रवि-4, शुक्र-5, बुध-6, सोम-7 एवं शनि -8 । एतऽ आठ आवृत्तिक अन्तर्गत दू बेर शनि अबैत अछि - प्रथम ओ अन्तिम । अतः शनि दिन प्रथम ओ आठम अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

रातिमे रविसूनुबेला—

ठीक दिने जकाँ रातिक रविसूनुबेला ज्ञात कयल जाइत अछि । अन्तर एतबेक अछि जे दिनमे 6-6 केर परिवर्तन पर गनल जाइत छल आ रातिमे 5-5 परिवर्तनपर, जे निम्नलिखित सूत्रसँ स्पष्ट अछि—

दिवा षट्क्रमेणैव रात्रो पंचक्रमेण तु ।
वारेशाद□यामानां पतयःकीर्त्तिता बुधैः ॥

(बराहमिहिर कृत,पंचस्वरासँ)

रवि— रवि-1, वृहस्पति-2, सोम-3, शुक्र-4, मंगल-5, एवं शनि-6 । अतः रविक रातिक छठम अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

सोम— सोम-1, शुक्र-2, मंगल-3, शनि-4 । अतः सोमक रातिमे चारिम अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

मंगल— मंगल-1, शनि-2 । मंगलक रातिमे दग्धयाम एवं रविसूनुबेला दुनू एके बेर होइत अछि ।

बुध— बुध-1, रवि-2, वृहस्पति-3, सोम-4, शुक्र-5, मंगल-6 एवं शनि-7 । अतः बुधक रातिमे सातम अ□प्रहरा रविसूनबेला थिक ।

वृहस्पति— वृहस्पति-1, सोम-2, शुक्र-3, मंगल-4, एवं शनि-5 । अतः वृहस्पतिक रातिमे 5म अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

शुक्र— शुक्र-1, मंगल-2, शनि-3 । अतः शुक्रक रातिमे तेसर अ□प्रहरा दग्धयाम ओ रविसूनुबेला दुनू थिक ।

शनि— शनि-1, बुध-2, रवि-3, वृहस्पति-4, सोम-5, शुक्र-6, मंगल-7 एवं शनि-8 । अतः शनिक राति दू टा रविसूनुबेला अबैत अछि - प्रथम ओ आठम ।

शनि— शनि दिन, दिनक संख्या 7, ओकरा 3सँ गुणा कयला पर 21, आ 8सँ भाग देलापर 5 शेष बचैत अछि आ ओहिमे 1 जोड़लापर 6 भेल । अतः शनिक दिन एवं रातिमे छठम अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

रविसूनुबेला

रविसूनुक अर्थ भेल शनि कारण जे ओ सूर्यक पुत्र थिकाह । अर्थात् शनि कोन बेलामे अबैत छथि सैह एतऽ देखबाक थिक । ई दिन तथा रातिक भिन्न-भिन्न होइत अछि ।

दिनमे रविसूनुबेला—

दिनक रविसूनुबेला ज्ञात करबाक लेल एक टा सूत्र छैक—

आद्योष्टभागो दिवसाधिपस्य
ततःपरं षट्परिवर्त्तनेन
यस्मिन्विभागे रविसूनुवेला
सर्वेषु कार्येष्वपि निन्दिता सा ॥

(वराह मिहिर कृत 'पंचस्वरा'सँ)

अर्थात् जाहि दिनक रविसूनुबेला ज्ञात करबाक हो ओकरा एक मानि ओतऽसँ छठम दिन गनी से 2 भेल । पुनः ओही दिनसँ छठम दिन गनी से 3 भेल । ई क्रम ततबाक काल धरि जारी रहय यावत धरि शनि नहि आबि जाय । शनि अयबामे जतबाक आवृत्त लगलैक सैह रविसुनू बेला थिक, यथा—

रवि— रवि दिनक रविसूनुबेला ज्ञात करबाक लेल रविकेँ एक मानी आ ओकर छठम दिन शुक्रकेँ 2 मानी । एही क्रमानुसार 6 दिनपर गनी । तेँ बुध— 3 सोम— 4 आ शनि— 5 भेल । अतः रवि दिन पाँचम अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

सोम— सोमकेँ एक मानि ओकर छठम दिन शनिकेँ 2 मानी । एतऽ दोसरे आवृत्तिमे शनि आबि जाइत अछि तेँ सोम दिन दोसर अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

मंगल— मंगलकेँ एक मानि ओकर छठम दिन रवि - 2, एवंक्रमे शुक्र -3, बुध-4, सोम-5, एवं शनि-6 होइत अछि । अर्थात् मंगल दिन छठम अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

बुध— बुध-1, सोम-2, शनि-3, अर्थात् बुध दिन तेसर अ□प्रहरा रविसूनुबेला थिक ।

वृहस्पति— वृहस्पति-1, मंगल-2, रवि-3, शुक्र-4, बुध-5, सोम-6, एवं

प्रत्यरि-प्रथम आवृत्तिक धन देनिहार, द्वितीय आवृत्तिक शुभ कएनिहार तथा तेसर आवृत्तिक मृत्यु देनिहार थिकाह । एहि संबंधमे ज्योतिष शिशुबोधक कथन द्रष्टव्य थिक-

जन्मभाद्गणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधिक्रमात् ।
नवभिश्च हरेद्भाग शेषतारा विनिद्दिशेत् ॥
जन्म सम्पद्विपत् क्षेमप्रत्यरिः साधकोवधः ।
तथा मित्रातिमित्रे च नवताराः स्वजन्मभात् ॥
द्विचतुः षड्ष्टनवगतास्तताराः शुभप्रदाः ।
धनदा सुखदा चैव मृत्युदा चैव प□चमी ॥[4]

अनिवार्य रहने अधलाहो तारामे लोक काज करैत अछि किन्तु ओकर शान्त्यर्थ किछु दान करए पड़ैत छैक । एहि हेतु प्रत्यरिक लेल नोन, जन्मक हेतु शाक, विपत् केर हेतु गुड़, तथा निधन ताराक हेतु तिल आ का□चनक दान कहल गेल अछि । यद्यपि निधन तारामे लोक काज नहियेँटा करैत अछि । द्रष्टव्य थिक-

प्रत्यरौ लवणम् दद्यात् शाकम् दद्यात् त्रिजन्मसु ।
गुडं विपत्तारायाम् सुवर्णम् निधिनेतिलम् ॥[5]

दिक्शूल :

सर्वसाधारणो लोक दिग्बल आ दिक्शूलक विचार कए यात्रा करैत अछि । जँ दिक्शूल केओ नहिओँ बुझैत छथि, सि□ादियोग नहिओँ जनैत छथि तऽ दिग्बल देखि यात्रा कए लैत छथि-

नहि किछु जानी तऽ दिग्बल धऽ तानी ।

शनि तथा सोमकेँ पूर्व दिशा जएबामे, बुध तथा बृहस्पतिकेँ दक्षिण दिशा जएबामे, शुक्र तथा रविकेँ पश्चिम दिशा जएबामे तथा बुध आ मंगलकेँ उत्तर दिशा जएबामे दिग्विरोध होइत अछि । वाम कातक कोणकेँ वाम दिशा बुझबाक थिक । निम्नांकित श्लोकक अनुशीलन कएल जाए-

शनौचन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणांच गुरौबुधे ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तरम् ॥[6]

काल विचार :

कालक विचार सतत नहि होइत अछि । ई विशेषतः द्विरागमन, द्वितीय यात्रा, राजयात्रा, नवोढ़ा यात्रा, नवजात शिशुक संग यात्रा, गर्भिणीक यात्रा इत्यादिमे विचारणीय होइत अछि । काल-अगहन, पूष, माघमे पूर्व दिशामे रहैत छथि; फागुन, चैत, वैशाखमे

दक्षिण दिशामे; ज्येष्ठ, आषाढ़ साओनमे पश्चिम दिशामे तथा भादव, आश्विन, कार्तिकमे उत्तर दिशामे । यात्राक समय देखबाक थिक जे एहन दिशामे यात्रा होअए जे काल सम्मुख आ दहिन नहि पड़थि । द्रष्टव्य थिक–

मार्गे पौषे तथा माघे पूर्वस्यां राहुसंस्थितिः ।
फाल्गुने च तथा चैत्रे वैशाखे दक्षिणे भवेत् ॥
ज्येष्ठे मासि तथाऽऽषाढ़े श्रावणेऽपि च पश्चिमे ।
भाद्रे तथाऽश्विने मासि कार्तिके चोत्तरे भवेत् ॥[7]

अपिच–

गर्भिणीच प्रसूताच नवौढ़ा भूपतिस्तथा ।
पदमेकं न गच्छेत राहोः सम्मुख दक्षिणे ॥

पुनश्च–

द्विरागमगता कन्या पितृवेश्मनि आगता ।
पदमेकं न गच्छेत राहोः सम्मुख दक्षिणे ॥

शिववास :

महादेवक पूजाक हेतु शिववास ज्ञात करबाक हेतु तिथिकेँ दूसँ गुणा कए पाँच जोड़ि सातसँ भाग देल जाइत अछि । 1 सँ 7 धरि शेष रहैत अछि । एकमे शिव कैलाश पर रहैत छथि, दूमे गौरीक निकट, तीनमे बसहापर, चारिमे सभामे, पाँचमे भोजनपर, छओमे क्रीड़ा तथा सातमे श्मशानमे । एहिमे प्रथम सुख देनिहार, द्वितीय सुख-सम्पत्ति देनिहार, तीन अभीष्ट सि□ कएनिहार, चारि सन्ताप देनिहार, पाँच कष्ट देनिहार, छओ कष्ट देनिहार तथा सात मृत्यु देनिहार थिकाह । कृष्णपक्षक परीबमे गणना करबाक समय शुक्लपक्षक 15 तिथि जोड़ल जाइत अछि । उदाहरणार्थ कृष्णपक्षक द्वितीयाकेँ यदि शिववास ज्ञात करए चाहब तऽ 15+2=17 X2+5=39÷7=4, चारि शेष अर्थात् शिवजी सभामे रहैत छथि जे सन्तापदायिनी भेल । एहि हेतु निम्नलिखित पंक्ति ध्यातव्य थिक–

तिथी□च द्विगुणीकृत्य वाणैः संयोजते ततः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागः शिववासः समुद्दिशेत् ॥
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ ।
तृतीये वृषभारूढ़ः सभायांच चतुर्थके ॥
प□चके भोजने चैव कीड़ायां षण्मिते तथा ।
सप्तमे श्मसाने चैव शिववासः यदुच्यते ॥

दग्धयाम वा अ□यामक हेतु उपयुक्त शब्द तकबाक क्रममे हम कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक ज्योतिष विभागक अध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर झाजीसँ गप्प कयने रही । ओहो हमर तर्ककेँ संगत मानलनि आ एकरा हेतु एक नवीन शब्द कहलनि— 'दग्धयामा□' । मुदा हमरा विचारे 'दग्धयामा□' सेहो उचित अर्थक प्रतिपादन नहि कऽ पबैत अछि । कारण, दग्धयामा□ तँ पहिने यामे दग्ध भऽ जाइत अछि आ तखन फेर ओकर आधे दग्ध कोना मानल जाय ? अस्तु, जे-से । हमरा विचारेँ एहि समयक लेल 'दग्धा□याम'क प्रयोग करब समुचित थिक ।

दग्धयाम दिन तथा राति दुनूमे समान होइत अछि । ई निकालबाक हेतु एकटा सूत्र छैक—

'वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्धयामकः ।' (वराहमिहिरकृत पंचस्वरासँ)

अर्थात् दिनमे तीनसँ गुणा कऽ पुनः आठसँ भाग दी एवं शेषमे एक जोड़ी । जतबा होअय से दग्धयाम भेल । राति आ दिन दुनूमे ओ अ□प्रहरा होयत । दिनक गणना रविसँ कयल जाइत अछि । यथा—

रवि— रवि दिन, दिनक संख्या एक भेल 1, ओकरा 3 सँ गुणा कयलापर 3 आ पुनः 8 सँ भाग देलापर तीने शेष रहल । ओहिमे एक जोड़लासँ 4 भेल । तेँ रविक दिन ओ राति दुनूमे चारिम अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

सोम— सोम दिन, दिनक संख्या 2 भऽ गेल । ओकरा तीनसँ गुणा कयलापर 6 आ 8 सँ भाग देलासँ छवे शेष रहल । पुनः 1 जोड़लासँ 7 भेल, तेँ सोमक दिन एवं रातिमे सातम अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

मंगल— मंगल दिन, दिनक संख्या 3 भेल । ओकरा 3सँ गुणा कऽ 8 सँ भाग देलापर 1 शेष रहल आ पुनः 1 जोड़लासँ 2 भेल । अतः मंगलक दिन एवं रातिमे दोसर अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

बुध— बुध दिन, दिनक संख्या 4 भऽ गेल । 4 केँ 3 सँ गुणा कयलापर 12 आ 8 सँ भाग देलापर 4 शेष बचैत अछि । पुनः 1 जोड़ला सँ 5 भऽ गेल । अतः बुधक दिन एवं रातिमे पाँचमम अ□प्रहरा दग्धयाम थिक ।

वृहस्पति— वृहस्पति दिन, दिनक संख्या 5, ओकरा 3सँ गुणा कयलापर 15 आ 8 सँ भाग देलापर 7 शेष बचत आ पुनः 1 जोड़ला पर 8 भऽ जाइत अछि । अतः वृहस्पतिक दिन एवं रातिमे आठम अ□प्रहरा दग्धयाम भेल ।

शुक्र— शुक्र दिन, दिनक संख्या 6, ओकरा 3 सँ गुणा कयलापर 18 आ 8 सँ भाग देलापर 2 शेष बचत । पुनः 1 जोड़लासँ 3 भऽ जाइत अछि । तेँ शुक्रक दिन एवं रातिमे तेसर अ□प्रहरा दग्धयाम थिक ।

अ□प्रहरा-विचार

दिन आ राति मिलाकऽ आठ प्रहर होइत अछि । चारि प्रहरक दिन आ चारि प्रहरक राति । दिनक चारि प्रहरकेँ आठ भागमे बाँटल जाइत अछि । दिनक चारि प्रहरक तात्पर्य अछि दिनमानसँ अर्थात् सूर्योदयसँ सूर्यास्त धरि । चारि प्रहरकेँ आठ बराबरि भागमे बटलासँ एक भाग आधा प्रहरक भेल । तेँ एकर नाम अ□प्रहरा भेलैक ।

ठीक एही तरहेँ रात्रिमान अर्थात् सूर्यास्तसँ सूर्योदय धरिक समयकेँ सेहो आठ भागमे बाँटल जाइत अछि । ओहि अष्टांश समयकेँ सेहो अ□प्रहरा कहल जाइत अछि ।

अ□प्रहरा दू प्रकारक होइत अछि –

(1) दग्धयाम आ (2) रविसूनुबेला

दग्धयाम अ□याम नामसँ सेहो अभिहित अछि, मुदा अर्थक संगति नहि बैसैत अछि । दग्धक अर्थ भेल जरल वा दागल अर्थात् अशुभ एवं यामक अर्थ प्रहर, जे साधारणतः तीन घंटाक मानल जाइत अछि । तेँ दग्धयाम कहला उत्तर लगातार दुइ गोट अ□प्रहरा अशुभ सूचक भऽ जाइत अछि जे सम्भव नहि अछि, कारण जे बारह घंटाक अभ्यन्तर दुइ गोट दग्धयाम आबिए नहि सकैत अछि । तेँ दग्धयाम अर्थ भ्रामक थिक, यद्यपि रूढ़ भऽ गेल अछि ।

आब दग्धयामक लेल प्रयुक्त एकटा दोसर शब्द अबैत अछि -- अ□याम । एकर प्रयोग वराह मिहिर सेहो अपन 'पंचस्वरा' नामक पोथीमे कयने छथि । मुदा ईहो शब्द समुचित अर्थक द्योतन नहि करैत अछि, कारण जे अ□यामक अर्थ तँ आधा प्रहर मात्र भेल । एहिसँ ई कोना स्पष्ट होयत जे ई आधा प्रहर अशुभ आ त्याज्य थिक ? लोक कहैत छैक जे एखन अ□प्रहरा छैक तेँ शुभ कार्य एहन समयमे नहि करी । मुदा अ□प्रहरा तँ हरदम रहैत अछि ओ शुभ रहय वा अशुभ । तखन अ□प्रहराक अर्थ हमरालोकनि अशुभसूचके किएक बुझी ?

पुनश्च–

कैलाशे लभते सौख्यं गौर्यां□च सुखसम्पदौ ।
वृषभेऽभीष्टसि□स्यात् सभासन्तापदायिनी ॥
भोजने च भवेत्पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च ।
श्मसाने मरणं चैव शिववासः फलम् लभेत् ॥

साढ़ेसाती शनि :

जन्मराशि तथा जन्मराशिसँ बारहम आ द्वितीय स्थानमे शनिक स्थितिकेँ साढ़ेसाती शनि कहल जाइत छैक । साढ़ेसाती शनिक नामेसँ लोक घबरा जाइत अछि– **जनिका ऊपर शनिक दृष्टि हो से जन सुख नहि पाबथि** मुदा साढ़ेसाती शनि सभकेँ सतत अधलाहे टा नहि करैत छथि । शनि एक घरमे $2^{1/2}$ वर्ष रहैत छथि आ तेँ तीनिटा घर टपबामे हुनका $7^{1/2}$ वर्षक समय लगैत छनि । साढ़े सात वर्षक माने 90 मास । नब्बे मासमे आरंभसँ 7 मास मस्तकमे (सर्वांश हानि), नेत्रमे 9 मास (हानि), मुँहमे 8 मास (लाभ), कंठमे 6 मास (भूषणादि लाभ), हृदयमे 10 मास (यन्त्रादि लाभ), उदरमे 11 मास (अन्नादि लाभ), नाभिमे 4 मास (उदर कष्ट), गुह्य स्थानमे 4 मास (हानि), जानुमे 14 मास (व्यय), जांघमे 11 मास (सौख्य), पएरमे 5 मास (मार्गकष्ट) ।[8]

स्वप्न विचार :

लोक नाना प्रकारक स्वप्न देखैत अछि, डेराइत अछि, प्रसन्न होइत अछि । किंवदन्ती छैक जे शुभ स्पप्न देखि अपनासँ श्रेष्ठकेँ कहिऐक जे फलदायक होइछ तथा अशुभ स्पप्न देखि अपनासँ छोटकेँ कहिऐक जे फलदायक नहि होइक । एतय किछु प्रमुख स्पप्नक फल प्रस्तुत कएल जाइत अछि–

स्वप्न		**फल**	**स्वप्न**		**फल**
आकाशमे उड़ब	–	यात्रा	पोखरिमे स्नान	–	प्रतिष्ठा
आकाशसँ खसब	–	हानि	देबालपरसँ खसब	–	अवनति
अग्नि देखब	–	वर्षा	नदीमे नहायब	–	चिन्तामुक्ति
आगि उठायब	–	धन खर्च	नदी पार करब	–	कार्यसि□
आम खायब	–	सन्तान वृ□	नदीमे खसब	–	कष्ट
बिहाड़ि देखब	–	क्लेशित यात्रा	पानिमे डूबब	–	शुभ कार्य
गाछ चढ़ब	–	प्रतिष्ठा	उपवन देखब	–	खुशी
फड़ल गाछ देखब	–	मनोकामना सि□	कुकुर काटब	–	शत्रुक सामना
मुर्दा देखब	–	धन लाभ	खेत देखब	–	विद्या वृ□
लड़ाइ देखब	–	रोग कष्ट	गाय देखब	–	व्याकुलता [9]

सामान्यतया उज्जर वस्तु देखब (भात, तूर, अस्थि छोड़ि) शुभ थिक तथा कारी वस्तु देखब (हाथी, ब्राह्मण, गायकेँ छोड़ि) अशुभ थिक ।

अंगपर गिरगिट खसबाक फल :

स्थान		**फल**	**स्थान**		**फल**
शिर	–	राज्यलाभ	भौँह मध्य	–	राज्य सम्मान
नासाग्र	–	व्याधि, पीड़ा	वाम कान	–	बहुलाभ
वाम भुजा	–	राजभीत	वक्षस्थल	–	दुर्भाग्य
दुहू जांघ मध्य	–	शुभागम	दुहू हाथ	–	वस्त्रलाभ
कटिभाग	–	वाहन लाभ	वाम मणिबन्ध	–	कीर्तिनाश
गल्फ	–	धनलाभ	दक्षिण पयर	–	गमन
अधरोष्ठ	–	धनैश्वर्य	केशान्त	–	अतिकष्ट
पृष्ठदेश	–	बु□नाश	उत्तरोष्ठ	–	धननाश
मुँह	–	मिष्टान्न भोजन	आँखि	–	बन्धन
मस्तक	–	बन्धु दर्शन	पेट	–	भूषणलाभ
दक्षिण कान	–	आयु वृ□	कान्ह	–	विजय
कण्ठ	–	शत्रुनाश	हृदय	–	धनलाभ
दुहू जांघपर	–	शुभ	वाम पएर	–	बन्धु विनाश
दहिन मणिबन्ध	–	मनस्ताप	दक्षिण भुजा	–	नृपतुल्यता
नाभि	–	बहुधन	पादान्त	–	स्त्रीनाश[10]

नोट– पुरुषक दहिन भाग, स्त्रीक वाम भाग खसब शुभ थिक ।

गण्डमूल नक्षत्र : रेवती नक्षत्रक समाप्तिक दू दण्ड, अश्विनी नक्षत्रक आदिक आठ दण्ड, अश्लेषा–मधाक अन्तिम दू दण्ड, ज्येष्ठाक अन्तिम दू दण्ड, मूलक आदिक दू दण्डमे यदि बच्चाक जन्म हो तऽ बच्चाकेँ मूल गण्ड योगमे जन्म मानल जाइत अछि जे अशुभ थिक । ज्येष्ठाक पहिल चरणमे बच्चाक जन्म भेलासँ बड़का भाइक नाश, दोसर चरणमे छोट भाइक नाश तथा तेसर चरणमे जन्म भेने माय–बापक नाश निश्चित अछि ।[11]

संदर्भ :

1. ज्योतिष शिशुबोध; पृ. 5–6
2. तत्रैव
3. तत्रैव; पृ. 9
4. ज्योतिष शिशुबोध; पृ. 11
5. तत्रैव
6. तत्रैव पृ. 16
7. तत्रैव पृ. 17
8. विद्यापति प□चाङ्ग; ग्रन्थालय प्रकाशन, 1978; पृ. 36
9. तत्रैव पृ. 47
10. तत्रैव पृ. 48
11. तत्रैव पृ. 48

(विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोधपत्रिका मैथिली, अंक–2, सितम्बर 2007)

V

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
कथासाहित्य				
1.	मैथिली नव कथाक संवेदनशीलता : स्वरूप ओ मान्यता	डॉ.अजित नाथ मिश्र	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र पी.जी. सेंटर, सहरसा	1986
2.	मैथिली कथाक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. मीना झा	डॉ. नीता झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
3.	मैथिली कथा साहित्यमे मध्यवर्ग : एक अनुशीलन	डॉ. नरेश कुमार झा	डॉ. भूपेन्द्र कुमार चौधरी सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1993
4.	मैथिली कथामे मिथिलाक सामाजिक जीवनक चित्रण	डॉ. शिव शंकर झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1994
5.	1936-52 अवधिक विशिष्ट संदर्भमे मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. आदित्य कुमार झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
6.	मैथिली कथाक परिप्रेक्ष्यमे प्रो. हरिमोहन झाक कथा साहित्य : एक सृष्टि एक दृष्टि	डॉ. कृष्ण कुमार साह	डॉ. नगेन्द्र नारायण झा जे.एन. कॉलेज, मधुबनी	2000
7.	मैथिली कथा साहित्यमे महिला लेखिकाक योगदान	डॉ. सुनीता झा	डॉ. धीरेन्द्रनाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2005
8.	समकालीन मैथिली कथाक विशिष्ट संदर्भमे रामकृष्ण झा 'किसुन'क मैथिली कथा : एक साहित्यिक विश्लेषण	डॉ. नूतन चौधरी	डॉ. रमेश झा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा	2007

हे रोहिणि ! त्वमसि रात्रिकरस्य भार्या
ऐनं निवारय पतिं सखि दुर्विनीतम् ॥
जालान्तरेण मम वासगृहं प्रविश्य ।
श्रोणितटं स्पृशति किं कुलधर्म एषः ?

मानव जीवनमे ज्योतिषशास्त्रक ततेक ने बेसी उपयोग छैक जे एकर बिना एक-एक डेग राखब कठिन भए जएतैक । एतए किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि; यथा— जहाजक कप्तानकेँ ज्योतिषक बिना कोनो दोसर सहारा नहि । ओलोकनि ज्योतिषे शास्त्रक माध्यमे समुद्रमे जहाजक स्थितिक पता लगबैत छथि । प्राचीन समयमे घड़ीक अभावमे सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्रक पिंडकेँ देखिए कए समयक पता लगबैत छलाह । ज्योतिष ज्ञानक अभावमे लम्बा दूरीक समुद्री यात्रा करब सुरक्षित नहि । एही शास्त्रक माध्यमे विभिन्न देश आ रेगिस्तानमे सेहो रास्ता निकालल जा सकैछ तथा अक्षांश आ देशांतरक द्वारा ओहि स्थानक स्थिति आ दिशा आदिक निर्णय लेल जा सकैछ ।

कोनहु नव कार्यक अन्वेषण करबाक हेतु ज्योतिषक ज्ञान आवश्यक अछि । वैज्ञानिक लोकनि सेहो ज्योतिषीक मदति लए अपन अनुसंधान कार्यकेँ गति दैत छथिन । कोनो उच्चतम पहाड़क ऊँचाइ आ समुद्रक गहराइ ज्योतिषशास्त्रक द्वारा निरूपित कएल जाइत अछि । एतबा अवश्य जे ओहि हेतु रेखागणितक मदतिक प्रयोजन होइत अछि, जकरा ज्योतिषेक अंग मानल गेल अछि । प्राचीन ज्योतिषी लोकनि रेखागणितक सि□ान्तक प्रतिपादन कएने छथि । भूगर्भसँ प्राप्त विभिन्न वस्तुक काल-निर्धारण सेहो ज्योतिषशास्त्रक माध्यमे सरलतापूर्वक कएल जाइछ ।

सामान्यतया मनुष्य एहि शास्त्रक सम्यक् अध्ययनसँ अनेक प्रकारक रोगसँ बचि सकैत अछि कारण जे अधिकांश व्याधि सूर्य आ चन्द्रमाक कुप्रभावसँ उत्पन्न होइत अछि; यथा— फाइलेरिया रोग चन्द्रमाक कुप्रभावक कारणहिँ एकादशी आ अमावास्याकेँ बढ़ैत छैक । ज्योतिषी लोकनिक कथन अछि जे जेना चन्द्रमाक प्रभावसँ समुद्रमे ज्वारभाटा उत्पन्न होइत छैक तहिना मनुष्यक रक्तक प्रवाहपर सेहो ओकर प्रभाव पड़ैत छैक जाहिसँ मनुष्य रोगी बनि जाइत अछि । अतः मनुष्यकेँ ओहि कुप्रभावकेँ दूर करबाक हेतु प्रतिकार कएलाकसँ लाभ होइत छैक । एहि शास्त्रक सभसँ पैघ महत्त्व अछि जे जेना अन्हार घरमे एकटा दीप जरने सम्पूर्ण घरकेँ आलोकित कए दैत छैक, तहिना एहि शास्त्रक माध्यमे आँखिक परोक्षक भविष्यक संकेत लोककेँ भेटि जाइत छैक ।

एहि भविष्यक गणनाक हेतु ज्योतिषी लोकनि ओहि क्षणक अत्यधिक महत्त्व दैत छथि जाहि मूल्यवान क्षणमे कोनो व्यक्ति जन्म ग्रहण करैत अछि । मनुष्य जाहि दिन जन्म ग्रहण करैत अछि ओ तिथि, दिन, नक्षत्र, योग, करण इत्यादिक प्रभाव तऽ मनुष्यपर पड़िते

अछि संगहि सभसँ बेसी प्रभाव पड़ैत अछि ओहि समयमे गोचर ग्रहसभ ओहि जातकक लग्नसँ कतेक दूरीपर छथि, केहन संबंध रखैत छथि आ केहन दृष्टिसँ देखैत छथि । एहि हेतु ज्योतिर्विद् लोकनि प□चाङ्गक सहायतासँ मानक ओ स्थानीय समयक अनुसार इष्टकाल ज्ञात करैत छथि आ एहीपर लग्न स्थिर कए गणना करैत छथि ।

महादशा : सामान्यहु लोककेँ अपन महादशा आ अन्तर्दशाक संबंधमे ज्ञान रहैत छैक तेँ एतय हम अत्यन्त संक्षेपमे महादशाक चर्चा कए रहल छी । महादशा अष्टोत्तरीय आ विंशोत्तरीय होइत अछि । अष्टोत्तरीयमे मनुष्यक आयु 108 वर्ष मानल गेल अछि आ विंशोत्तरीयमे 120 वर्ष ।

मिथिला□चलमे विंशोत्तरीय महादशाक आधारपर गणना कएल जाइत अछि । ई जन्म-नक्षत्रक आधारपर ज्ञात कएल जाइत अछि । एहि हेतु नवोटा ग्रह-आ चं कु रा जी श बु के शु केँ क्रमशः कृत्तिका नक्षत्रसँ क्रममे लिखि जन्म-समयक महादशाक ज्ञान कराओल जाइत अछि । एतय जन्म-नक्षत्र द्वारा विंशोत्तरीय महादशा-बोधक चक्र प्रस्तुत अछि—

जन्मनक्षत्र द्वारा विंशोत्तरीय महादशाबोधक चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	ग्रह
6	10	7	18	16	19	17	7	20	दशावर्ष
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	आ.	म.	पु.फा.	
उ.फा.	ह.	चि.	श्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	
उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे	अ.	भ.	

उपर्युक्त सारिणीक आधारपर केओ व्यक्ति अपन जन्मनक्षत्रक आधारपर जन्मकालिक महादशा ज्ञात कए लेताह । पुनः भयात भभोगकेँ पलमे आनि भयातकेँ दशावर्षसँ गुणाकए पलात्मक भभोगसँ भाग दए महादशाक भुक्त वर्ष-मास-दिन निकालि लेल जाइत अछि आ ओहि भुक्त समयकेँ दशावर्षसँ घटाय भोग्य ज्ञात करबाक थिक ।

प्रत्येक महादशाक अन्तर्गत ओकर अंतर्दशा ज्ञात कएल जाइत अछि जाहि हेतु सूत्र अछि—

दशा-दशा हताकार्या दशभिर्भागमाचरेत् ॥

अर्थात् कोनो महादशाक अन्तर्दशा निकालबाक हेतु दशावर्षकेँ दशावर्षसँ गुणा कए, दससँ भाग दए अंतर्दशाक वर्ष-मास-दिन निकालल जाइत अछि । उदाहरणार्थ चन्द्र महादशाक दशावर्ष अछि 10 वर्ष । पुनः सूत्रानुसार अर्थात् चन्द्रमाक महादशामे चन्द्रमाक

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
3.	मैथिली उपन्यासमे नारी	डॉ. प्रीती झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1987
4.	मैथिली उपन्यासमे पारिवारिक चित्रण	डॉ. पीताम्बर झा	डॉ अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
5.	उपन्यासक क्षेत्रमे मिथिला मिहिरक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मन्त्रनाथ झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
6.	स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. धैर्यशंकर झा	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1992
7.	लोकगाथा एवं लोककथा पर आधारित उपन्यासक अध्ययन	डॉ. नारायण झा	डॉ. कुमरकान्त पाठक एल.एन.जे. कॉलेज, झंझारपुर	1993
8.	मैथिली उपन्यासमे दाम्पत्य जीवन	डॉ. पुतुल झा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र एम.के. कॉलेज, लहेरियासराय दरभंगा,	1995
9.	मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ.देवेन्द्र लाल कर्ण	डॉ. नागेन्द्र नाथ झा जे.एन. कॉलेज, मधुबनी	1996
10.	मैथिली उपन्यासमे सांस्कृतिक विश्लेषण	डॉ. पूनम दास	डॉ. देवेन्द्र लाल कर्ण जे.एम.डी.पी.एल., मधुबनी	2007
11.	उपन्यासक समाज शास्त्रीय पक्ष एवं यात्रीक मैथिली उपन्यास : एक विश्लेषण	डॉ. योगनाथ मिश्र	डॉ. यशोदानाथ झा आर.के. कॉलेज, मधुबनी	2007
12.	जीवकान्तजीक उपन्यासक साहित्यशास्त्रीय विवेचन	डॉ. योगेन्द्र यादव	डॉ. महेन्द्र प्रसाद सिंह सी.एम.जे. कॉलेज, खुटौना	2008

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
13.	आधुनिक मैथिली नाटकक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	डॉ. राधेश्वर झा	डॉ. महेन्द्र झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1993
14.	भूपतीन्द्र मल्लक मैथिली नाटकक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. मंजू सिंह	डॉ. रामदेव झा, वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1994
18.	साठ्योत्तर मैथिली हिन्दी नाटकक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. नित्यानन्द झा 'निर्दोष'	डॉ. नरनारायण राय पूर्णिया	1996
15.	आधुनिक मैथिली नाटकक कथा-विन्यास	डॉ.विजय शंकर झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1997
15.	सरसकवि ईशनाथ झा ओ पं. गोविन्द झाक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. अजीत मिश्र	डॉ. जगदीश मिश्र एम.एल.एस.कॉलेज, सरिसवपाही, मधुबनी	1999
16.	मध्यकालीन नाटकमे प्रयुक्त मैथिली गीतक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. जयप्रकाश झा	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा	2004
17.	मैथिली एकाङ्कीक उद्भव, विकास एवं प्रासंगिकता : एक आलोचनात्मक अनुशीलन	डॉ.कृष्णा कुमारी झा	डॉ. उर्मिला प्रसाद आर.के. कॉलेज, मधुबनी	2006

उपन्यास

1.	मैथिली उपन्यासमे चित्रित सामाजिक परिवर्त्तनक स्वरूप	डॉ. अभयनाथ झा	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1983
2.	मैथिली उपन्यासमे मिथिलाक जन-जीवन	डॉ. रमेश झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986

अन्तर्दशा 0 वर्ष 10 महिना 0 दिन रहत । एहि तरहेँ सभटा अन्तर्दशा निकालल जाइत अछि । पुनः अन्तर्दशामे प्रत्यन्तर्दशा आ ओहिमे सूक्ष्मदशाक गणना सेहो होइत अछि ।

एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे ज्योतिषी लोकनि सतर्कतापूर्वक जातकक जन्मसमयक अनुसार ओकर लग्न कुण्डली बनबैत छथि आ तदनुसार ग्रहक शुभाशुभत्वकेँ देखि, बलाबलकेँ परेखि, शत्रु-मित्रक विचार करैत, दृष्टिपर ध्यान दैत, उच्च-नीच परखैत, अंशपर विमर्श करैत, युतिसंबंधकेँ देखैत, क्रूरता-सौम्यताकेँ बुझैत, शुभाशुभत्व फलक संकेत दैत छथि । अशुभक आशंकाक भान होइतहि ओकर अशुभत्वकेँ समाप्त करबाक हेतु अनेक प्रकारक रत्नक उपचार, मन्त्रक उपचार, पूजापाठ, यज्ञ-अनुष्ठान, दान-पुण्य, वस्त्रोपचार इत्यादिसँ अशुभत्वकेँ नष्ट करैत छथि । एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे ज्योतिषशास्त्र मानव जीवनपर प्रचुर प्रभाव देखबैत अछि ।

V

मिथिलामे बाढ़िक समस्या

मिथिला भारतवर्षक ओ गौरवमय भूभाग थिक जे सदासँ विद्या-वैभव, शुचि-आचार, धर्म-कर्म एवं त्याग-तपस्याक हेतु अग्रगण्य रहल अछि । एतय केर भूमि अन्न उपजयबाक हेतु तऽ उपयुक्त अछिए अपितु जगज्जननी जानकीक सेहो प्रादुर्भाव एही धरासँ भेल अछि । एतय केर क्षेत्र नदीमातृक कहबैत अछि । दैव-मातृक (वर्षापर निर्भर) एवं अदैव-मातृक (कृत्रिम यंत्रसँ जलक आपूर्ति करब) तऽ सर्वत्र देखबामे अबैत अछि । मिथिलामे जतेक प्रकारक नदी प्रवाहित होइत अछि से प्राय: देशक कोनो अन्य भूभागमे नहि । एतय बहयबला नदीसभमे प्रधान अछि- गंगा, कोशी, कमला, कमलाबलान, लक्ष्मणा, गण्डकी, बागमती, जीबछ, अमृता, धेमुरा इत्यादि । कवीश्वर चन्दा झा मिथिलाक चौहद्दीक उल्लेख करबामे जाहि नदी सभक नाम लेलनि अछि से थिक :

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा ।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ॥
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा बागमती कृतसारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ॥

एतबे नहि, कवि अपन मिथिलाभाषा रामायणमे मिथिलाक नदी सभकेँ अमृत तुल्य जलसँ आप्लावित कहैत छथि । हुनकहि शब्दमे देखल जाय -

प्रपूर्ण शत तड़ाग की सुधा समान वारिसँ ।
विचित्र पद्मिनी बनी विहंग वारिचारिसँ ॥

मिथिलाक भौगोलिक स्थिति एहन अछि जे एकर उत्तरमे विश्वक सर्वोच्च पर्वत हिमालय अवस्थित अछि जकर ऊपरी भाग सतत हिम-आच्छादित रहैत छैक जाहि कारणेँ मिथिलांचलक अधिकांश नदीमे अधिक दिन धरि जल रहैत छैक जे कृषि-कार्यमे अत्यन्त सहायक होइत अछि । मिथिलाक उत्तरमे नेपाल पड़ैत अछि जकर भूमि हिमालयक

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
3.	अंकीया नाटक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. भूपेन्द्र कुमार चौधरी	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1985
4.	कविवर जीवन झाक नाट्यकृतिक आलोचनामक अध्ययन	डॉ. दयाकान्त झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
5.	आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. श्रीशंकर झा	डॉ. का□चीनाथ झा 'किरण' दरभंगा	1986
6.	मैथिली नाटकक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. भरत किशोर सिंह	डॉ. नीता झा वि.मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1988
7.	आधुनिक मैथिली नाट्यमे सामाजिक उद्‌बोधन	डॉ. महानन्द मिश्र	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' पी.जी. सेंटर, सहरसा	1990
8.	स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटकक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सुरेन्द्र झा	डॉ. माधुरी झा सहरसा	1990
9.	उमापतिक पारिजातहरण ओ शंकरदेवक पारिजातहरणक तुलनात्मक विश्लेषण	डॉ. वीणा मिश्र	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
10.	पं.जीवन झाक नाट्यगीतमे संगीतात्मक विश्लेषण	डॉ.उमेश प्रसाद सिंह	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1991
11.	मैथिली नाटकक रंगशिल्प	डॉ. नरनारायण राय	डॉ. विश्वेश्वर मिश्र पूर्णिया कॉलेज, पूर्णियाँ	1992
12.	नाट्यशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे अंकीया नाटक नाट्यवस्तुक शास्त्रीय अध्ययन	डॉ. तारानन्द सादा	डॉ. जटेश्वर झा 'जटिल' टी.पी. कॉलेज, मधेपुरा	1992

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
3.	मिथिलाक लोरिक लोकगाथाक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ.मनोज कुमार मिश्र	डॉ. नन्द नन्दन झा जे.एन. कॉलेज, मधुबनी	1989
4.	मैथिली लोकगाथामे सती बिहुला	डॉ.तेजनारायण पंडित	डॉ. कमलकान्त झा जी.डी. कॉलेज, जयनगर	1990
5.	ज्योति लोकगाथाक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन	डॉ.शिव प्रसाद यादव	डॉ. मनोरंजन झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1993
6.	लोकगाथा एवं लोकगाथापर आधारित उपन्यासक अध्ययन	डॉ. नारायण झा	डॉ. कुमर कान्त पाठक एल.एन.जे. कॉलेज, झंझारपुर	1993
7.	विद्यापतिक काव्यमे लोक जीवन	डॉ. पृथ्वीचन्द्र यादव	डॉ. देवनाथ झा एम.के.कॉलेज, लहेरियासराय	1995
8.	कारिख पजियार : मैथिली लोगगाथाक समालोचनात्मक अध्ययन	डॉ. महेन्द्र नारायण राम	डॉ. खुशीलाल झा एल.एन.जे. कॉलेज, झंझारपुर	1999
9.	मैथिली लोकगाथामे देवी देवता : एक अनुशीलन	डॉ. रामराजी यादव	डॉ. राजाराम प्रसाद सहरसा कॉलेज, सहरसा	2000
10.	लोकगायक महान नायक कारू खिरहड़ि	डॉ. दिनेश कुमार दिवाकर	डॉ.लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2002
11.	मैथिली लोकआख्यानमे नारी-चित्रण	डॉ. शान्ति कुमारी	डॉ. राजाराम प्रसाद सहरसा कॉलेज, सहरसा	2006

नाट्यसाहित्य

1.	मैथिली एकाङ्कीक उद्भव ओ विकास	डॉ. विष्णुकान्त मिश्र	डॉ. का□चीनाथ झा 'किरण' दरभंगा	1981
2.	मैथिली कीर्त्तनि□ा नाटकक काव्यशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. माधुरी झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1984

जलग्रहण क्षेत्रमे पर्याप्त जल होयबाक कारण अधोमुख प्रवृत्तिवला बाढ़िक पानिसँ उबडुब करए लगैत अछि, लागल फसिल बर्वाद भए जाइत अछि, भण्डारण कएल गेल अन्न सड़ि जाइत अछि, पशु ओ मनुक्ख दहि जाइत अछि तथा माटिक बनल घर भसि जाइत अछि। नेता लोकनि भाषण दैत छथि, आश्वासन दैत छथि, विमानसँ पैकेट खसबैत छथि, नाना प्रकारक बाढ़िनिरोधक योजना बनबैत छथि, ठीकेदार अबैत छथि, नहरपर छहर बनबैत छथि, मरम्मति करैत छथि आ पुनः अगिला वर्ष वैह !

मिथिलामे बाढ़ि कोनो नव समस्या नहि थिक, पहिनहुँ अबैत छल, फसिलो दहाइत छल, लोक आ मालो मरैत छल, टटघर आ भीतघर सेहो दहाइत छल, किन्तु एहि स्तरपर नहि । कमसम । लोकके ँ देह लगाकए मारबे जोगरक । ओतबा लोकके ँ अङेजले रहैत छलैक ।

जेना-जेना प्रकृतिक संग विज्ञानक द्वंद्वयु□ बढ़ैत गेल, बाढ़िक भीषणता प्रबल होइत गेल । बाढ़ि रोकबाक हेतु अनेक नहरि खुनाओल गेल आ कतोक छहरक निर्माण भेल । मुदा ताहिसँ की ? कोनो वर्ष एहन नहि बीतैत अछि जे जूनसँ अगस्त धरि मिथिलाक धरतीपर चानी नहि पीटल हो ।

'जल ही जीवन है' प्रसि□ अछिए । संस्कृतमे सेहो जलके ँ जीवन कहल गेल अछि । अमरकोषमे जलक पर्यायवाची शब्द जे देल गेल अछि ताहिमे 'जीवन' सेहो अछि । द्रष्टव्य थिक—

आपः स्त्री भूम्नि वर्वारि सलिलं कमलं जलम् ।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥
कबन्धमुदकं पाथः पुष्करः सर्वतोमुखम् ।
अम्भोर्णस्तोय पानीय नीरक्षीराम्बुसम्बरम् ॥

एहन जीवनतत्त्वके ँ लोक रोकि कए राखए चाहैत अछि, कारण जे वस्तुतः जीवन एहीपर निर्भर करैत अछि मुदा जखन ओ जीवन लेमए लगैत छैक तऽ लोक जल्दी-जल्दी जेम्हरे-तेम्हरे ओकर कल-कल छल-छल करइत वेगवती धाराक मुँह मोड़ि दैत अछि— 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' ।

मिथिलामे बाढ़िक भीषणताक कतोक कारण अछि । सबसँ पैघ गप्प तऽ ई अछि जे नेपालमे मजगूत बान्ह नहि रहलासँ जलके ँ तीव्र गतिसँ रोकब कठिन होइत अछि । मिथिलाक भूमितल नीच रहबाक कारण वेगवती धारा प्रचण्ड रूप धारण कए पैघ-पैघ नदीके ँ भरैत, तटबंध सभके ँ तोड़ैत लोकक खेत-खरिहान, डीह-डाबर, घर-द्वारि सर्वत्र ताहि गतिसँ हुलि दैत अछि जे क्यो सम्हारि नहि पबैत अछि । प्रतिवर्ष एहि अवश्यम्भावी विनाशके ँ लोक बर्दास्त करैत अछि मात्र ईश्वरक नामपर । सरकार सेहो सजग रहैत अछि,

प्रतिकारो करैत अछि, लाख नहि, करोड़पर खर्च सेहो होइत अछि, मुदा बाढ़िक विभीषिकासँ लोककेँ सीदित होमए पड़िते छैक । सभटा सड़क तहस-नहस भए जाइत अछि, जीर्ण-शीर्ण कठपुला सभ ध्वस्त भए जाइत अछि, रेल लाइन आ सड़कपरसँ जल प्रवाहित होमए लगैत अछि । परिणामतः सड़क आ रेल दुनू तरहक आवागमन अवरु□ भए जाइत अछि । एकर कारण की ? हमरा जनैत कारण स्पष्ट अछि । एक तऽ नेपालमे जलकेँ रोकबाक कोनो व्यवस्था नहि अछि । दोसर जे नदीबहुल क्षेत्रक नदी, नहरि, पोखरि, इनार सभ ऊथर भए गेल अछि, भरि गेल अछि । भरबाक सेहो कतोक कारण अछि - एक तऽ प्रतिवर्ष बाढ़ि द्वारा आनल गेल पाँक, माटि इत्यादिसँ आ दोसर बढ़ैत जनसंख्याक कारणेँ आवासक हेतु कतोक पोखरि नहरिकेँ भरि कए आवास बनाओल गेलाक कारण । पोखरि इनार-खुनयबाक प्रवृत्ति आब समाप्तप्राय अछि मुदा भरबाक जोर-शोरसँ । मात्र आवासे नहि, चासोक हेतु लोक धारसँ नहरि आ नहरिसँ पोखरिक मुँह तक पहुँचयबला नाला सेहो भरि-भरि कए घर बनाए लैत अछि, जकरा ने क्यो रोकनिहार आ ने देखनिहार । यैह सभ कारण थिक जे जलकेँ कतहु अँटकबाक जगह नहि भेटैत छैक आ ओ लोकक घरद्वारि हुलि दैत अछि ।

बाढ़िसँ सबसँ बेसी प्रभावित होमएबला क्षेत्र अछि कोशी एवं कमला-बलानक तटवर्ती इलाका । एक तँ बरिसातमे सभटा नदी नाला अपनहिँ भरल रहैत अछि आ ताहिपरसँ नेपाल द्वारा छोड़ल गेल पानि एही कोशी-कमला-बलानसँ आबि विनाशलीला पसारि दैत अछि । एहिसँ सर्वाधिक प्रभावित होइत अछि कमजोर एवं कृषक वर्गक लोक । सामान्यतया कमजोर वर्गक लोकक घर फूसक रहैत छनि जे बाढ़िमे निश्चित रूपेँ विनष्ट भए जाइत छैक, कतोक पशु आ मनुष्य सेहो भसि जाइत अछि । कृषक लोकनिक घर आ बाहर दुनू समाप्त भए जाइत छनि, जनिक भविष्य कृषियेटापर निर्भर रहैत छनि ।

बाढ़िक समयमे उपयुक्त पुलकेँ ध्वस्त भेने कतोक पैघ-पैघ क्षेत्रक सड़क आ रेलसम्पर्क टुटि जाइत अछि, जाहिसँ मिथिलांचलक जनताकेँ अत्यधिक परेशानी बढ़ि जाइत छैक । एतबे नहि, उपयुक्त स्थलमे पुलक अभावक कारण जलक निकासमे सेहो बाधा पड़ैत छैक जाहि कारणेँ बाढ़िक पानि अधिक दिन धरि अटकल रहि जाइत छैक ।

जेना कि पूर्वहुमे चर्चा भए चुकल अछि जे बाढ़िक समस्याक समाधानक हेतु सरकार प्रतिवर्ष करोड़मे खर्च करैत अछि, नाना प्रकारक उपाय कएल जाइत अछि, मुदा एहि समस्याक निदान हमरा जनैत एहि रूपेँ सम्भव नहि छैक । यावत धरि बाढ़िक व्यापकतापर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श कए समय रहैत ओकर समाधान नहि कएल जाएत तावत धरि ई मिथिलाक धरती बाढ़ि रूपी दानवक अत्याचारकेँ लाचार बनलि सहैत रहतीह । ई समस्या दिनानुदिन गम्भीर बनल जाइत अछि । पूर्व कालमे जँ बाढ़ि अबैत छल तऽ घेरल जमा कएल पानि नहि रहैत छलैक । क्रमशः जल अबैत छल आ

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
12.	भारतीय काव्यशास्त्रक विशिष्ट संदर्भमे अम्बचरित महाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. सर्वनारायण झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1995
13.	राधा विरह : एक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. इन्दिरा झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1997
14.	रमेश्वर चरित मिथिला रामायण एवं रामचरित मानसक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. नवलकिशोर ठाकुर	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	2002

खण्डकाव्य

1.	मैथिली खण्डकाव्यक उद्भव ओ विकास	डॉ. मुक्तेश्वर मिश्र	डॉ. दयानन्द झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1984
2.	समकालीन संदर्भमे मैथिली खण्डकाव्यमे नारी पात्रक प्रासंगिकता	डॉ. दुर्गानन्द झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1988
3.	मैथिली रामकथामे बीरबालक खण्डकाव्यक मूल्यांकन	डॉ. मोहन झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
4.	मैथिली खण्डकाव्यमे बिम्ब-योजना	डॉ. नरेन्द्र कुमर	डॉ. दयानन्द झा वि. मै. विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2001

लोकसाहित्य

1.	मैथिली लोकमहाकाव्य : आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. वीरेन्द्रनाथ झा	डॉ. विश्वेश्वर मिश्र पूर्णियाँ कॉलेज, पूर्णियाँ	1987
2.	मैथिली लोकसाहित्यमे लोकसंस्कृतिक आधार	डॉ. शशिभूषण झा	डॉ. चण्डेश्वर झा दरभंगा	1989

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
3.	मैथिली महाकाव्यमे वस्तु-विन्यास	डॉ. हीरा मंडल	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1987
4.	कविचन्द्रक मिथिलाभाषा रामायणमे व्यवहृत लोकोक्तिक विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ. लालपरी देवी	डॉ. महेन्द्र झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1990
5.	मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण	डॉ. पशुपति नाथ झा	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' वि. मैथिली विभाग, ल. ना .मि. वि., दरभंगा	1990
6.	लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे शक्तिक स्वरूप	डॉ. राधाकृष्ण झा	डॉ. कुलधारी सिंह जे. एन. कॉलेज, मधुबनी	1991
7.	दत्त-वती महाकाव्यक शास्त्रीय अनुशीलन	डॉ. अशोक कुमार झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1991
8.	कृष्णचरित महाकाव्यक काव्यशास्त्रीय अनुशीलन	डॉ. फुलेश्वर झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1992
9.	रुक्मिणी परिणय महाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. उषा कुमारी	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1992
10.	मैथिली महाकाव्यमे प्रकृति-वर्णन : स्वरूप विवेचन	डॉ. मुनीन्द्र कुमार झा	डॉ. शिव शंकर झा 'कान्त' सी. एम. कॉलेज, दरभंगा	1993
11.	मार्कण्डेय प्रवासीकृत अगस्त्यायिनी महाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. फुलेश्वरी कुमारी	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा	1993

गहीँर पोखरि, नदी सभकेँ भरैत लोकक खेत-खरिहानमे पहुँचैत छल । ओकर तीव्रता कम रहैत छलैक । स्वाभाविक छैक, जलक प्रवाहकेँ जतेक बाधित करबैक ततेक ओकर वेग प्रबल होएतैक ।

हमरा जनैत मिथिलामे बाढ़िक समस्याक समाधानक हेतु मात्र सरकारेटापर निर्भर रहब उचित नहि । मिथिलाक जनजनमे युवकसँ युवती धरि, बच्चासँ बूढ़ धरि, निर्धनसँ धनाढ्य धरि, विद्वानसँ मूर्ख धरि, प्रत्येक वर्ग आ वर्णक लोक सभक मोनमे एक समान भावना रहबाक चाही जे अपन क्षेत्रक विकास कोन प्रकारेँ होएत, एकर समस्याक समाधान कोना करब ? लोकमे स्वत: एहन प्रवृत्ति रहबाक चाही जे पोखरिक मोहार वा पोखरि भरि घर नहि बनाबी, नदी-नाला भरि चास आ आवासक विकास नहि करी, कठपुलाक लकड़ी चोराए 'चौकी' आ 'हरीस' नहि बनाबी, बिजलीक पोलक तार काटि आङनमे डोरि नहि टांगी आ सरकारी जंगल काटि 'घूर' नहि पजारी । एतबे नहि, जनसंख्यापर नियंत्रण सेहो बाढ़िनियंत्रणमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि, कारण जे यदि जनसंख्या वृ□ नहि होयत तऽ लोककेँ पोखरि आ नहरि भरि घर बनयबाक प्रयोजने नहि होएतैक ।

मिथिलाक बाढ़िनियंत्रणमे सरकारक तऽ महत्त्वपूर्ण भूमिका अछिए, किन्तु मात्र बिहार सरकार वा केन्द्र सरकारेटाक इच्छासँ एहिपर पूर्ण नियन्त्रण पायब असम्भव सन बुझि पड़ैछ । पूर्वहि उल्लेख कएल गेल अछि जे हिमालयक सन्निकट मिथिलांचल अछि आ पर्वतीय क्षेत्र नेपालक, जे स्वभावत: उच्च छैक आ ओहिसँ मिथिलांचल सद्य: प्रभावित होइत अछि । अत: प्रथमत: सरकारकेँ नेपाल सरकारसँ वार्ता करब आवश्यक छैक आ दोसर मिथिलाक नदी, पोखरि, नहरि, नाला आदि जे बाढ़िक पाँकसँ भरिकए ऊथर भए गेल अछि तकर जीर्णो□ार करबए पड़तैक, जाहिमे बाढ़िक जलक अधिकांश भाग समाहित भए सकए । मिथिलांचलक छोटसँ पैघ नदी, पोखरि आदि जे पूर्वमे अत्यधिक गहीँर छल, दिनानुदिन ऊथर भए गेल । एकर ज्वलन्त उदाहरण अछि कमला-बलानक तटबन्ध । एहि तटबंधपर पीचरोड अछि, जाहिपर अनगिनत बस आ ट्रकक परिचालन प्रतिदिन होइत अछि । जँ एहि तटबंधसँ पयरे चलब तऽ स्पष्ट बूझि पड़त जे जलग्रहण क्षेत्र (तटबन्धक भीतरक क्षेत्र) पर्याप्त उच्च अछि आ तटबंधक बाहरी क्षेत्र नीच । आब सोचल जा सकैत अछि जे भीतरी भाग कोना उच्च भेल होएत ? निश्चय बाढ़िक पाँक आ प्रतिवर्ष तटबंधक कटानक माँटिसँ भीतरक भाग भरल जा रहल अछि । तेँ उच्च स्थानपर पानिकेँ घेरि कए राखब दुष्कर अछि । फलत: तटबंधपर अत्यधिक दबाव पड़ैत छैक आ ओहिमे दरार अबैत छैक । कनियेँ टुटबाक काज । तत्पश्चात् बाहरक क्षेत्र तऽ नीच छैके । तीव्र गतिएँ निकटवर्ती क्षेत्र जलाप्लावित होमए लगैत अछि । आइ बाढ़िक समस्याक स्थायी समाधानक हेतु हमरा विचारेँ एकमात्र उपाय अछि जे नदी

सभक माँटि काटि ओकरा पूर्ण गहीँर कएल जयबाक चाही आ ओहि माटिसँ ओकर तटबंधकेँ सेहो पूर्ण मजगूत बनाओल जाए । तटबंधक भीतरी सतह निश्चित रूपसँ बाहरी सतहक अपेक्षा पर्याप्त गहीँर रहबाक चाही । एतबा अवश्य जे ई सामान्य गप्प नहि छैक, पर्याप्त खर्चसाध्य छैक, समयसाध्य छैक । एहिमे किछु वर्षक समय अवश्ये लगतैक, मुदा हमरा जनैत बहुत अंशधरि बाढ़िक खतरा दूर भए जाएत । एहि खनन प्रक्रियाक अन्तर्गत सभसँ जटिल कार्य अछि जे छोट-छोट धार, नहर, नाला, पोखरि इत्यादिक वास्तविक नाप कराए, अतिक्रमित भूमिपर नियन्त्रण कए ओकरा पूर्णरूपमे आनब, अर्थात् तत्परतासँ यदि कएल जाए तऽ कमसँ कम एक पंचवर्षीय योजना अवश्ये लागत, किन्तु मिथिलांचलक हेतु एकटा वरदान सि□ होएत । एतए केर मजदूरकेँ रोटीक ताकमे हरियाणा आ पंजाब नहि जाए पड़तैक, लोककेँ फसिल दहयबाक डर नहि रहतैक आ ने समेटल अन्न भसिअयबाक ।

एहि जटिल कार्यक हेतु हम युवावर्गक आह्वान करैत छियनि जे ओलोकनि दृढ़तापूर्वक अग्रसर होथु आ सरकारक ध्यान एहि दिशामे आकृष्ट करथु, जाहिसँ बाढ़िक स्थायी समाधान भए सकत, अन्यथा प्रतिवर्ष सड़क आ बान्हक मरम्मतिमे करोड़ो रुपैयाक अपव्यय तऽ होइते रहत आ लोकक जान-माल, घर-द्वारि, उपजा-बारी सभ किछु विनष्ट होइत रहत ।

(स्मारिका : सातम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जमशेदपुर, 8-9 जनवरी 2000)

V

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय–प्रदत्त मैथिलीमे पी-एच.डी. उपाधि

मिथिलाक हृदयस्थलमे विराजमान ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विषयमे पी-एच.डी.क उपाधि प्रदान करबामे कोनो अन्य विश्वविद्यालयसँ बहुत आगाँ अछि । एहि विश्वविद्यालयक स्थापनाक पश्चात् अद्यावधि विभिन्न विषयपर शोधकार्य भेल अछि आ दू सयसँ अधिक शोधकर्त्ता लोकनिकेँ पी-एच.डी.क उपाधि प्रदान कयल गेलनि अछि । आब किछु वर्षसँ पी-एच.डी. करबाक प्रक्रिया जटिल भए गेल छैक । पूर्वमे तऽ कोनो स्नातकोत्तर डिग्रीधारीकेँ शोधकार्य करबाक आर्हता प्राप्त छलनि मुदा आइ पी.आर.टी. (प्री रजिस्ट्रेशन टेस्ट)क परीक्षामे सम्मिलित भए ओहिमे उत्तीर्णता प्राप्त कयलाक पश्चाते शोधकार्य करबाक हेतु निबन्धन कयल जाइत अछि । निबन्धनसँ पूर्व शोधकर्त्ता लोकनिकेँ शोध-प्रारूप बनबय पड़ैत छनि जाहिमे हुनका अपन शोध-निर्देशकक सहयोग भेटैत छनि । एहि क्रममे शोधकर्त्ता एवं शोधनिर्देशककेँ ई बुझबाक प्रबल जिज्ञासा रहैत छनि जे पूर्वमे कोन-कोन विषयपर कार्य भेल अछि । कारण जे विषयक पुनरावृत्ति नहि होयबाक चाही । एहि आशयक प्रमाण-पत्र शोध निर्देशककेँ देमए पड़ैत छनि । एतय हम उपलब्ध सूचनाक आधारपर विभिन्न विषयपर भेल शोधकार्यकेँ वर्गीकृत कए उपस्थापित करबाक प्रयास कए रहल छी, जकरा सुधीवृन्द ध्यानस्थ भए पढ़थि आ सोचथि जे की एकहि विषयपर तऽ दोबारा कार्य ने भऽ गेलैक अछि ?

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
महाकाव्य				
1.	कविवर लालदास ओ हुनक रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोती लाल	डॉ. शिवशंकर झा ‘कान्त’ पी. जी. सेंटर, सहरसा	1986
2.	मैथिली लोकमहाकाव्य : आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. वीरेन्द्र नाथ झा	डॉ. विश्वेश्वर मिश्र पूर्णिया कालेज, पूर्णियाँ	1987

करतैक । बेसीसँ बेसी संयमी महिला अपनापर नियंत्रण राखि सकैत छथि, किन्तु तेँ हुनकापर अत्याचार नहि होयतनि, तकर के गारन्टी लेत ? यात्रीजीक शब्दमे एक विधबाक करुण क्रन्दन अवलोकनीय थिक –

धर्मसँ जीवन बिताबै चाहैत छी
इज्जति आबरू बचाबै चाहैत छी
तैयो करऽ चाहै छथि हमरा नचार
केहन-केहन चानन ठोप कैनिहार ।

पुनः ओहि विधबाक आक्रोश शत-शत ज्वालामुखी सदृश फूटि पड़ैत अछि --

अगराही लगौ बरु बज्र खसौ
एहन जातिपर बरु धसना धसौ
भूकम्प हौक बरु फटौक धरती
माँ मिथिला रहियेकऽ की करती ?

आब सहज सोचबाक बात थिक जे एतेक पैघ आक्रोश रखनिहारि देश वा समाजक कार्यमे सहयोग कऽ सकति ? सभसँ प्रथम प्रयास एही दिशामे होयबाक चाही, तखने टा मिथिला पूर्ण विकसित भऽ सकत, नारी समाजक आदर भऽ सकत । जँ अपन अधिकार ओलोकनि छोड़ि देतीह तँ सभ दिन अनके शरणमे दिन बिताबऽ पड़तनि, पुरुषेक तरबा चटैत समय काटऽ पड़तनि । अधिकार प्राप्त करबाक हेतु त्याग ओ साधना करऽ पड़ैत छैक । ई मङलासँ नहि भेटैत छैक—

माँगे मिलती है भीख किन्तु
माँगे मिलता अधिकार नहीं
माँगा था केवल पाँच ग्राम
पर सूइ अग्र विस्तार नही

पण्डित सीताराम झा सेहो एहने भाव प्रदर्शित कयने छथि—

अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने ?
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ?

अतः नारी समाजकेँ अपन विकास, अपन भावी सन्ततिक विकास तथा अपन देशक विकासक हेतु सजग भऽ प्रयास करब आवश्यक छनि । ककरो गरदनिक ढेकुल बनिकऽ रहब वा अनको विकसित बु□केँ ह्रासोन्मुख करब हुनकालोकनिक कर्त्तव्य नहि थिकनि ।

(मिथिला मिहिर, 6 अप्रैल 1980)

V

मिथिलांचलक विकास आ महिलाक दायित्व

मिथिलांचलक प्रसंग जखन हमरालोकनि विचार करऽ लगैत छी तँ सर्वप्रथम एकटा समस्या समक्षमे अबैत अछि, जे थिक एकर सीमाक निर्धारण । सीमा-निर्धारणक पश्चाते एकर कोनो समस्यापर विचार करब समुचित होयत । मात्र दरभंगे मधुबनी परिसरक क्षेत्रकेँ मिथिला□चल नहि कहल जा सकैछ । एहि प्रसंग हमरा लोकनि कवीश्वर चन्दा झाक मतक अनुसरण करी, से बेसी नीक होयत । ओ मिथिलांचलक चौहद्दीक प्रसंग कहने छथि –

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा ।
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ॥
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा बागमती कृतसारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ॥

आजुक समय थिक प्रयोगक । लोक नव-नव प्रयोग करैत अछि । अपन सभ्यता-संस्कृतिकेँ बदलि नवयुगक स्थापना करैत अछि । भेष-भूषा, खान-पान, रहन-सहन आदि सभ किछु बदलल जाइत अछि । किन्तु मिथिलांचलक लोक एखनो परम्परावादी छथि, अन्धविश्वासी छथि तथा भाग्यवादी छथि । यैह कारण थिक जे हमरा लोकनिक सर्वाङ्गीण विकास नहि भऽ रहल अछि ।

मिथिलांचलक विकासक हेतु महिलाक दायित्व महत्त्वपूर्ण अछि । मिथिला आधुनिक युगक अनुसार अनेक तरहेँ पाछू भऽ जाइत अछि, जकर कारण ई थिक जे एतऽ नारीक स्थान गौण छैक । ओकरा कोनो अधिकार नहि देल गेल छैक । ओकर अस्तित्व नगण्य छैक । यद्यपि कहल तँ ई गेल अछि जे जतऽ नारीक सम्मान होइछ ओतऽ देवता लोकनिक निवास रहैत अछि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

हमरा लोकनिक ओतऽ एहन देखल जाइत अछि जे लोक बालककेँ पढ़यबापर पूर्ण तत्पर रहैत अछि, किन्तु बालिकाक लेल कोनो चिन्ता नहि । ई आवश्यके नहि बुझना

जाइत छैक । एहि लेल जँ ककरो कहबो करबै तँ उत्तर भेटत जे -- की करबै पढ़ा-लिखाकऽ ..... बेटी बेटी छिऐ .... विवाह हेतै सासुर जायत......कोनो नौकरी-चाकरी थोड़बे करबाक छैक ? स्कूल-कॉलेज जाकऽ पचीस रंगक बात .... ।

आब सोचल जा सकैत अछि जे जाहि ठाम एहन संकुचित विचारधारा रखनिहार लोक रहैत हो ताहि देशक विकास कोना होयत ? जतऽक नारीमे बाल्यकालेसँ हीनताक भावना भरि देल जाइत छैक ओ नारी देशक विकासक हेतु की सोचि सकैत अछि ? हँ, आब किछु ध्यान देलो जा रहल अछि बस एही लेल जे कहुना ओकरा नीक घर-वर भऽ जाइक । आब तँ ईहो एक टा पैघ समस्या भऽ गेलैक अछि । निर्धोख रूपेँ पूछि दैत छैक जे कनियाँ कोन वर्गमे पढ़ैत अछि ? तथापि कतेको व्यक्ति एही पक्षमे रहैत छथि जे झूठ-फूसि बाजिकऽ कहुना विवाह करा दिऐक, बादमे जकर कपार खाइक । ई परम चिन्ताक बात थिक । सन्तान कोनो रहय- बेटा वा बेटी- माय-बापक प्रथम कर्त्तव्य थिकैक जे अपन स्वार्थक पाछू ओकर जीवन नष्ट नहि करैक, अर्थात् ओकरा सुशिक्षित बनयबाक हेतु अथक प्रयास करैक । ओ माय-बाप शत्रु थिक जे अपन सन्तानकेँ नहि पढ़बैत अछि—

माता शत्रुः पिता बैरी ये न वालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंस मध्ये बको यथा ॥

हमरा लोकनिक प्रशिक्षित महिला समाजक कर्त्तव्य होइत छनि जे ओलोकनि मिथिलांचलक भावी विकासक हेतु एहि दिशामे जोरदार आवाज निकालथि, सधल चरण बढ़ाबथि ।

एहूसँ विशेष चिन्तनीय बात तँ ई थिक जे एतऽ जीवनक जे सभसँ बेसी महत्त्वपूर्ण बात, से लोक अपना विचारेँ नहि कऽ पबैत अछि । ओ बात थिक 'विवाह'- दू पूर्णतः भिन्न मनःस्थितिक एकीकरण । मिथिलाक ई परम्परा अछि जे पुरुष रहय वा नारी, अपन विवाहक प्रसंग बजबाक अधिकारी नहि अछि । जँ क्यो एहि सामाजिक बन्धनसँ अपनाकेँ मुक्त करऽ चाहैत छथि तँ हुनका समाजमे उपहासक पात्र बनऽ पड़ैत छनि । ई कम सोचनीय गप्प नहि थिक । लोककेँ दू-चारि दिन वा घंटाक लेल ककरो संग एडजस्ट करबामे असौकर्य भऽ सकैत छैक तँ सम्पूर्ण जीवनक हेतु एहन बात सोचब कते कठिन होयत ? यदि दुहूक बीच मनोमालिन्य रहि गेलैक तँ की ओकर जीवन घोर नरक तुल्य नहि भऽ जयतैक ? की ओ देश वा राष्ट्रक विकासक हेतु चिन्तन-मनन कऽ सकत ?

एहि दिशामे पुरुष वर्गकेँ तँ क्रमशः किछु स्वतन्त्रता भेटि गेलैक अछि, किन्तु नारी समाज एखनो धरि ओहि परम्परावादी समाजक घोर अन्हार कोठलीमे नुकायल अपनाकेँ सड़ा रहलि अछि । अपन व[illegible]ष्णु बु[illegible], संस्कार सभकेँ मलिन बनौने जा रहलि अछि, ठीक ओहिना जेना छाउर चिनगारीकेँ झँपने जाइत हो । की ओकर मोन कहियो शांत भऽ सकैत छैक, जे अपन उज्ज्वल भविष्यक कल्पना करैत छलि, अपन शुभ समयक

आगमनक प्रतीक्षा करैत छलि आ परिणाम ई होइत छैक जे ओकरा कोनो लुल्ह, नाङर वा आन्हर वरक हाथमे दऽ पिता अपनाकेँ स्वच्छन्द बुझि लैत छथि । मुदा, ओहि अबला नारीक की दशा होयतैक से तँ सहजहिँ कल्पना कयल जा सकैछ । एहिसँ नीक तँ ई होइत जे जन्म ग्रहण करिते पिता स्वयं अपनहिँ हाथेँ ओहि शिशुक जीवन समाप्त कऽ दितथि । भरिजन्म जे लोक चिंतारूपी ज्वालामे दग्ध होइत रहत ताहिसँ नीक अग्निक प्रज्वलित चिता । चितामे तँ मरलाक बाद लोककेँ जराओल जाइत छैक, किन्तु चिन्ता तँ प्राण अछैते लोककेँ जरा दैत छैक । कहल गेल अछि—

चिता चिंता समाख्याता विन्दु मात्रं विशेषिका ।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता प्राणिनां सदा ॥

अपिच—

चिन्ता है बड़ी चिता से भी नर को निर्जीव बनाती है ।
है चिता जलाती मुर्दा को चिन्ता जीते को खाती है ।

कतेको कन्या एही सामाजिक बन्धनक कारण आइ कुमारि पड़लि अछि । यदि माय, बाप आ समाज ओकरा लेल नहि सोचैत छैक तँ बन्धन कथीक ? लोक किएक समाज, परिवार आ सम्बन्धी वर्गक रोच राखत ? वस्तुतः नारी समाजकेँ एहि विषयपर गम्भीर चिन्तन कऽ एहि मार्गकेँ सुगम ओ प्रशस्त बनायब आवश्यक । एक व्यक्तिक चिन्ता नहि छैक, चिन्ता छैक भावी संततिक, चिन्ता छैक देशक अवनतिक, चिन्ता छैक दुराचारीक बृ[illegible]क । हमरा विचारेँ जीवनक एहि महत्त्वपूर्ण कार्यक सम्पादनमे कन्या-वरक प्रधानता रहबाक चाही, अन्यक सहयोग मात्र, तखने टा लोकक जीवन शांत ओ सुखमय रहतैक । लोककेँ चिन्तन-मनन करबाक अवसर भेटतैक । नारी समाजमे आब एहि तरहक जागरण होयब नितान्त आवश्यक अछि, अन्यथा मिथिलांचलक विकास किन्नहुँ नहि भऽ सकैत अछि । ई अवनतिक गर्तमे खसि पड़त ।

एक समस्या अछि विधवाक पुनर्विवाहक । हम सभ देखैत छी जे परिवारमे महिलाकेँ वैधव्यक कष्ट भोगऽ पड़ैत छनि । एहिमे कतेक पैघ राजनीति अछि ! पुरुष जे सर्वशक्तिमान अछि - पुनर्विवाह कऽ सकैत अछि, किन्तु महिला जे स्वभावतः अनाथ अछि, पुनर्विवाहक अधिकारी नहि, चाहे विवाहक वेदीयेपर किए ने ओकर स्वामीक निधन भऽ गेल हो ! ओहि बेचारी अबला नारीक की गति होयतैक जकरा दाम्पत्य जीवनक गन्धो तक नहि लगलैक ? ओकर पुनर्विवाह करायब अत्यन्त आवश्यक अछि, अन्यथा पहिलुका सतीप्रथा सैह नीक छल । यदि सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टियेँ पुरुष ओ महिलाकेँ समान अधिकार छैक तँ होयबाक ई चाही जे विधबाक विवाह विधुरक संग हो । अन्यथा समाजमे अपराध बढ़त । वयसक अनुसार लोकक आचरण होयबे

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
कविता				
1.	मैथिली नव कविता	डॉ. नबोनाथ झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1982
2.	आधुनिक मैथिली कवितामे कल्पनातत्वक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. निरंजन कुमार	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
3.	मैथिली नव कवितामे जन संघर्ष आ विद्रोहक स्वर	डॉ. लक्ष्मण झा	डॉ. धीरेन्द्र नारायण झा सुपौल	1997
व्यक्तित्व एवं कृतित्व				
1.	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क व्यक्तित्व ओ कृतित्व	डॉ. कुलधारी सिंह	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1983
2.	राजकमल : जीवन ओ साहित्य	डॉ. देवशंकर झा	डॉ. शिव शंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1989
3.	पंडित हर्षनाथ झाक व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. विनयधारी सिंह	डॉ. वेदनाथ झा आर. के. कॉलेज, मधुबनी	1990
4.	साहेबराम दासक व्यक्तित्व ओ कृतित्व	डॉ. पालन झा	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1991
5.	बिलट पासवान विहंगम : व्यक्तित्व ओ कृतित्व	डॉ. मदन कुमार पासवान	डॉ. उर्मिला प्रसाद आर.के. कॉलेज, मधुबनी	1994
6.	चौधरी केदारनाथ ठाकुर : व्यक्तित्व ओ कृतित्व	डॉ. अमोल कुमारी झा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र एम.के. कॉलेज, लहेरियासराय	1996
7.	श्री राम लषण राम 'रमण' : व्यक्तित्व ओ कृतित्व	डॉ. बुचरू पासवान	डॉ. महेन्द्र प्रसाद सिंह दोनवारीहाट, खुटौना	2008

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
कथाकाव्य				
1.	मैथिली कथाकाव्यक उद्भव ओ विकास	डॉ.रमेश कुमार चौधरी	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
2.	द्वादशीक विशेष संदर्भमे मैथिली कथाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ.अरुण कुमार कर्ण	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
पत्र-पत्रिका				
1.	मैथिली साहित्यक विकासमे मिथिलामोद पत्रिकाक योगदान	डॉ.कैलाश नाथ झा	डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1982
2.	मैथिली साहित्यक विकासमे वैदेहीक योगदानक मूल्यांकन	डॉ. शिवचन्द्र झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
3.	उपन्यासक क्षेत्रमे मिथिला मिहिरक योगदान	डॉ. मन्त्रनाथ झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
भाषाविज्ञान				
1.	मैथिलीक प्रमुख पारंपरिक जातीय व्यवसाय संबंधी शब्दावलीक भाषातात्विक अध्ययन	डॉ. योगानन्द झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
2.	मैथिली साहित्यमे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्विक अध्ययन	डॉ. ललिता झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
3.	मैथिली ओ मगहीक परस्पर संबंध विश्लेषण	डॉ. सत्यनारायण यादव	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
4.	मैथिलीक उपभाषा : एक अध्ययन	डॉ. भवनाथ झा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र एम.के. कॉलेज, लहेरियासराय	1992
5.	मैथिली ओ भोजपुरीक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. किरण कुमारी	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
6.	मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भेष-भूषा-प्रसाधन संबंधी शब्दावलीक भाषातात्विक अध्ययन	डॉ. कमला चौधरी	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
7.	मैथिली देशी शब्दक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ.जानकी प्रसाद चौधरी	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा	1997
8.	मैथिली भाषा आ एकर विविध बोली : वर्त्तमान संदर्भमे एक विश्लेषण	डॉ.अशोक कुमार झा	डॉ. रमण झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1999
गीत				
1.	मैथिली लोकगीतक संगीत शास्त्रीय अध्ययन	डॉ. चण्डेश्वर झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1979
2.	विद्यापति पदावलीपर श्रीमद्‌भागवतक प्रभाव	डॉ.शिवाकान्त ठाकुर	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1979
3.	मधुपक विशिष्ट संदर्भमे मैथिली गीतकाव्यक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. □षि कुमार झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
4.	मैथिली गीतकाव्यक उद्भव आ विकास	डॉ.नन्द किशोर मिश्र	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1987
5.	मैथिली लोकगीतमे नारी स्वरूपक चित्रण	डॉ. मीनू कुमारी	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1990

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
6.	मैथिली लोकगीतमे जीवन दर्शन	डॉ. अशोक कुमार मिश्र	डॉ. नबोनाथ झा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा	1990
7.	कालीवादी ओ गोरैया गीतक अध्ययन	डॉ.गंगा प्रसाद यादव	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
8.	मैथिली लोकगीतमे लोकजीवनक व्याख्या	डॉ. गंगा प्रसाद सिंह	डॉ. चण्डेश्वर झा वि. संगीत एवं नाट्य विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
9.	चन्दाझाक पदावली साहित्यमे मिथिला□चलक लोकचेतनाक तथ्य	डॉ. सि□ार्थ शंकर पाठक	डॉ. रूपनारायण चौधरी जे.एन. कॉलेज, नेहरा दरभंगा	1991
10.	पं.जीवन झाक नाट्यगीतमे संगीतात्मक विश्लेषण	डॉ. उमेश प्रसाद	डॉ. शिव शंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1991
11.	कोशी प्रण्डलक यादव समुदायक संस्कारगीतक वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ. अमोल राय	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
12.	मैथिली लोकगीतमे व्यवसाय संबंधी गीत : परिचय ओ विश्लेषण	डॉ. भारती	डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एम.एल.एस. कॉलेज सरिसवपाही, मधुबनी	1992
13.	संत कवीर भणित मैथिली पदावलीक विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ.कमलाकान्त भंडारी	डॉ. सुभद्र झा	1992
14.	मैथिली साहित्यमे देवता संबंधी गीत आ ओकर समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. योगेश्वर झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1993
15.	मैथिली लोकगीतमे प्रकृति वर्णन	डॉ.सुभाष चन्द्र सिंह	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1996

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
5.	मैथिली साहित्यक विकासमे बेनीपुर अनुमण्डलक योगदान	श्री देवकान्त मिश्र	डॉ. भीमनाथ झा पूर्व प्राचार्य, वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2008
6.	आधुनिक मैथिली गीत साहित्यक विश्लेषणात्मक विवेचन	श्री चन्द्रमणि झा	डॉ. विभूति चन्द्र झा आर.एन. कॉलेज, पण्डौल	2008

डी.लिट्. उपाधि हेतु शोधप्रबंध समर्पित–

1.	मैथिली काव्यपर ज्योतिषक प्रभाव	डॉ. रमण झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2006

V

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
8.	मैथिली आन्दोलनक दशा दिशा : एक सर्वेक्षण	डॉ.वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2004
9.	मैथिली सम्बरकाव्य : एक विश्लेषण	डॉ. हरिनारायण महतो	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2007
10.	मैथिली साहित्यक विकासमे आत्मकथा साहित्यक योगदान	डॉ. अंजू ठाकुर	डॉ. भीमनाथ झा पूर्व प्राचार्य वि. मैथिली विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2007

डी.लिट्.

1.	प्रो. हरिमोहन झाक मैथिली कृतिक आलोचनात्मक परिशीलन	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1997

उपर्युक्त वर्गीकरणमे कोनो कोनो नामक पुनरावृत्ति सेहो भेल अछि यथा 'मैथिली महाकाव्यमे रस'। एहन शोधकार्यकेँ काव्यशास्त्रपर आधारित सेहो मानि लेल गेल अछि आ महाकाव्यपर आधारित सेहो। मुदा एकर संख्या नगण्ये जकाँ अछि।

किछु शोध-प्रबन्ध जे मूल्यांकनक हेतु समर्पित अछि मुदा अद्यावधि ओकर मौखिकी नहि भऽ सकल अछि, ओ थिक—

1.	नेपालक मैथिली नाट्य परम्परा	श्री कुलानन्द झा	डॉ. रामदेव झा लहेरियासराय	2007
2.	मैथिलीक व्रतकथाक समालोचनात्मक अध्ययन	श्रीमती पुष्पा कुमारी	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2008
3.	समकालीन मैथिली कविताक प्रवृत्ति विश्लेषण	श्रीकमलनारायण राय	डॉ. नबोनाथ झा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा	2008
4.	मैथिली साहित्यमे जन चेतनाक स्वरूप विवेचन	श्री राजकुमार सिन्हा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2008

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
16.	मैथिली लोकगीतक साहित्यिक विश्लेषण	डॉ.राधाकान्त यादव	डॉ. राजाराम प्रसाद सहरसा कॉलेज, सहरसा	1996
17.	मैथिली लोकगीतमे सामाजिक चेतना	डॉ. विभूति नाथ चौधरी	डॉ. जटेश्वर झा 'जटिल' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2001
18.	मैथिली लोकगीतमे भक्ति दर्शन	डॉ. एम.एन. सिंह	डॉ. नगेन्द्र नारायण झा जे.एन. कॉलेज, मधुबनी	2003
19.	मैथिली मध्यकालीन नाटकमे प्रयुक्त मैथिली गीतक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. जयप्रकाश झा	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा	2004

काव्यशास्त्र

1.	महाकवि गोविन्ददासक अलङ्कार-योजना	डॉ. जगदीश मिश्र	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1985
2.	आधुनिक मैथिली काव्यमे अलङ्कार-विधान	डॉ. रमण झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
3.	मैथिली पूर्वमध्यकालीन काव्यमे सादृश्यमूलक अलङ्कार	डॉ. वन्दना कुमारी	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1987
4.	गोविन्ददासक साहित्य, दर्शन तथा काव्यशास्त्रीय तत्त्व	डॉ. दिनेश्वर प्रसाद सिंह	प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' डॉ. परमानन्द पाठक (हिन्दी)	1987
5.	मिथिलाभाषा रामायणमे अलङ्कार-योजना	डॉ. हेणु झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
6.	श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क काव्यमे अलङ्कार-योजना	डॉ.राजेन्द्र प्रसाद सिंह	डॉ. दयानन्द झा सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1991

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
7.	कविशेखर बदरीनाथ झाक मैथिली काव्यमे अलङ्कार-योजना	डॉ.विश्वनाथ पासवान	डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एम.एल.एस. कॉलेज सरिसवपाही, मधुबनी	1991
8.	मिथिलाभाषा रामायणमे छन्द-योजना	डॉ. अनिल कुमार झा	डॉ. रमण झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1998
9.	मैथिली महाकाव्यमे रस-निरूपण	डॉ. पशुपति नाथ झा	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1999
10.	मधुपक काव्यमे छन्द-विधान	डॉ. विष्णु प्रसाद मंडल	डॉ. रमण झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2004

विभिन्न परिसर

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
1.	उजान परिसरक विशिष्ट मैथिली साहित्यकारक कृतिक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. महेन्द्र नाथ झा	डॉ. का□चीनाथ झा 'किरण' लोहना, दरभंगा	1986
2.	मधुबनी मण्डलक कुशबाहा समुबाहा समुदायक प्रचलित व्यावहारिक गीतक अध्ययन	डॉ. महेन्द्र प्रसाद सिंह	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1986
3.	मैथिली भाषा आ साहित्यिक विकासमे पूर्णिया परिसरक योगदान	डॉ. एस.एस. झा	डॉ. उमेश मिश्र पी.जी. सेंटर, सहरसा	1989
4.	मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे सहरसा जिलाक योगदान	डॉ. बचेश्वर झा	डॉ. कुमर कान्त पाठक जे.एन. कॉलेज, झंझारपुर	1991
5.	सहरसा जिलाक मैथिली साहित्य ओ साहित्यकार	डॉ. अशोक कुमार सिंह	डॉ. महेन्द्र झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1991

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
12.	रमेश्वरचरित मिथिला रामायण एवं रामचरित मानसक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ.नवलकिशोर ठाकुर	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2002
13.	ए कम्पोजिट स्टडी ऑफ मैथिली एण्ड सिलेटी	सुदीप्ता भट्टाचार्य	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2006

विविध

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
1.	मैथिली लोकोक्तिक अनुशीलन	डॉ. कमलकान्त झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1982
2.	मैथिली नवगीत : विश्लेषणात्मक परिचय	डॉ. रामचैतन्य झा	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' पी.जी. सेंटर, सहरसा	1987
3.	मिथिलांचलमे मधुरोपासनाक परिपाटी आओर मधुरोपासक मोदलताजी	डॉ. मंजू प्रसाद	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा	1993
4.	मैथिली यात्रा साहित्य	डॉ. वैद्यनाथ झा	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1994
5.	मैथिली समालोचना साहित्य : दशा ओ दिशा	डॉ.अरविन्द कुमार सिंह झा	डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1995
6.	मिथिलाक प्रमुख व्रतकथा आ तकर मूल्यांकन	डॉ. विभूति नाथ सिंह	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
7.	मैथिली साहित्यमे जनवादी चिंतन : एक अनुशीलन	डॉ.अनिल कुमार यादव	डॉ. बैद्यनाथ झा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा	2002

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
5.	कविवर चन्दा झाक मिथिलाभाषा रामायण ओ कविवर लालदासक रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक तुलनात्मक विवेचन विश्लेषण	डॉ. कृष्ण कुमार	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
6.	मैथिली ओ भोजपुरीक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. किरण कुमारी	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
7.	साहेबराम दास एवं गोविन्द दासक काव्यमे भक्ति विषयक भावनाक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. नवीन कुमार झा	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा	1993
8.	संतकवि साहेबराम दास ओ संतकवि अपूछ दासक भक्ति काव्यक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. दुर्गानन्द ठाकुर	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
9.	साठ्योत्तर मैथिली हिन्दी नाटकक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. नित्यनन्द झा 'निर्दोष'	डॉ. नरनारायण राय पूर्णिया	1996
10.	मैथिली ओ हिन्दी मुहाबराक तुलनात्मक विवेचन : तत्त्व एवं रूप	डॉ. देवेन्द्र नाथ ठाकुर	डॉ. अमरनाथ चौधरी सी.एम. साइन्स कॉलेज, दरभंगा	1998
11.	सरसकवि ईशनाथ झा ओ पं. श्री गोविन्द झाक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. अजीत मिश्र	डॉ. जगदीश मिश्र एम.एल.एस. कॉलेज, सरिसव पाही	1999

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
6.	कोशी प्रमण्डलक यादव समुदायक संस्कारगीतक वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ. अमोल राय	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
7.	मैथिली साहित्यमे कुमर बाजितपुरक अवदान	डॉ. रूपा कुमारी	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2003
8.	कलकत्ता परिसरमे मैथिली सेवा : एक अनुशीलन	डॉ. अमरनाथ मिश्र	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2006
9.	मैथिली साहित्यक विकासमे कोइलख परिसरक योगदान	डॉ. अर्चना कुमारी	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2007

साहित्य एवं संस्कृति

1.	मैथिली साहिमे प्राचीन एवं मध्यकालीन प्रमुख विद्वान लोकनिक दार्शनिक प्रवृत्ति	डॉ. विजय चन्द्र झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1981
2.	सामाजिक असन्तोष आ तकर मैथिली साहित्यपर प्रभाव	डॉ. नीता झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1983
3.	चन्दा झाक मैथिली रचनामे लौकिक एवं शास्त्रीय तत्त्वक सुनियोजन	डॉ. शान्तिनाथसिंह ठाकुर	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र पी.जी. सेन्टर, सहरसा	1986
4.	मैथिली साहित्यक सामाजिक पृष्ठभूमि	डॉ. मायानन्द मिश्र	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1989
5.	मैथिली काव्यशैलीपर पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव	डॉ. मंजुला मिश्र	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1990
6.	मध्यकालीन नेपाल दरवारक मैथिली सेवा	डॉ.विमलेन्दु प्र० सिंह	डॉ. वेदनाथ झा आर.के. कॉलेज, मधुबनी	1991

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
7.	आधुनिक मैथिली काव्यमे सामाजिक ओ सांस्कृतिक विश्लेषण	डॉ. सुरेश कुमार	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1991
8.	मैथिली समालोचना साहित्य : दशा ओ दिशा	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1995
9.	मैथिली बाल साहित्यक समालोचनात्मक अध्ययन	डॉ. दमन कुमार झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2000
10.	मिथिलाक सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे कवीश्वरक योगदान	डॉ. अरविन्द झा	डॉ. रमण झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2005
11.	साहित्य एवं सांस्कृतिक दृष्टिएँ मिथिलाक जीवनमे वनस्पति	डॉ. लक्ष्मी कुमार कर्ण	डॉ.लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2006

संस्था

1.	मैथिली साहित्यक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाक संरक्षणमे पुस्तकालयक योगदान	डॉ. योगनाथ झा	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1985
2.	साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक पुरस्कृत पोथी : एक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. योगानन्द सिंह झा	डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992

व्यक्तिविशेष

1.	कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कृतिक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. भीमनाथ झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1982

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
4.	मैथिली साहित्यमे आधुनिक प्रवृत्ति	डॉ. चन्द्रदेव झा	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
5.	आधुनिक मैथिली काव्यमे युगसत्यक विवेचन	डॉ.अशोक कुमार सिंह	डॉ. शिव शंकर झा 'कान्त' सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	1992
6.	यथार्थवाद ओ आधुनिक मैथिली साहित्य	डॉ. जी.के. झा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र एम.के. कॉलेज, लहेरियासराय	1995
7.	मध्यकालीन मैथिली भक्ति साहित्य	डॉ.श्याम कुमार चौधरी	डॉ. रामदेव चौधरी शाहपुर पटोरी	1997
8.	आधुनिक मैथिली कवितामे प्रतीक योजना	डॉ. शैलेन्द्र कुमार झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2002

तुलनात्मक विवचेन

1.	मैथिली ओ संस्कृत साहित्यमे गौरी शंकर : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. कामाख्या देवी	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1983
2.	मध्यकालीन मैथिली ओ हिन्दी कृष्ण काव्यक तुलनात्मक विवेचन	डॉ. नारायण झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1988
3.	मिथिलाभाषा रामायण ओ रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. मुरलीधर झा	प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' दरभंगा	1988
4.	उमापतिक पारिजातहरण ओ शंकरदेवक पारिजात हरणक तुलनात्मक विश्लेषण	डा. वीणा मिश्र	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
4.	मैथिली साहित्यमे गंगा	डॉ. योगमाया झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
5.	मैथिली साहित्यमे कृष्ण तत्त्व	डॉ. आदित्य नाथ झा	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1997
5.	मैथिली साहित्यमे श्रीराधा	डॉ.दीर्घ नारायण कुमर	डॉ. उमाकान्त झा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा	1999
6.	मिथिलाभाषा रामायणमे शक्ति तत्व	डॉ. नरेन्द्र नाथ झा	डॉ. रमण झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	2005

नारी साहित्य

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
1.	मैथिली साहित्यक विकासमे महिला साहित्यकारक योगदान	डॉ. इन्दिरा झा	डॉ. जयधारी सिंह आर.के. कॉलेज, मधुबनी	1989
2.	मैथिली लोकगीतमे नारी स्वरूपक चित्रण	डॉ. मीनू कुमारी	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1990
3.	आधुनिक मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक योगदान	डॉ. उषा चौधरी	डॉ. अमरनाथ चौधरी सी.एम. साइन्स कॉलेज, दरभंगा	1990
4.	मैथिली कथा साहित्यमे महिला लेकिखकाक योगदान	डॉ. सुनीता झा	डॉ. धीरेन्द्र नाथ मिश्र सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	2005

विभिन्न वाद

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
3.	आधुनिक मैथिली काव्यमे वाद प्रकृतिक स्वरूप	डॉ.अरुण कुमार झा	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिल्लत कॉलेज, दरभंगा	1991

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
2.	कविवर लालदास कृत राधाकाण्डक अध्ययन	डॉ. राधाकान्त झा	प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' दरभंगा	1985
3.	साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक मैथिली कृतिक आलोचनात्मक विश्लेषण	डॉ. नीलिमा झा	डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र पी.जी. सेन्टर, सहरसा	1987
4.	कविवर आरसीक मैथिली काव्यसाधना	डॉ. कृष्ण कान्त ठाकुर	प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' दरभंगा	1988
5.	रामकृष्ण झा 'किसुन'क जीवन ओ साहित्य	डॉ. रमेश झा	डॉ. महेन्द्र झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1988
6.	आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक विशिष्ट संदर्भमे श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'केर मैथिली कृतिक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. देवनाथ झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1988
7.	ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्रक मैथिली रचनाक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ.लीलाकान्त झा	डॉ. महेन्द्र झा सहरसा कॉलेज, सहरसा	1988
8.	पं. छेदी झा 'द्विजवर' एवं तत्सामयिक मैथिली साहित्य	डॉ. शेखर कुमार झा	डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' पी.जी. सेन्टर, सहरसा	1989
9.	राजपण्डित बलदेव मिश्रक मैथिली रचनाक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. शम्भुनाथ झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
10.	श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमरक कृतिमे निहित भाषा व्यंग्यक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. भाग्यनारायण झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
11.	कवीश्वर चन्दा झाक रचनामे समसामयिक परिस्थितिक चित्रण	डॉ. अरुण कुमार ठाकुर	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991
12.	मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ म.म. उमेश मिश्रक योगदान	डॉ. सतीश चन्द्र झा	डॉ. जयकान्त मिश्र इलाहाबाद	1991
13.	प्रो. हरिमोहन झाक उपन्यासेतर साहित्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. अजय कुमार झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
14.	कवीश्वर चन्दाझाक पुरातत्वान्वेषक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ.राजीव रंजन प्रसाद सिंह	डॉ. गौरी कान्त झा पूर्णिया कॉलेज, पूर्णिया	1992
15.	मधुरोपासनाक आलोकमे गोविन्ददासक काव्यमे मधुर भाव	डॉ. विश्वनाथ मिश्र	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1992
16.	चन्दाझा कृत मिथिलाभाषा रामायणक मानवेतर पात्रक चरित्र विश्लेषण	डॉ. भागेश्वर झा	डॉ. शिवाकान्त ठाकुर मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा	1993
17.	संतकवि अपूछदास ओ हुनक काव्य रचनाक अध्ययन	डॉ. राजेन्द्र झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1993
18.	पं. रुद्रानन्द मिश्रक 'महादेव विवाह' काव्यक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. मिथिलेश कुमार झा	डॉ. अमरनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1995
19.	मैथिली रामकाव्यक परम्परामे रामसुयश सागरक विवेचन	डॉ.किशोर कुमार सिंह	प्रो. रामनरेश सिंह पी.जी. सेन्टर, सहरसा	1995

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
20.	मैथिली गद्य साहित्यमे श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क योगदान	डॉ. सावित्री झा	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
21.	योगदानन्द झाक साहित्यक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. शचीन्द्र नाथ मिश्र	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1996
22.	डॉ. परमेश्वर मिश्र : एक अध्ययन	डॉ. उपेन्द्र कुमार	डॉ. उर्मिला प्रसाद आर.के. कॉलेज, मधुबनी	1997
23.	मैथिली आलोचना साहित्यमे आचार्य रमानाथ झाक योगदान	डॉ. नीलम कुमारी	डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र वि. मै. विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1999
24.	मैथिली शैव साहित्यक विशिष्ट संदर्भमे कविचूड़ामणि मधुपक शिवगीतक विश्लेषण	डॉ.जय प्रकाश चौधरी 'जनक'	डॉ. भीमनाथ झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1999
25.	कविवर आरसी प्रसाद सिंहक सूर्यमुखीक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ.महेन्द्र नारायण यादव	डॉ. अरुण कुमार कर्ण महिला कॉलेज, समस्तीपुर	2008

आलौकिक चरित्र

क्रम	शोधविषय	शोधकर्त्ता	शोधनिर्देशक	शोधप्रबंध समर्पण/ उपाधि प्राप्ति
1.	मैथिलीमे रामकाव्यक परम्परा ओ ओकर मूल स्रोत	डॉ. वीणा ठाकुर	डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित' वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1984
2.	मैथिली साहित्यक विशिष्ट संदर्भमे सीता चरितक क्रम-विकास	डॉ. उमाकान्त झा	डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1990
3.	मैथिलीमे शाक्त साहित्य	डॉ. भोला झा	डॉ. रामदेव झा वि. मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा	1991



डा० रमण झा

H **जन्म-** 14 अगस्त 1957 ई०
हटाढ़-रुपौली, मधुबनी (बिहार)

H **शिक्षा-** बी०ए० प्रतिष्ठा (मैथिली) - 1976, प्रथम वर्गमे प्रथम
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
एम०ए० (मैथिली) - 1978, प्रथम वर्गमे द्वितीय,
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
पी-एच०डी० - 1986, आधुनिक मैथिली काव्यमे अलङ्कार-विधान,
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गा ।
डी०लिट्० हेतु ल०ना०मि०वि०मे शोध-प्रबन्ध समर्पित-2006, मैथिली काव्य पर ज्यौतिषक प्रभाव।

H **वृत्ति :** 2 नवम्बर '82 सँ 5 फरवरी '96 धरि रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौलमे व्याख्याता एवं उपाचार्य; 6 फरवरी '96 सँ विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभङ्गामे उपाचार्य ।

H **रचना :** *पश्चात्ताप* (कथा-संग्रह) - 1995
काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह) - 1999
अलङ्कार-भास्कर (पूर्व-खण्ड) - 2002
अलङ्कार-भास्कर (अलङ्कार शास्त्र) - 2003
भिन्न-अभिन्न (समीक्षा) - 2008

H **संग सम्पादन :** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996

H **सम्पादन :** मैथिली (विश्वविद्यालय मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 2007